Drishti IAS Presents...

PT SPRINT 2023

राजव्यवस्था

(मार्च 2022 – मार्च 2023)

Detailed Explanation

Drishti IAS, 641, Mukherjee Nagar, Opp. Signature View Apartment, New Delhi

Drishti IAS, 21 Pusa Road, Karol Bagh New Delhi - 05

Drishti IAS, Tashkent Marg, Civil Lines, Prayagraj, Uttar Pradesh

Drishti IAS, Tonk Road, Vasundhra Colony, Jaipur, Rajasthan

e-mail: englishsupport@groupdrishti.com, Website: www.drishtiias.com
Contact: 011430665089, 7669806814, 8010440440

उत्तर

1.

उत्तर: B

व्याख्या:

- गिलोटिन शब्द मूलत: सिर काटकर मृत्युदंड देने हेतु डिज़ाइन किये गए उपकरण को संदर्भित करता है।
  - यह फ्राँसीसी क्रांति के दौरान फ्राँस में मृत्युदंड को अधिक विश्वसनीय और कम दर्दनाक बनाने के लिये पेश किया गया था। **अत: कथन 1 सही नहीं है।**
- विधायी बोलचाल में गिलोटिन का अर्थ है एक साथ समूह बनाना और वित्तीय विधेयक को पारित करने में तेज़ी लाना। **अत: कथन 2 सही है।**
  - बजट सत्र के दौरान लोकसभा में यह काफी सामान्य प्रक्रिया है। **अत: कथन 3 सही नहीं है।**

2.

उत्तर: C

व्याख्या:

- **भारत में मानहानि कानून:**
  - **संविधान का अनुच्छेद 19** नागरिकों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्रदान करता है। **हालाँकि अनुच्छेद 19 (2) ने इस स्वतंत्रता संबंधी कुछ सीमाएँ भी निर्धारित की हैं जैसे- न्यायालय की अवमानना, मानहानि और अपराध के लिये उकसाना।**
  - भारत में मानहानि सार्वजनिक रूप से गलत और दंडनीय अपराध दोनों हो सकता है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि उससे किस उद्देश्य को हासिल करने का प्रयास किया जा रहा है। **अत: कथन 1 सही है।**
- **अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता बनाम मानहानि कानून:**
  - इस बात पर प्राय: तर्क होता रहता है कि **मानहानि कानून संविधान के अनुच्छेद 19 के तहत गारंटीकृत मौलिक अधिकारों का उल्लंघन है।**
    - सर्वोच्च न्यायालय ने फैसला किया कि **मानहानि के आपराधिक प्रावधान संवैधानिक रूप से मान्य हैं और यह स्वतंत्र भाषण के अधिकार का उल्लंघन नहीं है। अत: कथन 2 सही है।**

3.

उत्तर: B

व्याख्या:

- भारतीय संविधान का **अनुच्छेद 21** सभी नागरिकों के लिये **जीवन और स्वतंत्रता के मूल अधिकार को सुनिश्चित करता है।** इसके अतिरिक्त यह विधि द्वारा स्थापित प्रक्रिया के अलावा **किसी भी व्यक्ति के जीवन या व्यक्तिगत स्वतंत्रता को भी सुनिश्चित करता है।**
  - विधायी रूप से इसका अर्थ यह लगाया गया है कि **उचित और वैध प्रक्रिया के तहत राज्य कानून बनाकर किसी व्यक्ति को उसके जीवन के अधिकार से वंचित कर सकता है। अत: कथन 1 सही नहीं है।**
- भारतीय संविधान के **अनुच्छेद 72** के अनुसार, **राष्ट्रपति किसी व्यक्ति की सजा कम कर सकता है या मृत्युदंड के मामले में उन्हें क्षमादान भी प्रदान कर सकता है। अत: कथन 2 सही है।**

4.

उत्तर: B

व्याख्या:

- अनुच्छेद 21 के अनुसार विधि द्वारा स्थापित प्रक्रिया के अतिरिक्त किसी भी व्यक्ति को उसके जीवन अथवा व्यक्तिगत स्वतंत्रता के अधिकार से वंचित नहीं किया जाएगा। यह अधिकार नागरिकों और गैर-नागरिकों दोनों के लिये उपलब्ध है।
- **मेनका मामले (1978)** में सर्वोच्च न्यायालय के फैसले के अनुसार अनुच्छेद 21 में निहित **'जीवन का अधिकार'** केवल पशुओं के अस्तित्व तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसके दायरे में मानवीय गरिमा के साथ और जीवन को सार्थक, पूर्ण और जीने योग्य बनाने वाले सभी पहलू शामिल हैं।
- बाद के मामलों में इसने अन्य अधिकारों के साथ निम्नलिखित अधिकारों को अनुच्छेद 21 के हिस्से के रूप में घोषित किया है:
  - मानवीय गरिमा के साथ जीने का अधिकार।
  - प्रदूषण मुक्त जल और वायु सहित अच्छे पर्यावरण और हानिकारक उद्योगों से सुरक्षा का अधिकार
  - आजीविका का अधिकार
  - निजता का अधिकार
  - आश्रय का अधिकार
  - **स्वास्थ्य का अधिकार**
  - 14 वर्ष की आयु तक नि:शुल्क शिक्षा का अधिकार
  - नि:शुल्क विधिक सहायता का अधिकार
  - **निष्पक्ष सुनवाई का अधिकार**
  - **सूचना का अधिकार आदि**
- अनुच्छेद 19 के तहत भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के अधिकार में (दूसरों के बीच) प्रदर्शन अथवा धरना देने का अधिकार शामिल है, लेकिन **हड़ताल करने का अधिकार नहीं। अत: विकल्प B सही है।**

5.

उत्तर: B

व्याख्या:

- पाँचवीं अनुसूची के तहत, राज्यपाल सार्वजनिक अधिसूचना द्वारा यह निर्देश दे सकते हैं कि संसद अथवा राज्य के विधानमंडल का कोई विशेष अधिनियम राज्य में अनुसूचित क्षेत्र या उसके किसी हिस्से पर लागू होगा या नहीं।
- इस प्रकार पाँचवीं अनुसूची के तहत खनन के लिये जनजातीय भूमि का निजी पार्टियों को हस्तांतरण अमान्य घोषित किया जा सकता है।
- **अत: विकल्प B सही है।**

6.

उत्तर: D

व्याख्या:

- ग्लोबल जेंडर गैप रिपोर्ट 2022 के अनुसार, भारत राजनीतिक अधिकारिता **(संसद में महिलाओं का प्रतिशत और मंत्री पद) आयाम में 146 में से 48वें स्थान पर है। अत: कथन 1 सही नहीं है।**
- इन सिफारिशों ने संविधान के **73वें और 74वें संशोधन के ऐतिहासिक अधिनियमन का मार्ग प्रशस्त किया,** जो सभी राज्य सरकारों को क्रमश: पंचायती राज संस्थानों एवं इसके हर स्तर पर अध्यक्ष पदों तथा शहरी स्थानीय निकायों में महिलाओं हेतु एक-तिहाई सीटें आरक्षित करने का आदेश देती हैं। **इन सीटों में एक-तिहाई सीटें अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति की महिलाओं के लिये आरक्षित हैं। अत: कथन 2 सही नहीं है।**

7.

उत्तर: A

व्याख्या:

- जनजातियों को ST की सूची में शामिल करने की प्रक्रिया संबंधित राज्य सरकारों की सिफारिश से शुरू होती है, जिसे बाद में जनजातीय मामलों के मंत्रालय को भेजा जाता है, जो समीक्षा करता है और अनुमोदन के लिये भारत के महापंजीयक को इसे प्रेषित करता है।
  - इसके बाद संविधान (अनुसूचित जनजाति) आदेश, 1950 में उपयुक्त संशोधन के लिये कैबिनेट को सूची भेजने से पहले राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग की मंज़ूरी लेनी होती है।
- **लोकुर समिति (1965)** की स्थापना अनुसूचित जनजातियों को परिभाषित करने के मानदंडों के निर्धारण में सहायता करने के लिये की गई थी।
  - लोकुर समिति द्वारा निर्धारित मानदंडों में निम्नलिखित शामिल हैं:
    - **आदिम लक्षण**
    - **विशिष्ट संस्कृति**
    - **भौगोलिक अलगाव**
    - **बड़े पैमाने पर समुदाय के साथ जुड़ने में हिचक**
    - **पिछड़ापन।**
- **अत: विकल्प A सही है।**

8.

उत्तर: D

व्याख्या:

- संविधान का अनुच्छेद 174 राज्यपाल को राज्य विधानसभा को आहूत करने, भंग करने और सत्रावसान करने का अधिकार प्रदान करता है।
- संविधान का अनुच्छेद 174(2)(b) राज्यपाल को **सदन की सहायता और परामर्श** पर विधानसभा को विघटित करने की शक्ति देता है। हालाँकि **राज्यपाल अपने विवेक का प्रयोग** तब कर सकता है जब बहुमत पर प्रश्नचिह्न उठने पर किसी मुख्यमंत्री द्वारा परामर्श दिया जाता है। **अत: कथन 3 सही है।**
- **अनुच्छेद 175(2)** के अनुसार, सरकार के पास संख्या बल है या नहीं यह साबित करने के लिये तथा **फ्लोर टेस्ट के लिये राज्यपाल सदन को बुला सकता है।**
- हालाँकि राज्यपाल इस अधिकार का प्रयोग केवल **संविधान के अनुच्छेद 163** के अनुसार कर सकता है, जिसके अनुसार राज्यपाल मुख्यमंत्री की अध्यक्षता वाली मंत्रिपरिषद की सहायता और परामर्श पर कार्य करता है। **अत: कथन 2 सही है।**
- **सदन के सत्र में** होने पर **अध्यक्ष फ्लोर टेस्ट की घोषणा कर सकता है।** हालाँकि अनुच्छेद 163 के तहत राज्यपाल की अवशिष्ट शक्तियों के अनुसार, उसे विधानसभा के सत्र में नहीं होने पर फ्लोर टेस्ट की घोषणा करने का अधिकार है। **अत: कथन 1 सही है।**

9.

उत्तर: C

व्याख्या:

- **73वाँ संविधान संशोधन अधिनियम:**
  - पंचायती राज संस्थान का गठन 73वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1992 द्वारा किया गया। **अत: कथन 1 सही है।**
  - इस अधिनियम द्वारा भारतीय संविधान में एक नया भाग-IX जोड़ा गया और इसमें अनुच्छेद 243 से 243-O तक के प्रावधान शामिल हैं। **अत: कथन 2 सही नहीं है।**
  - इस अधिनियम द्वारा संविधान में एक नई 11वीं अनुसूची भी शामिल की गई है और इसमें पंचायतों के 29 कार्यात्मक विषय शामिल हैं। **अत: कथन 3 सही है।**

10.

उत्तर: C

व्याख्या:

भारत निर्वाचन आयोग:

- **भारतीय संविधान का भाग XV (अनुच्छेद 324-329)** चुनावों से संबंधित है और इन मामलों हेतु एक आयोग की स्थापना करता है।
- **मूल रूप से आयोग में केवल एक चुनाव आयुक्त था** लेकिन चुनाव आयुक्त संशोधन अधिनियम 1989 के बाद इसे एक बहु-सदस्यीय (एक मुख्य चुनाव आयुक्त और दो चुनाव आयुक्त) निकाय बना दिया गया। **अत: कथन 1 सही नहीं है।**
- अनुच्छेद 324 के अनुसार, **चुनाव आयोग में मुख्य चुनाव आयुक्त और अन्य चुनाव आयुक्त** (यदि हो तो) की संख्या समय-समय पर राष्ट्रपति द्वारा तय की जाएगी।
- वे **कभी भी त्यागपत्र दे सकते हैं या उन्हें उनके कार्यकाल की समाप्ति से पहले भी हटाया जा सकता है।**
- मुख्य चुनाव आयुक्त को **संसद द्वारा सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश को हटाने की प्रक्रिया की तरह ही पद से हटाया** जा सकता है। **अत: कथन 3 सही है।**
- मुख्य चुनाव आयुक्त की सिफारिश के बिना किसी अन्य चुनाव आयुक्त को पद से हटाया नहीं जा सकता है।
- आम चुनाव हों अथवा उपचुनाव, यह चुनाव के संचालन के लिये चुनाव कार्यक्रम तय करता है। **अत: कथन 2 सही है।**

11.

उत्तर: B

व्याख्या:

पुंछी आयोग:

- केंद्र सरकार ने पुंछी आयोग का गठन अप्रैल 2007 में **भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश (CJI) मदन मोहन पुंछी की अध्यक्षता में किया था। अत: कथन 1 सही है।**
- **आयोग ने संघ और राज्यों के मध्य मौजूदा व्यवस्थाओं की जाँच और समीक्षा की**, साथ ही विधायी संबंधों, प्रशासनिक संबंधों, राज्यपालों की भूमिकाओं, आपातकालीन प्रावधानों सहित सभी क्षेत्रों में शक्तियों, कर्त्तव्यों एवं ज़िम्मेदारियों के बारे में विभिन्न न्यायालयों के फैसलों की जाँच एवं समीक्षा की।
- आयोग ने **मार्च 2010 में सरकार को अपनी सात खंडों की रिपोर्ट प्रस्तुत की।**
- **अंतर-राज्यीय परिषद (ISC) की स्थायी समिति** ने अप्रैल 2017, नवंबर 2017 और मई 2018 में आयोजित अपनी बैठकों में पुंछी आयोग के सुझावों पर विचार किया।

पुंछी आयोग की प्रमुख सिफारिशें:

- **राष्ट्रीय एकता परिषद:**
  - **इसने आंतरिक सुरक्षा से संबंधित मामलों** (जैसे संयुक्त राज्य अमेरिका में गृह-भूमि सुरक्षा विभाग) **से संबंधित मामलों के लिये एक अधिक्रमण संरचना के निर्माण की सिफारिश की।** यह भी प्रस्तावित किया कि इसे 'राष्ट्रीय एकता परिषद' के रूप में जाना जा सकता है। **अत: कथन 2 सही है।**
- **अनुच्छेद 355 और अनुच्छेद 356 में संशोधन:**
  - इसमें संविधान के अनुच्छेद 355 और अनुच्छेद 356 में संशोधन का सुझाव दिया गया।
  - **अनुच्छेद 355 किसी भी बाहरी आक्रमण के खिलाफ राज्य की रक्षा के लिये केंद्र के कर्त्तव्य से संबंधित है** और अनुच्छेद 356 राज्य व्यवस्था की विफलता के मामले में **राष्ट्रपति शासन लागू किये जाने** से संबंधित है।
  - इन सिफारिशों का उद्देश्य **केंद्र की शक्तियों के दुरुपयोग की रोकथाम कर राज्यों के हितों की रक्षा करना है।**
- **समवर्ती सूची के विषय:**
  - आयोग ने सिफारिश की कि **समवर्ती सूची के अंतर्गत आने वाले विषयों पर** विधेयक पेश करने से **पहले अंतर-राज्यीय परिषद के माध्यम से राज्यों से परामर्श किया जाना चाहिये।**
  - मवर्ती सूची तीन सूचियों में से एक है; इसमें उन मामलों का उल्लेख है **जिन पर राज्य और केंद्र दोनों सरकारें कानून बना सकती हैं।**
- **राज्यपालों की नियुक्ति और निष्कासन:**
  - राज्यपाल को अपनी नियुक्ति से कम-से-कम दो वर्ष पहले सक्रिय राजनीति (स्थानीय स्तर पर भी) से दूर रहना चाहिये।
  - **राज्यपाल की नियुक्ति** करने में राज्य के मुख्यमंत्री का मत होना चाहिये।
  - एक समिति का गठन किया जाना चाहिये जिसे **राज्यपालों की नियुक्ति का कार्य** सौंपा जाए। इस समिति में **प्रधानमंत्री, गृह मंत्री, लोकसभा अध्यक्ष और संबंधित राज्य का मुख्यमंत्री** शामिल हो सकता है। **अत: कथन 3 सही नहीं है।**
    - नियुक्ति की अवधि पाँच वर्ष के लिये होनी चाहिये।
    - राज्यपाल को **केवल राज्य विधानमंडल द्वारा एक प्रस्ताव के माध्यम से हटाया जा सकता है।**

12.

उत्तर: C

व्याख्या:

- इंटरनेट शट-डाउन आदेश भारतीय टेलीग्राफ अधिनियम, 1885 के तहत दूरसंचार सेवाओं के अस्थायी निलंबन (सार्वजनिक आपातकालीन या सार्वजनिक सुरक्षा) नियम, 2017 के तहत शासित होते हैं।

- वर्ष 2017 के नियम सार्वजनिक आपातकाल के आधार पर एक क्षेत्र में दूरसंचार सेवाओं को अस्थायी रूप से बंद करने का प्रावधान करते हैं और **केंद्रीय एवं राज्य स्तर पर गृह मंत्रालय के वरिष्ठ नौकरशाहों को शट-डाउन का आदेश देने का अधिकार प्रदान करते हैं। अत: कथन 1 सही है।**

- **अनुराधा भसीन बनाम भारत संघ** (2020) मामले में **सर्वोच्च न्यायालय ने फैसला सुनाया कि भारतीय कानून के तहत इंटरनेट बंद करने के आदेश के लिये आवश्यक और आनुपातिक आवश्यकताओं को पूरा किया जाना चाहिये तथा यह कि इंटरनेट सेवाओं का अनिश्चितकालीन निलंबन भारतीय कानून के खिलाफ होगा। अत: कथन 2 सही है।**

13.

उत्तर: D

व्याख्या:

फ्लोर टेस्ट के लिये बुलाने की राज्यपाल की शक्ति:

- हाल ही में सर्वोच्च न्यायालय ने कहा है कि राज्यपाल पार्टी सदस्यों के आंतरिक मतभेदों के आधार पर सदन को फ्लोर टेस्ट के लिये नहीं बुला सकता है। **अत: कथन 1 सही नहीं है।**
- सर्वोच्च न्यायालय ने एक राजनीतिक दल के दो गुटों के बीच विवाद के मामले की सुनवाई करते हुए विश्वास मत हेतु बुलाने संबंधी राज्यपाल की शक्तियों और भूमिका पर चर्चा की।

राज्यपाल द्वारा फ्लोर टेस्ट की मांग पर सर्वोच्च न्यायालय की टिप्पणी:

- वर्ष 2016 में नबाम रेबिया और बमांग फेलिक्स बनाम उपाध्यक्ष मामले (अरुणाचल प्रदेश विधानसभा) में सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि सदन को बुलाने की शक्ति पूरी तरह से राज्यपाल में निहित नहीं है और इसका प्रयोग मंत्रिपरिषद की सहायता तथा सलाह से किया जाना चाहिये, न कि स्वयं ही। **अत: कथन 2 सही नहीं है।**
  - न्यायालय ने इस बात पर ज़ोर दिया कि राज्यपाल एक निर्वाचित अधिकारी नहीं है और केवल राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त नामांकित व्यक्ति है, इस तरह के नामांकित व्यक्ति के पास राज्य विधानमंडल का सदन या सदन के लोगों के प्रतिनिधियों पर वीटो शक्ति नहीं हो सकती है।

14.

उत्तर: C

व्याख्या:

पुरावशेष:

- **परिचय:**
  - **पुरावशेष तथा बहुमूल्य कलाकृति अधिनियम, 1972 जो 1 अप्रैल, 1976** को लागू हुआ, ऐसे "पुरावशेष" जो कम-से-कम 100 वर्षों से अस्तित्त्व में हैं, को वस्तु या कला के रूप में परिभाषित करता है। **अत: कथन 1 सही है।**
    - इसमें सिक्के, मूर्तियाँ, पेंटिंग, पुरालेख, पृथक लेख आदि वस्तुएँ शामिल हैं जो विज्ञान, साहित्य, कला, धार्मिक प्रथाओं, सामाजिक लोकाचार या ऐतिहासिक राजनीति को चित्रित करती हैं।
  - "पांडुलिपि, रिकॉर्ड या अन्य दस्तावेज़ जो वैज्ञानिक, ऐतिहासिक, साहित्यिक या सौंदर्यवादी मूल्य के हैं" और **जिनकी अवधि "75 वर्ष से कम नहीं है",** को पुरावशेष के रूप शमिल किया जाता है।
- **संरक्षण पहल:**
  - भारत के संविधान की **संघ सूची के 67 विषय,** राज्य सूची के **12 विषय** तथा **समवर्ती सूची के 40 विषय,** देश की विरासत से संबंधित हैं। **अत: कथन 2 सही है।**
  - स्वतंत्रता से पहले **पुरावशेष (निर्यात नियंत्रण) अधिनियम को अप्रैल 1947** में यह सुनिश्चित करने हेतु पारित किया गया था कि बिना लाइसेंस के किसी भी पुरावशेष का निर्यात नहीं किया जा सकता है।
  - **प्राचीन स्मारकों और पुरातात्त्विक स्थलों को विनाश तथा दुरुपयोग से बचाने हेतु वर्ष 1958** में प्राचीन स्मारक एवं पुरातत्त्व स्थल व अवशेष अधिनियम बनाया गया था।

15.

उत्तर: B

व्याख्या:

- **अनुच्छेद 14: विधि के समक्ष समानता:**
  - अनुच्छेद 14 नागरिकों को कानून के समक्ष समानता, धर्म, नस्ल, जाति, लिंग, जन्म स्थान और सार्वजनिक रोज़गार में समान अवसर के आधार पर भेदभाव के विरुद्ध सुरक्षा की गारंटी प्रदान करता है। **हालाँकि इसका दायरा इन कारकों की तुलना में अधिक व्यापक है।**
  - अनुच्छेद 14 भारत के भीतर **सभी व्यक्तियों को उनकी स्थिति अथवा संबद्धता की परवाह किये बिना कानून की समान सुरक्षा की गारंटी प्रदान करता है।** इसका अर्थ है कि सभी व्यक्ति **चाहे नागरिक हों अथवा विदेशी,** कानून के समान संरक्षण और लाभ के हकदार हैं। **यह प्रावधान व्यक्तियों तथा कानूनी संस्थाओं जैसे- कंपनियों या संघों दोनों पर लागू होता है।**
  - संक्षेप में अनुच्छेद 14 कानून को निष्पक्ष रूप से लागू किया जाना सुनिश्चित करता है। **यह एक आवश्यक प्रावधान है जो भारतीय समाज में न्याय और निष्पक्षता के बुनियादी सिद्धांतों को बनाए रखता है। अत: विकल्प B सही है।**

16.

उत्तर: C

व्याख्या:

- प्राय: मुख्य न्यायाधीश के पद को 'फर्स्ट अमंग इक्वल' (प्राइमस इंटर पारेस) के रूप में संदर्भित किया जाता है।
- भारत का मुख्य न्यायाधीश सहायक भूमिकाओं के अलावा सर्वोच्च न्यायालय के प्रशासनिक प्रमुख की भूमिका निभाता है।
- अपनी प्रशासनिक क्षमता में मुख्य न्यायाधीश किसी भी मामले को किसी खंडपीठ को आवंटित करने संबंधी विशेषाधिकार का प्रयोग करता है। **अत: कथन 2 सही है।**
- मुख्य न्यायाधीश किसी भी मामले की सुनवाई के लिये आवश्यक न्यायाधीशों की संख्या भी तय करता है। **अत: कथन 1 सही है।**
  - इस प्रकार वह केवल न्यायाधीशों को चुनकर परिणाम को प्रभावित कर सकता है।
- इस तरह की प्रशासनिक शक्तियों का प्रयोग कॉलेजियम की सहमति के बिना और बिना किसी कारण बताए किया जा सकता है।

17.

उत्तर: C

व्याख्या:

वित्त आयोग :

- **वित्त आयोग (FC)** एक संवैधानिक निकाय है, जो केंद्र और राज्यों के बीच तथा राज्यों के बीच संवैधानिक व्यवस्था और वर्तमान आवश्यकताओं के **अनुरूप कर से प्राप्त आय के वितरण के लिये** विधि एवं सूत्र निर्धारित करता है। **अत: कथन 1 सही है।**
- संविधान के **अनुच्छेद 280 के तहत भारत के राष्ट्रपति के लिये प्रत्येक पाँच वर्ष या उससे पहले एक** वित्त आयोग का गठन करना आवश्यक है। **अत: कथन 2 सही नहीं है।**
- 15वें वित्त आयोग का गठन भारत के राष्ट्रपति द्वारा नवंबर 2017 में एन.के. सिंह की अध्यक्षता में किया गया था। **इसकी सिफारिशें वर्ष 2021-22 से वर्ष 2025-26 तक पाँच वर्ष की अवधि के लिये मान्य होंगी। अत: कथन 3 सही है।**

18.

उत्तर: D

व्याख्या:

- भारतीय संविधान की 10वीं अनुसूची, जिसे दल-बदल विरोधी कानून के रूप में भी जाना जाता है, वर्ष 1985 में 52वें संविधान संशोधन द्वारा जोड़ा गया था। **अत: कथन 1 सही नहीं है।**
- 91वें संविधान संशोधन अधिनियम, 2003 ने इसे बदल दिया और अब किसी दल के कम- से-कम दो-तिहाई सदस्यों को "विलय" के पक्ष में होना चाहिये ताकि कानून की नज़र में इसकी वैधता हो।
- दल-बदल के आधार पर अयोग्यता के प्रश्नों पर निर्णय सदन के सभापति या अध्यक्ष द्वारा लिया जाता है, जो 'न्यायिक समीक्षा' के अधीन है। **अत: कथन 2 सही नहीं है।**

19.

उत्तर: A

व्याख्या:

- **सीलबंद कवर न्यायशास्त्र:**
  - भारत में सीलबंद कवर न्यायशास्त्र एक प्रथा है जहाँ गोपनीय जानकारी न्यायालय में सीलबंद कवर में प्रस्तुत की जाती है, जिससे न्यायालय को गोपनीयता बनाए रखते हुए संवेदनशील जानकारी पर विचार करने की अनुमति मिलती है। यह प्रथा आपराधिक मामलों तक ही सीमित नहीं है बल्कि दीवानी मामलों में भी इसका उपयोग किया जा सकता है।
    - पारदर्शिता की आवश्यकता और गोपनीयता बनाए रखने की आवश्यकता को संतुलित करने हेतु सीलबंद कवर का उपयोग भारतीय न्यायशास्त्र में एक महत्त्वपूर्ण उपकरण बन गया है।
    - इसका उपयोग अक्सर उन मामलों में किया जाता है जहाँ राष्ट्रीय सुरक्षा या अन्य संवेदनशील मुद्दे शामिल होते हैं, जैसे कि रक्षा सौदों से संबंधित मामले, राज्य के रहस्यों से संबंधी जाँच और सार्वजनिक हित के मुद्दे।
    - ऐसे मामलों में सीलबंद कवर में प्रस्तुत की गई जानकारी जनता या मामले के पक्षकारों को उपलब्ध नहीं कराई जाती है, बल्कि केवल उन न्यायाधीशों को उपलब्ध कराई जाती है जो मामले की सुनवाई कर रहे हैं।
  - न्यायाधीशों को **सूचना की गोपनीयता बनाए रखने और यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि इसका उपयोग कुछ मामले के अलावा किसी अन्य उद्देश्य के लिये नहीं किया जाए।** न्याय सुनिश्चित करते हुए संवेदनशील जानकारी की सुरक्षा के लिये एक वैध उपकरण के रूप में भारत में सीलबंद कवर के उपयोग को न्यायालयों द्वारा मान्यता दी गई है और इसे बरकरार रखा गया है। **अत: विकल्प A सही है।**

20.

उत्तर: A

व्याख्या:

- अनुच्छेद 15 (1) और (2) राष्ट्र को धर्म, नस्ल, जाति, लिंग, जन्म स्थान और अन्य ऐसे किसी एक या कई पहलुओं के आधार पर किसी भी नागरिक के साथ भेदभाव करने से रोकता है।

- ये प्रावधान यह निर्धारित करते हैं कि दुकानों, होटलों, रेस्तराँ, मनोरंजन के स्थानों और अन्य ऐसी सार्वजनिक सुविधाओं तक पहुँचने तथा उपयोग करने के लिये उपरोक्त आधारों पर किसी भी व्यक्ति पर कोई प्रतिबंध नहीं होगा। **अत: विकल्प A सही है।**

21.

उत्तर: C

व्याख्या:

न्यायिक समीक्षा की प्रक्रिया का समर्थन करने वाले संविधान में कुछ प्रावधान हैं:

- **अनुच्छेद 372 (1):** यह अनुच्छेद भारतीय संविधान के लागू होने से पूर्व बनाए गए किसी कानून की न्यायिक समीक्षा से संबंधित प्रावधान करता है।
- **अनुच्छेद 13:** यह अनुच्छेद घोषणा करता है कि कोई भी कानून जो मौलिक अधिकारों से संबंधित किसी प्रावधान का उल्लंघन करता है, मान्य नहीं होगा।
- **अनुच्छेद 32 और अनुच्छेद 226** सर्वोच्च न्यायालय तथा उच्च न्यायालय को मौलिक अधिकारों का रक्षक एवं गारंटीकर्त्ता की भूमिका प्रदान करते हैं।
- **अनुच्छेद 251 और अनुच्छेद 254** में कहा गया है कि संघ और राज्य कानूनों के बीच असंगतता के मामले में राज्य कानून शून्य हो जाएगा।
- **अनुच्छेद 246 (3)** राज्य सूची से संबंधित मामलों पर राज्य विधायिका की अनन्य शक्तियों को सुनिश्चित करता है।
- **अनुच्छेद 245** संसद एवं राज्य विधायिकाओं द्वारा निर्मित कानूनों की क्षेत्रीय सीमा तय करने से संबंधित है।
- **अनुच्छेद 131-136** में सर्वोच्च न्यायालय को व्यक्तियों तथा राज्यों के बीच, राज्यों तथा संघ के बीच विवादों में निर्णय लेने की शक्ति प्रदान की गई है।
- **अनुच्छेद 137** सर्वोच्च न्यायालय को उसके द्वारा सुनाए गए किसी भी निर्णय या आदेश की समीक्षा करने हेतु एक विशेष शक्ति प्रदान करता है।

अत: विकल्प C सही है।

22.

उत्तर: C

व्याख्या:

- भाषण का कौन सा हिस्सा हटाया जाना है इस पर निर्णय लेने का अधिकार सदन के पीठासीन अधिकारी के पास होता है। **अत: कथन 2 सही है।**
- भारतीय संविधान के अनुच्छेद 105 (2) के तहत संसद सदस्यों को संसद में उनके बयान के लिये न्यायालयी कार्यवाही से सुरक्षा प्राप्त है। **अत: कथन 1 सही है।**
  - **हालाँकि उनके भाषण संसद के नियमों के अनुशासन**, सदस्यों की अच्छी समझ और अध्यक्ष द्वारा कार्यवाही के नियंत्रण के अधीन हैं।
- **लोकसभा की प्रक्रिया और कार्य-संचालन नियमों के नियम संख्या** 380 के तहत अध्यक्ष को **वाद-विवाद में प्रयुक्त मानहानिकारक, अशोभनीय अथवा असंसदीय शब्द या अभिव्यक्ति को हटाने** का अधिकार प्राप्त है।

23.

उत्तर: A

व्याख्या:

- **परिसीमन**
  - परिसीमन से तात्पर्य किसी देश में आबादी का प्रतिनिधित्व करने हेतु किसी राज्य में विधानसभा और लोकसभा चुनावों के लिये निर्वाचन क्षेत्र की सीमाओं का निर्धारण करना है।
  - परिसीमन आयोग अधिनियम, 1952 में अधिनियमित किया गया था। **अत: कथन 1 सही है।**
    - केंद्र सरकार अधिनियम लागू होने के बाद परिसीमन आयोग का गठन करती है।
  - 1952, 1962, 1972 और 2002 के अधिनियमों के तहत चार बार वर्ष 1952, 1963, 1973 एवं 2002 में परिसीमन आयोगों का गठन किया गया है।
  - पहला परिसीमन वर्ष 1950-51 में राष्ट्रपति द्वारा (चुनाव आयोग की मदद से) किया गया था।
- **इतिहास:**
  - लोकसभा की **राज्यवार संरचना को बदलने वाला अंतिम परिसीमन अभ्यास वर्ष 1971 की जनगणना के आधार वर्ष 1976 में पूरा हुआ।**
    - **भारतीय संविधान के अनुसार, यह अनिवार्य है कि लोकसभा में सीटों का आवंटन प्रत्येक राज्य की जनसंख्या के आधार पर होना चाहिये** ताकि सीटों और जनसंख्या से अनुपात सभी राज्यों में लगभग समान हो। इसका उद्देश्य **यह सुनिश्चित करना है कि प्रत्येक व्यक्ति के वोट का महत्त्व लगभग समान हो, भले ही वे किसी भी राज्य में रहते हों।**
    - हालाँकि इस प्रावधान का मतलब था कि **जिन राज्यों ने जनसंख्या नियंत्रण पर कम ध्यान दिया, अंतत: वे संसद में अधिक सीटों का प्रतिनिधित्व** कर सकते हैं।

- इन परिणामों से बचने के लिये वर्ष 1976 में इंदिरा गांधी के आपातकालीन शासन के दौरान वर्ष **2001 तक परिसीमन को निलंबित करने के लिये संविधान में संशोधन किया गया था। एक अन्य संशोधन ने इसे वर्ष 2026 तक स्थगित कर दिया और यह आशा की गई थी कि देश उस समय तक एक समान जनसंख्या वृद्धि दर हासिल कर लेगा। अतः कथन 2 सही नहीं है।**

24.

उत्तर: D

व्याख्या:

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग (NCST):

- **स्थापना: राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग (NCST) की स्थापना भारतीय संविधान के अनुच्छेद 338 में संशोधन करके और संविधान (89वाँ संशोधन) अधिनियम, 2003 द्वारा संविधान में एक नया अनुच्छेद 338A सम्मिलित कर की गई थी, अतः यह एक संवैधानिक निकाय है। अतः कथन 1 और 2 सही हैं।**
  - इस संशोधन द्वारा पूर्ववर्ती **राष्ट्रीय अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति आयोग** को **दो अलग-अलग आयोगों द्वारा प्रतिस्थापित** किया गया था:
    - राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग (NCSC) और NCST
- **उद्देश्य:** अनुच्छेद 338A अन्य बातों के साथ-साथ NCST को संविधान के तहत या किसी अन्य कानून के तहत या सरकार को किसी अन्य आदेश के तहत STs को प्रदान किये गए विभिन्न सुरक्षा उपायों के कार्यान्वयन की निगरानी करने और ऐसे सुरक्षा उपायों के कामकाज का मूल्यांकन करने की शक्ति प्रदान करता है।
- **संरचना:** इस आयोग में एक अध्यक्ष, एक उपाध्यक्ष और तीन पूर्णकालिक सदस्य (एक महिला सदस्य सहित) शामिल हैं।
  - सदस्यों में कम-से-कम एक महिला सदस्य होना अनिवार्य है। **अतः कथन 3 सही है।**
  - कार्यकारी अध्यक्ष, उपाध्यक्ष और NCST के सदस्यों का कार्यकाल पदभार ग्रहण करने की तिथि से लेकर तीन वर्ष तक का होता है।
  - सदस्य दो से अधिक कार्यकाल के लिये नियुक्ति के पात्र नहीं होते हैं।
  - इस आयोग के अध्यक्ष को केंद्रीय कैबिनेट मंत्री तथा उपाध्यक्ष को राज्य मंत्री का दर्जा प्राप्त है, जबकि अन्य सदस्यों को भारत सरकार के सचिव पद का दर्जा दिया गया है।

25.

उत्तर: D

व्याख्या:

- **जनप्रतिनिधित्त्व अधिनियम, 1950:**
  - यह **निर्वाचन क्षेत्रों के परिसीमन के लिये प्रक्रियाओं को निर्धारित करता है। अतः विकल्प 1 सही नहीं है।**
  - यह लोकसभा और राज्यों की विधानसभाओं तथा विधानपरिषदों में सीटों के आवंटन का प्रावधान करता है।
  - मतदाता सूची तैयार करने की प्रक्रिया और सीटों के भरे जाने के तरीके को निर्धारित करता है।
  - मतदाताओं की योग्यता निर्धारित करता है।
- **जनप्रतिनिधित्त्व अधिनियम, 1951:**
  - यह चुनाव और उपचुनाव के वास्तविक संचालन को नियंत्रित करता है।
  - यह चुनाव कराने के लिये प्रशासनिक तंत्र प्रदान करता है।
  - यह राजनीतिक दलों के पंजीकरण संबंधी कार्यों की निगरानी करता है। **अतः विकल्प 2 सही नहीं है।**
  - यह सदनों की सदस्यता के लिये योग्यताओं और अयोग्यताओं को निर्दिष्ट करता है।
  - यह अनाचारी प्रथाओं और अन्य अपराधों को रोकने का प्रावधान करता है।
  - यह चुनावों से उत्पन्न होने वाले संदेहों और विवादों को निपटाने की प्रक्रिया निर्धारित करता है।

26.

उत्तर: C

व्याख्या:

क्षेत्रीय भाषा से संबंधित संवैधानिक प्रावधान:

- **अनुच्छेद 345:** किसी राज्य का विधानमंडल **विधि द्वारा राज्य में प्रयुक्त किसी एक या अधिक भाषाओं या हिंदी को उस राज्य के सभी या किन्हीं शासकीय प्रयोजनों के लिये** प्रयोग की जाने वाली भाषा के रूप में अपना सकेगा।
- **अनुच्छेद 346:** संघ में शासकीय प्रयोजनों के लिये प्रयोग हेतु अधिकृत भाषा **एक राज्य और दूसरे राज्य तथा राज्य एवं संघ के बीच संचार के लिये राजभाषा होगी।**
- **अनुच्छेद 347:** यह राष्ट्रपति को राज्य की आधिकारिक भाषा के रूप में किसी भाषा को मान्यता देने की शक्ति देता है, बशर्ते कि राष्ट्रपति संतुष्ट हो कि उस राज्य का एक बड़ा हिस्सा चाहता है कि भाषा को मान्यता दी जाए। ऐसी मान्यता राज्य के एक हिस्से या पूरे राज्य के लिये हो सकती है।

- **अनुच्छेद 350A: प्राथमिक स्तर पर मातृभाषा में शिक्षा की सुविधा।**
- **अनुच्छेद 350B: यह भाषायी अल्पसंख्यकों हेतु एक विशेष अधिकारी की स्थापना का प्रावधान करता है।**
- **अनुच्छेद 351:** यह केंद्र सरकार को हिंदी भाषा के विकास के लिये एक निर्देश जारी करने की शक्ति देता है।

अत: विकल्प C सही है।

27.

उत्तर: D

व्याख्या:

- भारत में **निजता का अधिकार** भारतीय संविधान के **अनुच्छेद 21** के तहत एक **संवैधानिक अधिकार** है, जिसमें स्पष्ट है कि "विधि द्वारा स्थापित प्रक्रिया के अलावा किसी भी व्यक्ति को उसके जीवन या व्यक्तिगत स्वतंत्रता से वंचित नहीं किया जाएगा।" **अत: कथन 1 सही नहीं है।**
- **अनुच्छेद 21 का जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के संरक्षण का अधिकार** पूर्ण (Absolute) **नहीं** है और यह **राज्य द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों के अधीन हो सकता है।** निजता का अधिकार भी पूर्ण अधिकार **नहीं** है। यह आमतौर पर विधि के तहत संरक्षित है, लेकिन यह **उचित प्रतिबंधों के अधीन हो सकता है। अत: कथन 2 सही नहीं है।**

28.

उत्तर: C

व्याख्या:

- **अनुच्छेद 22 गिरफ्तार या हिरासत (निरोध) में लिये गए व्यक्तियों को सुरक्षा प्रदान करता है।**
- **निरोध दो प्रकार का होता है- दंडात्मक (परीक्षण और दोषसिद्धि के बाद दंड) और निवारक (परीक्षण और दोषसिद्धि के बिना दंड)।**
  - अनुच्छेद 22 का पहला भाग सामान्य कानून से संबंधित है और इसमें शामिल हैं:
    - गिरफ्तारी के आधार के बारे में सूचित करने का अधिकार।
    - एक कानूनी व्यवसायी से परामर्श करने और बचाव करने का अधिकार।
    - यात्रा के समय को छोड़कर 24 घंटे के भीतर मजिस्ट्रेट के समक्ष पेश होने का अधिकार।
    - 24 घंटे के बाद रिहा होने का अधिकार जब तक कि मजिस्ट्रेट आगे की हिरासत के लिये अधिकृत नहीं करता।
  - अनुच्छेद 22 का दूसरा भाग निवारक निरोध कानून से संबंधित है। इस अनुच्छेद के तहत सुरक्षा नागरिकों के साथ-साथ गैर-नागरिक दोनों के लिये उपलब्ध है और इसमें निम्नलिखित शामिल हैं। **अत: विकल्प C सही है।**
  - किसी व्यक्ति की नज़रबंदी तीन महीने से अधिक नहीं हो सकती जब तक कि एक सलाहकार बोर्ड विस्तारित नज़रबंदी हेतु पर्याप्त कारण प्रस्तुत नहीं करता है।
    - नज़रबंदी के आधारों के बारे में नज़रबंद व्यक्ति को सूचित किया जाना चाहिये।
    - बंदी को निरोध आदेश के विरुद्ध अभ्यावेदन करने का अवसर दिया जाना चाहिये।

29.

उत्तर: D

व्याख्या:

- **परिचय:**
  - विशेष श्रेणी का दर्जा (SCS) केंद्र द्वारा किया गया एक वर्गीकरण है जिसका उद्देश्य भौगोलिक और सामाजिक-आर्थिक सीमितताओं वाले राज्यों के विकास में सहायता करना है।
  - संविधान SCS के लिये प्रावधान नहीं करता है और यह वर्गीकरण बाद में 1969 में पाँचवें वित्त आयोग की सिफारिशों के आधार पर किया गया था।
  - पहली बार वर्ष 1969 में जम्मू-कश्मीर, असम और नगालैंड को यह दर्जा दिया गया था।
- **मानदंड (गाडगिल फॉर्मूला पर आधारित):**
  - पहाड़ी इलाके।
  - कम जनसंख्या घनत्त्व और/या जनजातीय जनसंख्या का बड़ा हिस्सा।
  - पड़ोसी देशों के साथ सीमाओं पर सामरिक स्थिति।
  - आर्थिक और आधारभूत संरचना के संदर्भ में पिछड़ापन।
  - राज्य के वित्त की अव्यवहार्य प्रकृति।
  - **अत: D सही उत्तर है।**

30.

उत्तर: D

व्याख्या:

- **प्रावधान:**
  - यह चुनाव के संचालन को नियंत्रित करता है।
  - यह सदनों की सदस्यता के लिये योग्यताओं एवं अयोग्यताओं को निर्दिष्ट करता है,
  - यह भ्रष्ट प्रथाओं और अन्य अपराधों को रोकने के प्रावधान करता है।
  - यह चुनावों से उत्पन्न संदेहों और विवादों को निपटाने की प्रक्रिया निर्धारित करता है।

- **महत्त्व:**
  - यह अधिनियम भारतीय लोकतंत्र के सुचारु संचालन के लिये महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह प्रतिनिधि निकायों में आपराधिक पृष्ठभूमि वाले व्यक्तियों के प्रवेश पर रोक लगाता है और इस प्रकार **भारतीय राजनीति को अपराध की श्रेणी से बाहर कर देता है।**
  - अधिनियम के तहत प्रत्येक उम्मीदवार को अपनी संपत्ति और देनदारियों की घोषणा करने एवं चुनाव खर्च का लेखा-जोखा रखने की आवश्यकता होती है। यह सार्वजनिक धन के उपयोग या व्यक्तिगत लाभ के लिये शक्ति के दुरुपयोग के मामले में उम्मीदवार की **जवाबदेही** तय करने के साथ **पारदर्शिता** सुनिश्चित करता है।
- **अत: विकल्प D सही है।**

31.

उत्तर: A

व्याख्या:

- **आठवीं अनुसूची:**
  - इस अनुसूची में भारत गणराज्य की आधिकारिक भाषाओं को सूचीबद्ध किया गया है। भारतीय संविधान के भाग XVII में शामिल अनुच्छेद 343 से 351 तक आधिकारिक भाषाओं से संबंधित हैं। **अत: कथन 1 सही है।**
  - **आठवीं अनुसूची से संबंधित संवैधानिक प्रावधान** इस प्रकार हैं:
    - **अनुच्छेद 344:** अनुच्छेद 344(1) संविधान के प्रारंभ से पाँच वर्ष की समाप्ति पर राष्ट्रपति द्वारा एक आयोग के गठन का प्रावधान करता है।
  - **अनुच्छेद 351:** यह हिंदी भाषा को विकसित करने के लिये इसके प्रसार का प्रावधान करता है ताकि यह भारत की मिश्रित संस्कृति के सभी तत्त्वों के लिये अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में कार्य कर सके। **अत: कथन 2 सही नहीं है।**
  - हालाँकि यह ध्यान देने योग्य है कि किसी भी भाषा को आठवीं अनुसूची में शामिल करने के लिये कोई निश्चित मानदंड निर्धारित नहीं है।

32.

उत्तर: C

व्याख्या:

- **विनियोग विधेयक:**
  - विनियोग विधेयक सरकार को किसी वित्तीय वर्ष के दौरान व्यय की पूर्ति के लिये भारत की संचित निधि से धनराशि निकालने की शक्ति प्रदान करता है। **अत: कथन 1 सही है।**
    - **संविधान के अनुच्छेद 114 के अनुसार**, सरकार संसद से अनुमोदन प्राप्त करने के बाद ही संचित निधि से धन निकाल सकती है।
    - निकाली गई राशि का उपयोग वित्तीय वर्ष के दौरान वर्तमान व्यय को पूरा करने के लिये किया जाता है।
- **प्रक्रिया:**
  - विनियोग विधेयक लोकसभा में बजट प्रस्तावों और अनुदानों की मांगों पर चर्चा के बाद पेश किया जाता है।
    - संसदीय वोटिंग में विनियोग विधेयक के पारित न होने से सरकार को इस्तीफा देना होगा तथा आम चुनाव कराना होगा।
  - लोकसभा द्वारा पारित होने के बाद इसे राज्यसभा को भेजा जाता है।
    - राज्यसभा को इस विधेयक में संशोधन की सिफारिश करने की शक्ति प्राप्त है।
    - हालाँकि राज्यसभा की सिफारिशों को स्वीकार करना या अस्वीकार करना लोकसभा का विशेषाधिकार है।
  - विधेयक को राष्ट्रपति से स्वीकृति मिलने के बाद यह विनियोग अधिनियम बन जाता है।
    - विनियोग विधेयक की अनूठी विशेषता इसका स्व-भंग खंड (Auto Repeal Clause) है, जिससे यह अधिनियम अपने वैधानिक उद्देश्य को पूरा करने के बाद स्वयं ही निरस्त हो जाता है। **अत: कथन 2 सही है।**
  - विनियोग विधेयक के अधिनियमित होने तक सरकार भारत की संचित निधि से पैसा नहीं निकाल सकती है। हालाँकि इसमें समय लगता है और सरकार को अपनी सामान्य गतिविधियाँ चलाने के लिये धन की आवश्यकता होती है। तत्काल खर्चों को पूरा करने के लिये संविधान ने लोकसभा को वित्तीय वर्ष के एक हिस्से के लिये अग्रिम अनुदान देने हेतु अधिकृत किया है। इस प्रावधान को ''लेखानुमोदन'' के नाम से जाना जाता है।
    - लेखानुदान को भारतीय संविधान के अनुच्छेद 116 में परिभाषित किया गया है।
    - चुनावी वर्ष के दौरान सरकार या तो 'अंतरिम बजट' या 'वोट ऑन अकाउंट' का विकल्प चुनती है क्योंकि चुनाव के बाद सत्तारूढ़ सरकार और नीतियाँ बदल सकती हैं।

33.

उत्तर: D

व्याख्या:

भारत के मुख्य न्यायाधीश (CJI):

- CJI को **भारत का नागरिक** होना चाहिये।

- कम से कम **पाँच वर्ष के लिये एक उच्च न्यायालय या दो या दो से अधिक ऐसे न्यायालयों में न्यायाधीश रहा/रही हो या**
- कम से कम **दस वर्षों के लिये एक उच्च न्यायालय या दो या दो से अधिक न्यायालयों का/ की अधिवक्ता रहा/रही हो**, या
- राष्ट्रपति की राय में एक **प्रतिष्ठित न्यायविद्** हो।

- CJI और सर्वोच्च न्यायालय (SC) के न्यायाधीशों की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा संविधान के अनुच्छेद 124 के खंड (2) के तहत की जाती है। **अत: कथन 1 सही है।**
- अपनी सहायक भूमिका के अलावा CJI न्यायालय के प्रशासनिक प्रमुख की भूमिका भी निभाता है।
- अपनी प्रशासनिक क्षमता में मुख्य न्यायाधीश विशेष पीठों को मामले आवंटित करने के विशेषाधिकार का प्रयोग करता है।
- CJI किसी मामले की सुनवाई करने वाले न्यायाधीशों की संख्या भी तय करता है। **अत: कथन 2 सही है।**
  - इस प्रकार वह केवल उन न्यायाधीशों का चयन करके परिणाम को प्रभावित कर सकता है, जिनके बारे में उनका मानना है कि वे किसी विशेष परिणाम का पक्ष लेंगे।
- वर्ष 2019 में सर्वोच्च न्यायालय ने फैसला सुनाया कि भारत के **मुख्य न्यायाधीश (CJI) का कार्यालय सूचना का अधिकार (RTI) अधिनियम, 2005 के दायरे** में आता है। **अत: कथन 3 सही है।**

34.

उत्तर: B

व्याख्या:

- भारत में जनगणना की शुरुआत वर्ष **1881 के औपनिवेशिक अभ्यास से हुई है।**
  - **भारत की वर्ष 1931 की जनगणना के बाद पहली बार वर्ष 2011 में** सामाजिक-आर्थिक और जाति जनगणना (SECC) आयोजित की गई थी। **अत: कथन 3 सही है।**
- **जनगणना का विषय संघ सूची में आता है** और केवल संसद ही इस पर कानून बना सकती है। **अत: कथन 1 सही नहीं है।**
- जाति जनगणना **गृह मंत्रालय, भारत के महापंजीयक (RGI) और भारत के जनगणना आयुक्त के प्रशासनिक नियंत्रण के अंतर्गत आती है। अत: कथन 2 सही है।**
- इसमें कई विकास हुए तथा इसका उपयोग सरकार, नीति निर्माताओं, शिक्षाविदों एवं अन्य लोगों द्वारा **भारतीय आबादी पर नियंत्रण करने, संसाधनों तक पहुँच बनाने, सामाजिक परिवर्तन लाने, परिसीमन आदि के लिये किया गया है।**

35.

उत्तर: C

व्याख्या:

नई दिल्ली का शासन मॉडल:

- **संविधान की अनुसूची 1 के तहत दिल्ली का दर्जा एक केंद्रशासित प्रदेश का है**, किंतु अनुच्छेद 239AA के तहत इसे 'राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र' का नाम दिया गया है। **अत: कथन 1 सही है।**
- **भारत के संविधान में 69वें संशोधन** द्वारा अनुच्छेद 239AA को सम्मिलित किया गया, जिसने केंद्रशासित प्रदेश दिल्ली को एलजी द्वारा प्रशासित केंद्रशासित प्रदेश घोषित किया जो कि निर्वाचित विधानसभा की सहायता और सलाह पर काम करता है। **अत: कथन 1 सही है।**
  - हालाँकि 'सहायता और सलाह' खंड केवल उन मामलों से संबंधित है जिन पर निर्वाचित विधानसभा को सार्वजनिक व्यवस्था, पुलिस तथा भूमि के अपवाद के साथ **राज्य और समवर्ती सूची** के तहत शक्तियाँ प्राप्त हैं।
- इसके अलावा **अनुच्छेद 239AA यह भी कहता है कि एलजी को या तो मंत्रिपरिषद की सहायता और सलाह पर कार्य करना होगा** अथवा वह राष्ट्रपति द्वारा लिये गए निर्णय को लागू करने के लिये बाध्य है।
- साथ ही **अनुच्छेद 239AA में यह व्यवस्था है कि उपराज्यपाल और दिल्ली सरकार के बीच किसी मुद्दे पर मतभेद होने पर एलजी मामले को राष्ट्रपति के पास भेज सकता है।**
- इस प्रकार एलजी और निर्वाचित सरकार के बीच यह द्वैध नियंत्रण सत्ता संघर्ष की ओर उन्मुख हो जाता है।

36.

उत्तर: A

व्याख्या:

- भारतीय संविधान में स्थापित शक्तियों का पृथक्करण सिद्धांत सरकार के विधायी, कार्यकारी और न्यायिक कार्यों का विभाजन है।
- विधायी शाखा द्वारा पारित कानूनों की संवैधानिकता की जाँच करने के लिये न्यायपालिका के पास न्यायिक समीक्षा की शक्ति है। **अत: कथन 1 सही है।**
- भारतीय संविधान कार्यपालिका को विधायिका द्वारा पारित कानूनों को वीटो करने की शक्ति प्रदान नहीं करता है। **अत: कथन 2 सही नहीं है।**

37.

उत्तर: A

व्याख्या:

- परिसीमन का शाब्दिक अर्थ जनसंख्या में परिवर्तन का प्रतिनिधित्व करने हेतु किसी देश में निर्वाचन द्वारा चुनावो के लिये क्षेत्र की सीमाओं को तय करने का कार्य या प्रक्रिया से है।

- संविधान के अनुसार, **आयोग के आदेश अंतिम हैं और किसी भी अदालत के समक्ष पूछताछ नहीं की जा सकती** क्योंकि यह अनिश्चितकाल तक चुनाव आयोजित करता रहेगा। **अत: कथन 2 सही है।**
  - यह **"एक वोट एक मूल्य"** के सिद्धांत का पालन करता है।
- **संघटन:**
  - परिसीमन आयोग **भारत के राष्ट्रपति** द्वारा नियुक्त किया जाता है और **भारत के चुनाव आयोग** के सहयोग से काम करता है।
    - **सुप्रीम कोर्ट** के सेवानिवृत्त **न्यायाधीश**
    - मुख्य चुनाव आयुक्त
    - संबंधित राज्य चुनाव आयुक्त
- वर्ष 1950-51 में राष्ट्रपति द्वारा **पहला परिसीमन** (चुनाव आयोग की मदद से) किया गया था।
- **परिसीमन आयोग अधिनियम 1952 में अधिनियमित किया गया था।**
- **1952, 1962, 1972 और 2002 के अधिनियमों के तहत परिसीमन आयोगों का गठन चार बार - 1952, 1963, 1973 और 2002 में किया गया है। अत: कथन 1 सही नहीं है।**
  - 1981 और 1991 की जनगणना के बाद कोई परिसीमन नहीं हुआ था।

38.

उत्तर: D

व्याख्या:

महिलाओं से संबंधित संवैधानिक सुरक्षा:

- मौलिक अधिकार: यह सभी भारतीयों को समानता के अधिकार की गारंटी देता है (अनुच्छेद 14),
  - लिंग के आधार पर राज्य द्वारा कोई भेदभाव नहीं (अनुच्छेद 15(1))
  - महिलाओं के पक्ष में राज्य द्वारा किये जाने वाले विशेष प्रावधान (अनुच्छेद 15(3))।
- मौलिक कर्तव्य: यह सुनिश्चित करता है कि अनुच्छेद 51 (A) के तहत महिलाओं की गरिमा के लिये अपमानजनक व्यवहार निषिद्ध है।
  - अनुच्छेद 50 के अनुसार, राज्य न्यायपालिका को कार्यपालिका से अलग करने के लिये कदम उठाएगा। इसमें और महिलाओं के संवैधानिक संरक्षण के बीच कोई स्पष्ट संबंध नहीं है।

39.

उत्तर: A

व्याख्या:

- केशवानंद भारती बनाम भारत संघ के ऐतिहासिक फैसले में भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि **संपत्ति का अधिकार भारतीय संविधान के "मूल ढाँचे" का हिस्सा नहीं है।**
- न्यायालय ने माना कि संपत्ति के अधिकार को संवैधानिक संशोधन के माध्यम से संसद द्वारा संशोधित या समाप्त किया जा सकता है क्योंकि इसे मौलिक अधिकार नहीं माना जाता है।
- हालाँकि न्यायिक समीक्षा की शक्ति, संघवाद के सिद्धांत और शक्तियों के पृथक्करण को "मूल ढाँचे" के हिस्से के रूप में माना जाता है एवं इसे संसद द्वारा संशोधित या समाप्त नहीं किया जा सकता क्योंकि उन्हें भारतीय संविधान की मौलिक तथा बुनियादी विशेषताएँ माना जाता है।

अत: विकल्प A सही है।

40.

उत्तर: A

व्याख्या:

- **अनुच्छेद 244 के अनुसार, स्वायत्त ज़िला परिषदों (Autonomous District Councils- ADCs), जिनके पास राज्य के भीतर कुछ विधायी, न्यायिक और प्रशासनिक स्वायत्तता होती है, को संविधान के अनुच्छेद 244 की छठी अनुसूची के अनुसार बनाया जा सकता है। अत: कथन 1 सही नहीं है।**
- छठी अनुसूची में पूर्वोत्तर के चार राज्यों असम, मेघालय, त्रिपुरा और मिज़ोरम के जनजातीय क्षेत्रों के प्रशासन से संबंधित विशेष प्रावधान हैं।
  - इन चार राज्यों में जनजातीय क्षेत्रों को स्वायत्त ज़िलों के रूप में गठित किया गया है। राज्यपाल के पास स्वायत्त ज़िलों के गठन और पुनर्गठन से संबंधित अधिकार है।
- संसद या राज्य विधानमंडल के अधिनियम स्वायत्त ज़िलों पर लागू नहीं होते हैं अथवा विशिष्ट संशोधनों और अपवादों के साथ लागू होते हैं।
  - **इस संबंध में निर्देश संबंधी शक्ति राष्ट्रपति और राज्यपाल दोनों के पास होती है। अत: कथन 2 सही है।**

41.

उत्तर: B

व्याख्या:

- भारत का सर्वोच्च न्यायालय न्यायिक समीक्षा की शक्ति के साथ देश का शीर्ष न्यायालय है एवं यह भारत के संविधान के तहत न्याय की अपील हेतु अंतिम न्यायालय है।
- भारत एक संघीय राज्य है एवं इसकी एकल तथा एकीकृत न्यायिक प्रणाली है जिसकी त्रिस्तरीय संरचना है, अर्थात् सर्वोच्च न्यायालय, उच्च न्यायालय और अधीनस्थ न्यायालय।

- **न्यायाधीशों की नियुक्ति:**
  - सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा की जाती है। यदि राष्ट्रपति आवश्यक समझता है तो मुख्य न्यायाधीश की नियुक्ति के लिये सर्वोच्च न्यायालय एवं उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों की सलाह ली जाती है। **अत: कथन 1 सही नहीं है।**
    - अन्य न्यायाधीशों को राष्ट्रपति द्वारा मुख्य न्यायाधीश एवं सर्वोच्च न्यायालय तथा उच्च न्यायालयों के अन्य न्यायाधीशों के साथ परामर्श के बाद नियुक्त किया जाता है, यदि वह आवश्यक समझता है। मुख्य न्यायाधीश के अतिरिक्त किसी अन्य न्यायाधीश की नियुक्ति के मामले में मुख्य न्यायाधीश के साथ परामर्श करना अनिवार्य है।
- **संवैधानिक प्रावधान:**
  - भारतीय संविधान में भाग पाँच (संघ) एवं अध्याय 6 (संघ न्यायपालिका) के तहत सर्वोच्च न्यायालय का प्रावधान किया गया है। **अत: कथन 2 सही है।**
    - संविधान के भाग पाँच में अनुच्छेद 124 से 147 तक सर्वोच्च न्यायालय के संगठन, स्वतंत्रता, अधिकार क्षेत्र, शक्तियों एवं प्रक्रियाओं से संबंधित प्रावधान हैं।
    - अनुच्छेद 124 (1) के तहत भारतीय संविधान में कहा गया है कि भारत का एक सर्वोच्च न्यायालय होगा जिसमें एक मुख्य न्यायाधीश (CJI) होगा तथा सात से अधिक अन्य न्यायाधीश नहीं हो सकते जब तक कि कानून द्वारा संसद अन्य न्यायाधीशों की अधिक संख्या निर्धारित नहीं करती है।

42.

उत्तर: B

व्याख्या:

- हाल ही में सर्वोच्च न्यायालय ने निर्णय सुनाया है कि अनुच्छेद 19/21 के अंतर्गत एक मौलिक अधिकार को राज्य या उसके साधनों के अलावा अन्य व्यक्तियों के खिलाफ भी लागू किया जा सकता है। **अत: कथन 1 सही नहीं है।**
  - न्यायालय ने फैसला सुनाते हुए कहा कि अनुच्छेद 19(1)(A) के तहत गारंटीकृत भाषण और अभिव्यक्ति के अधिकार को अनुच्छेद 19(2) में पहले से निर्धारित किये गए आधारों के अलावा किसी भी अतिरिक्त आधार पर प्रतिबंधित नहीं किया जा सकता है।
  - भारतीय संविधान के अनुच्छेद 19 में वाक् एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का प्रावधान है और आमतौर पर राज्य के खिलाफ लागू होता है।
- भारतीय संविधान, 1949 का **अनुच्छेद 19** सभी नागरिकों को स्वतंत्रता के अधिकारों की गारंटी प्रदान करता है, जो इस प्रकार हैं:
  - वाक् और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार।
  - शांतिपूर्वक सम्मेलन में भाग लेने की स्वतंत्रता का अधिकार।
  - संगम या संघ बनाने का अधिकार। **अत: कथन 2 सही है।**
  - भारत के संपूर्ण क्षेत्र में अबाध संचरण की स्वतंत्रता का अधिकार।
  - भारत के किसी भी क्षेत्र में निवास का अधिकार।
  - विलोपित
  - व्यवसाय आदि की स्वतंत्रता का अधिकार।

43.

उत्तर: D

व्याख्या:

- मंत्रिपरिषद **सामूहिक रूप से लोकसभा के प्रति उत्तरदायी होगी। अत: कथन 1 सही नहीं है।**
- **प्रधानमंत्री** और **अन्य मंत्री** सामूहिक रूप से मंत्रिपरिषद के लिये उत्तरदायी होते हैं।
- मंत्रियों की कुल संख्या लोकसभा की कुल संख्या के 15% से अधिक नहीं हो सकती है। **अत: कथन 2 सही नहीं है।**

44.

उत्तर: A

व्याख्या:

- मुख्य सूचना आयुक्त और एक सूचना आयुक्त केंद्र सरकार द्वारा निर्धारित अवधि के लिये या 65 वर्ष की आयु प्राप्त करने तक, जो भी पहले हो, पद धारण करेंगे एवं पुनर्नियुक्ति के लिये पात्र नहीं होंगे। **अत: कथन 1 सही है।**
- राज्य के मुख्य सूचना आयुक्त और राज्य के सूचना आयुक्त के वेतन, भत्ते तथा अन्य सेवा संबंधी शर्तें केंद्र सरकार द्वारा निर्धारित की जाएंगी। **अत: कथन 2 सही नहीं है।**

45.

उत्तर: D

व्याख्या:

- सरकारिया आयोग, जिसे केंद्र-राज्य संबंध आयोग के रूप में भी जाना जाता है, को 1983 में राज्यों और केंद्र के बीच राजनीतिक व प्रशासनिक संबंधों की समीक्षा करने हेतु तथा सरकार के दो स्तरों के बीच समन्वय एवं सहयोग में सुधार हेतु सिफारिशों की संस्तुति करने के लिये भारत सरकार द्वारा गठित आयोग था। **अत: विकल्प D सही है।**

46.

उत्तर: C

व्याख्या:

प्राक्कलन समिति:

- **परिचय:**
  - यह पहली बार वर्ष 1920 के दशक में ब्रिटिश काल के दौरान स्थापित हुई थी लेकिन स्वतंत्र भारत की पहली प्राक्कलन समिति वर्ष 1950 में स्थापित की गई थी। **अत: कथन 1 सही है।**
  - यह समिति बजट में शामिल अनुमानों की जाँच करती है और सार्वजनिक व्यय में 'मितव्ययिता' का सुझाव देती है।
  - संसद की अन्य वित्तीय समितियों में शामिल हैं - लोक लेखा समिति और सार्वजनिक उपक्रम समिति।
- **सदस्य:**
  - इसमें 30 सदस्य होते हैं और ये सभी लोकसभा के सदस्य होते हैं। **अत: कथन 2 सही नहीं है।**
  - सदस्यों का चुनाव प्रत्येक वर्ष लोकसभा सदस्यों द्वारा अपने बीच से एकल संक्रमणीय मत प्रणाली और आनुपातिक प्रतिनिधित्व सिद्धांत के अनुसार किया जाता है, ताकि सभी दलों को इसमें उचित प्रतिनिधित्व मिले।
  - एक मंत्री को प्राक्कलन समिति के सदस्य/अध्यक्ष के रूप में निर्वाचित नहीं किया जा सकता है। **अत: कथन 3 सही नहीं है।**
  - अध्यक्ष की नियुक्ति लोकसभा अध्यक्ष द्वारा की जाती है जो हमेशा सत्तारूढ़ दल या गठबंधन से होता है।
- **कार्य:**
  - यह सुझाव देती है कि नीति या प्रशासनिक ढाँचे में क्या बदलाव किये जा सकते हैं और अर्थव्यवस्था में दक्षता लाने के लिये किन वैकल्पिक नीतियों पर विचार किया जा सकता है।
  - इस समिति का कार्य वर्ष भर चलता रहता है और जैसे-जैसे परीक्षण होता रहता है, यह सदन को रिपोर्ट करती रहती है।
  - इसी कारण इस समिति को 'सतत् मितव्ययिता समिति' भी कहा जाता है। **अत: कथन 4 सही है।**

47.

उत्तर: A

व्याख्या:

शराब के संबंध में भारतीय संविधान में प्रावधान:

- **राज्य नीति के निर्देशक सिद्धांत (DPSP) (अनुच्छेद 47):**
  - इसमें उल्लेख किया गया है कि राज्य सार्वजनिक स्वास्थ्य में सुधार के लिये कदम उठाएगा और नशीले पेय तथा स्वास्थ्य के लिये हानिकारक नशीले पदार्थों के सेवन पर रोक लगाएगा। **अत: कथन 2 सही नहीं है।**
  - **हालाँकि DPSPs कानूनी रूप से लागू करने योग्य नहीं हैं,** वे लक्ष्य निर्धारित करते हैं कि राज्य को ऐसी स्थितियाँ स्थापित करने की आकांक्षा रखनी चाहिये जिसके तहत नागरिक एक अच्छा जीवन जी सकें।
  - इस प्रकार **भारतीय संविधान शराब को एक अवांछनीय बुराई के रूप में देखता है** जिसे राज्यों द्वारा नियंत्रित करने की आवश्यकता है।
- **सातवीं अनुसूची:**
  - **संविधान की सातवीं अनुसूची के अनुसार, शराब एक राज्य का विषय है,** यानी राज्य विधानसभाओं के पास इसके बारे में कानूनों का मसौदा तैयार करने का अधिकार और ज़िम्मेदारी है, जिसमें "मादक पदार्थ शराब का उत्पादन, निर्माण, कब्ज़ा, परिवहन, खरीद एवं बिक्री" शामिल है। **अत: कथन 1 सही है।**
  - इस प्रकार शराबबंदी और निजी बिक्री के बीच पूरे स्पेक्ट्रम में आने वाले शराब के संबंध में कानून सभी राज्यों में अलग-अलग हैं।

48.

उत्तर: A

व्याख्या:

- **संवैधानिक प्रावधान के संबंध में:**
  - सहकारिता, संविधान के तहत एक राज्य का विषय है जिसका अर्थ है कि वे राज्य सरकारों के अधिकार क्षेत्र में आते हैं लेकिन कई समितियाँ हैं जिनके सदस्य और संचालन के क्षेत्र एक से अधिक राज्यों में फैले हुए हैं। **अत: कथन 3 सही नहीं है।**
  - उदाहरण के लिये कर्नाटक-महाराष्ट्र सीमा पर स्थित अधिकांश चीनी मिलें दोनों राज्यों से गन्ना खरीदती हैं।
  - **बहु-राज्य सहकारी समितियाँ (MSCS) अधिनियम, 2002** के तहत एक से अधिक राज्यों की सहकारी समितियाँ पंजीकृत हैं।
  - इनके निदेशक मंडल में उन सभी राज्यों का प्रतिनिधित्व होता है जिनमें वे कार्य करते हैं।
  - इन समितियों का प्रशासनिक और वित्तीय नियंत्रण केंद्रीय रजिस्ट्रार के पास है एवं कानून यह स्पष्ट करता है कि राज्य सरकार का कोई भी अधिकारी उन पर नियंत्रण नहीं रख सकता है।
  - **भाग IXB** को 97वें **संवैधानिक संशोधन अधिनियम, 2011** के माध्यम से संविधान में सम्मिलित किया गया था। इसके बाद अधिनियम में संशोधन करना अनिवार्य हो गया है।

- **97वें संशोधन के तहत:**
  - **सहकारी समितियों के गठन के अधिकार को स्वतंत्रता के** अधिकार (**अनुच्छेद 19 (1)** के रूप में शामिल किया गया। **अत: कथन 1 सही है।**
  - सहकारी समितियों का प्रचार **राज्य के नीति निदेशक सिद्धांतों (अनुच्छेद 43-बी)** के रूप में किया गया था। **अत: कथन 2 सही है।**

49.

उत्तर: C

व्याख्या:

- बजट प्रस्तावों पर चर्चा और अनुदानों की मांगों पर मतदान के बाद विनियोग विधेयक लोकसभा में पेश किया जाता है। **अत: कथन 1 सही है।**
- संसदीय वोट में विनियोग विधेयक पारित न होने पर सरकार द्वारा इस्तीफा या आम चुनाव कराया जाएगा।
- **विनियोग विधेयक के अधिनियमित होने तक सरकार भारत की संचित निधि से पैसा नहीं निकाल सकती है।** हालाँकि इसमें समय लगता है और सरकार को अपनी सामान्य गतिविधियाँ चलाने के लिये धन की आवश्यकता होती है। तत्काल खर्चों को पूरा करने के लिये **संविधान ने लोकसभा को वित्तीय वर्ष** के एक हिस्से के लिये अग्रिम अनुदान देने हेतु अधिकृत किया है। इस प्रावधान को **'लेखानुमोदन'** के नाम से जाना जाता है।
- **लेखानुदान को भारतीय संविधान के अनुच्छेद 116 में परिभाषित किया गया है।**

50.

उत्तर: D

व्याख्या:

- हाल ही में केंद्रीय गृह और सहकारिता मंत्री ने कोलकाता में **25वीं पूर्वी क्षेत्रीय परिषद की बैठक की अध्यक्षता की।**
- **क्षेत्रीय परिषदें वैधानिक (संवैधानिक नहीं) निकाय हैं।**
- ये संसद के एक अधिनियम, यानी **राज्य पुनर्गठन अधिनियम 1956 द्वारा स्थापित की गई हैं। अत: कथन 2 सही नहीं है।**
- इस अधिनियम ने देश को पाँच क्षेत्रों- उत्तरी, मध्य, पूर्वी, पश्चिमी और दक्षिणी में विभाजित किया तथा प्रत्येक क्षेत्र के लिये एक क्षेत्रीय परिषद प्रदान की।
- उपर्युक्त क्षेत्रीय परिषदों के अलावा **संसद के एक अलग अधिनियम वर्ष 1971 के उत्तर-पूर्वी परिषद अधिनियम** द्वारा एक उत्तर-पूर्वी परिषद बनाई गई थी।
- **क्षेत्रीय परिषद मुख्यालय :**
  - **उत्तरी क्षेत्रीय परिषद:** नई दिल्ली
  - **मध्य क्षेत्रीय परिषद:** इलाहाबाद
  - **पूर्वी क्षेत्रीय परिषद:** कोलकाता
  - **पश्चिमी क्षेत्रीय परिषद:** मुंबई
  - **दक्षिणी क्षेत्रीय परिषद:** चेन्नई
- **अत: कथन 2 सही नहीं है।**

51.

उत्तर: B

व्याख्या:

न्यायालय अवकाश:

- **परिचय:**
  - सर्वोच्च न्यायालय के न्यायिक कामकाज़ के लिये एक वर्ष में 193 कार्य दिवस होते हैं, जबकि उच्च न्यायालय लगभग 210 दिनों के लिये कार्य करते हैं और ट्रायल कोर्ट 245 दिनों के लिये कार्य करते हैं। **अत: कथन 1 सही नहीं है।**
  - उच्च न्यायालयों के पास सेवा नियमों के अनुसार अपने कैलेंडर बनाने की शक्ति है। **अत: कथन 2 सही है।**
  - सर्वोच्च न्यायालय में प्रत्येक वर्ष दो लंबी अवधि के अवकाश होते हैं, ग्रीष्मकालीन और शीतकालीन अवकाश, लेकिन इन अवधियों के दौरान तकनीकी रूप से पूरी तरह से न्यायालय का कामकाज़ बंद नहीं होता है।
- **वैधानिक प्रावधान:**
  - सर्वोच्च न्यायालय के नियम, 2013 के आदेश II के नियम 6 के तहत CJI ने ग्रीष्मकालीन अवकाश के दौरान आवश्यक विविध मामलों की सुनवाई और नियमित सुनवाई हेतु खंडपीठों को नामित किया है।
  - नियम में कहा गया है कि CJI ग्रीष्मकालीन या सर्दियों के अवकाश के दौरान तत्काल प्रकृति के सभी मामलों की सुनवाई के लिये एक या एक से अधिक न्यायाधीशों की नियुक्ति कर सकता है, जो इन नियमों के तहत एकल न्यायाधीश द्वारा सुने जा सकते हैं।
  - और जब भी आवश्यक हो, वह अवकाश के दौरान अत्यावश्यक मामलों की सुनवाई के लिये एक खंडपीठ भी नियुक्त कर सकता है, जिसमें सुनवाई न्यायाधीशों की एक पीठ द्वारा की जानी चाहिये। **अत: कथन 3 सही है।**

52.

उत्तर: A

व्याख्या:

- यह पीठासीन न्यायालय के अधिकारी या प्रशासनिक अधिकारी के बीच मतभेद के कारण **आधिकारिक कार्रवाई जैसे कानूनी कार्यवाही में भाग लेने से अलग रहने से संबंधित है। अत: कथन 1 सही है।**

- **खुद को सुनवाई से अलग रखने संबंधी नियम:**
  - पुनर्मूल्यांकन को नियंत्रित करने वाले कोई औपचारिक नियम नहीं हैं, हालाँकि सर्वोच्च न्यायालय के कई निर्णयों में इस मुद्दे पर बात की गई है।
  - रंजीत ठाकुर बनाम भारत संघ (1987) मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने माना कि यह दूसरे पक्ष के मन में पक्षपात की संभावना की आशंका के प्रति तर्कों को बल प्रदान करता है।
  - न्यायालय को अपने सामने मौजूद पक्ष के तर्क को देखना चाहिये और तय करना चाहिये कि वह पक्षपाती है या नहीं। अत: कथन 2 सही नहीं है।

53.

उत्तर: B

व्याख्या:

- **अनुच्छेद 262:** संविधान का यह अनुच्छेद अंतर-राज्यीय जल विवादों के अधिनिर्णयन का प्रावधान करता है।
- **अनुच्छेद 263:** यह राष्ट्रपति को राज्यों के बीच विवादों के समाधान करने के लिये एक अंतर-राज्य परिषद स्थापित करने की शक्ति देता है।
- **अनुच्छेद 280:** इस अनुच्छेद के तहत भारत के राष्ट्रपति को एक वित्त आयोग का गठन करना आवश्यक है।
- **अनुच्छेद 340:** यह पिछड़े वर्गों की स्थितियों की जाँच के लिये आयोग की नियुक्ति से संबंधित है।

54.

उत्तर: D

व्याख्या:

- **संवैधानिक निकाय:** अनुच्छेद 148, CAG के एक स्वतंत्र कार्यालय का प्रावधान करता है। यह भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग का प्रमुख एवं सार्वजनिक क्षेत्र का प्रमुख संरक्षक है। **अत: कथन 1 सही नहीं है।**
- CAG से संबंधित अन्य प्रावधानों में शामिल हैं: अनुच्छेद 149-151 (कर्तव्य और शक्तियाँ, संघ एवं राज्यों के खातों का प्रपत्र तथा लेखापरीक्षा रिपोर्ट), अनुच्छेद 279 (शुद्ध आय की गणना आदि), तीसरी अनुसूची (शपथ या प्रतिज्ञान), छठी अनुसूची (असम, मेघालय, त्रिपुरा व मिज़ोरम राज्यों में जनजातीय क्षेत्रों का प्रशासन)।
- **नियुक्ति:** भारत के राष्ट्रपति द्वारा अपने हस्ताक्षर और मुहर के साथ एक वारंट द्वारा।
- **कार्यकाल:** छह वर्ष की अवधि या 65 वर्ष की आयु तक, जो भी पहले हो।
- **निष्कासन:** CAG को राष्ट्रपति द्वारा उसी आधार पर और उसी तरह से हटाया जा सकता है जिस तरह सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश को हटाया जाता है। वह राष्ट्रपति के प्रसादपर्यंत अपने पद पर नहीं बना रहता है। **अत: कथन 2 सही नहीं है।**
- दूसरे शब्दों में, उसे राष्ट्रपति द्वारा संसद के दोनों सदनों द्वारा विशेष बहुमत से पारित संकल्प के आधार पर या साबित कदाचार या अक्षमता के आधार पर हटाया जा सकता है।
- एक बार CAG के पद से सेवानिवृत्त होने/इस्तीफा देने के बाद वह भारत सरकार या किसी भी राज्य सरकार के अधीन किसी भी कार्यालय का पदभार नहीं ले सकता।
- **अत: कथन 3 सही है।**

55.

उत्तर: B

व्याख्या:

संसदीय समितियाँ:

- संसदीय समिति सांसदों का एक पैनल है जिसे सदन द्वारा नियुक्त या निर्वाचित किया जाता है या अध्यक्ष/सभापति द्वारा नामित किया जाता है।
- वे अनुच्छेद 105 और अनुच्छेद 118 से अपना अधिकार प्राप्त करते हैं।
- **अनुच्छेद 105 सांसदों के विशेषाधिकारों से संबंधित है।**
- **अनुच्छेद 118 संसद को अपनी प्रक्रिया और कार्य संचालन को विनियमित करने के लिये नियम बनाने का अधिकार देता है।**
- विधायी कार्य शुरू करने के लिये संसद के किसी भी सदन में एक विधेयक प्रस्तुत किया जाता है लेकिन कानून बनाने की प्रक्रिया अक्सर जटिल होती है तथा संसद के पास विस्तृत चर्चा के लिये सीमित समय होता है।
- साथ ही राजनीतिक ध्रुवीकरण और चर्चा हेतु सामंजस्य का अभाव संसद में तेज़ी से विद्वेषपूर्ण और अनिर्णायक बहसों को जन्म दे रहा है।
- इन मुद्दों के कारण विधायी कार्य का एक बड़ा निर्णय संसद के बजाय संसदीय समितियों द्वारा होता है।
- **विभागों से संबंधित स्थायी समितियाँ (DRSC):**
  - वे संसद के प्रति कार्यपालिका (अर्थात् मंत्रिपरिषद) की अधिक जवाबदेही सुनिश्चित करती हैं। समितियों के माध्यम से **संसद** प्रशासन पर नियंत्रण करने के साथ प्रभाव डालने का कार्य करती है और कार्यपालिका पर निगरानी भी रखती है।
  - ये समितियाँ विधायिका को अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन करने और अपने कार्यों को प्रभावी ढंग से शीघ्रता और कुशलतापूर्वक

विनियमित करने में सहायता करती हैं। वे उन मामलों की पूरी तरह से और व्यवस्थित रूप से छानबीन करने में संसद की सहायता करती हैं जिन पर चर्चा नहीं की जा सकती थी। **अतः विकल्प B सही है।**

- ये समितियाँ उन्हें सौंपे जाने वाले मामलों पर सहायता प्रदान करती हैं।

56.

उत्तर: C

व्याख्या:

- **विनियोग विधेयक** सरकार को किसी वित्तीय वर्ष के दौरान **व्यय की पूर्ति के लिये भारत की संचित निधि से धनराशि निकालने की शक्ति** देता है।
- **विनियोग विधेयक लोकसभा में बजट प्रस्तावों और अनुदानों की मांगों पर चर्चा के बाद पेश** किया जाता है। **अतः कथन 1 सही है।**
- संसदीय वोटिंग में विनियोग विधेयक के पारित न होने से सरकार को इस्तीफा देना होगा तथा आम चुनाव कराना होगा।
- लोकसभा द्वारा पारित होने के बाद इसे राज्यसभा को भेजा जाता है।
- **राज्यसभा को इस विधेयक में संशोधन की सिफारिश करने की शक्ति प्राप्त है। हालाँकि राज्यसभा की सिफारिशों को स्वीकार करना या अस्वीकार करना लोकसभा का विशेषाधिकार है। अतः कथन 2 सही है।**

57.

उत्तर: B

व्याख्या:

- सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश को राष्ट्रपति के आदेश से उसके पद से हटाया जा सकता है।
- राष्ट्रपति पद से हटाने का आदेश तभी जारी कर सकता है जब संसद द्वारा उसी सत्र में उसे हटाने के लिये अभिभाषण प्रस्तुत किया गया हो।
- न्यायाधीश जाँच अधिनियम (1968) महाभियोग की प्रक्रिया द्वारा सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश को हटाने से संबंधित प्रक्रिया को नियंत्रित करता है:
- अभी तक उच्चतम न्यायालय के किसी न्यायाधीश पर महाभियोग नहीं लगाया गया है। **अतः कथन 1 सही नहीं है।**
- अभिभाषण को संसद के प्रत्येक सदन के विशेष बहुमत द्वारा समर्थित होना चाहिये (अर्थात्, उस सदन की कुल सदस्यता का बहुमत और उस सदन के उपस्थित एवं मतदान करने वाले सदस्यों के कम से कम दो-तिहाई बहुमत)। **अतः कथन 2 सही है।**

58.

उत्तर: D

व्याख्या:

- भारत निर्वाचन आयोग जिसे चुनाव आयोग के नाम से भी जाना जाता है, एक स्वायत्त संवैधानिक निकाय है जो भारत में संघ और राज्य चुनाव प्रक्रियाओं का संचालन करता है।
- यह देश में लोकसभा, राज्यसभा, राज्य विधानसभाओं, राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति के चुनाव का संचालन करता है।
- **संरचना:**
  - मुख्य चुनाव आयुक्त और दो अन्य चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा की जाती है।
  - मुख्य चुनाव आयुक्त को हटाना- साबित कदाचार या अक्षमता के आधार पर संकल्प।
  - निष्कासन के लिये दो-तिहाई सदस्यों के विशेष बहुमत की आवश्यकता होती है और इसके लिये सदन के कुल सदस्यों का 50 प्रतिशत से अधिक मतदान होना चाहिये। **अतः कथन 1 सही नहीं है।**
  - सेवानिवृत्त चुनाव आयुक्त सरकार द्वारा आगे नियुक्ति के लिये पात्र है। **अतः कथन 2 सही नहीं है।**

59.

उत्तर: B

व्याख्या:

- **अनुच्छेद 244,** छठी अनुसूची स्वायत्त प्रशासनिक डिवीजनों - स्वायत्त ज़िला परिषदों (ADC) के गठन के लिये प्रावधान प्रदान करती है - जिनके पास राज्य के भीतर विधायी, न्यायिक और प्रशासनिक स्वायत्तता है।
  - **छठी अनुसूची** में **असम, मेघालय, त्रिपुरा और मिज़ोरम चार उत्तर-पूर्वी** राज्यों के आदिवासी क्षेत्रों के **प्रशासन के लिये विशेष प्रावधान हैं। अतः कथन 1 सही नहीं है।**
- इन चार राज्यों में आदिवासी क्षेत्रों को स्वायत्त ज़िलों के रूप में गठित किया गया है। **राज्यपाल को स्वायत्त ज़िलों को संगठित और पुनर्गठित करने का अधिकार है।**
  - संसद या राज्य विधानमंडल के अधिनियम स्वायत्त ज़िलों पर लागू नहीं होते हैं या निर्दिष्ट संशोधनों और अपवादों के साथ लागू होते हैं। **अतः कथन 2 सही है।**
  - इस संबंध में निर्देशन की शक्ति या तो **राष्ट्रपति या राज्यपाल के पास है।**

60.

उत्तर: D

व्याख्या:

- उपराष्ट्रपति, राष्ट्रपति की तरह, सीधे लोगों द्वारा नहीं बल्कि अप्रत्यक्ष चुनाव की विधि से चुना जाता है। वह एक निर्वाचक मंडल के सदस्यों द्वारा चुना जाता है जिसमें संसद के दोनों सदनों के सदस्य शामिल होते हैं।
- यह निर्वाचक मंडल निम्नलिखित दो मामलों में राष्ट्रपति के चुनाव हेतु निर्वाचक मंडल से भिन्न है:
  - इसमें **संसद के निर्वाचित और मनोनीत दोनों सदस्य होते हैं** (राष्ट्रपति के संदर्भ में, केवल निर्वाचित सदस्य)। **अत: कथन 1 सही नहीं है।**
  - इसमें **राज्य विधानसभाओं के सदस्य शामिल नहीं होते हैं** (राष्ट्रपति के मामले में, राज्य विधानसभाओं के निर्वाचित सदस्य शामिल होते हैं)। **अत: कथन 2 सही नहीं है।**

61.

उत्तर: D

व्याख्या:

- संसद, भारत के संविधान के अनुच्छेद 2 और अनुच्छेद 3 से एक नया राज्य बनाने के लिए शक्तियाँ प्राप्त करती है।
- **अनुच्छेद 2:**
  - राज्य संसद विधि द्वारा संघ में प्रवेश कर सकते है या ऐसे नियमों और शर्तों पर नए राज्यों की स्थापना कर सकती है जो वह उचित समझे।
  - अनुच्छेद 2 के तहत सिक्किम राज्य देश का हिस्सा बना।
- **अनुच्छेद 3:** इसने संसद को मौजूदा राज्यों के परिवर्तन द्वारा नए राज्यों के गठन से संबंधित कानून बनाने का अधिकार दिया।
- **अनुच्छेद 4:** नए राज्यों के प्रवेश या स्थापना (अनुच्छेद 2 के तहत) और नए राज्यों के गठन एवं मौजूदा राज्यों के क्षेत्रों, सीमाओं या नामों में परिवर्तन (अनुच्छेद 3 के तहत) के लिये बनाए गए कानूनों को अनुच्छेद के तहत संविधान के संशोधन के रूप में नहीं माना जाता है 368.
- **अनुच्छेद 4:** नए राज्यों के प्रवेश या स्थापना (अनुच्छेद 2 के तहत) और नए राज्यों के गठन एवं मौजूदा राज्यों के क्षेत्रों, सीमाओं या नामों में परिवर्तन (अनुच्छेद 3 के तहत) के लिये बनाए गए कानूनों को अनुच्छेद 368 के तहत संविधान के संशोधन के रूप में नहीं माना जाएगा।

अत: विकल्प A सही है।

62.

उत्तर: C

व्याख्या:

- 74वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1992 ने नगर पंचायतों, नगर परिषदों और नगर निगमों को क्रमश: छोटे, बड़े और बहुत बड़े शहरी क्षेत्रों के रूप में स्थापित किया। **अत: कथन 1 सही नहीं है।**
- पंचायती राज निकायों के वित्तीय मामलों से निपटने और स्थानीय शहरी स्वशासी निकायों के वित्तीय मामलों के लिये 74वें संविधान संशोधन के तहत राज्य वित्त आयोग का गठन किया गया है।
- महिलाओं के लिये एक तिहाई सीटों का आरक्षण, **अत: कथन 3 सही नहीं है।**
- शहरी स्थानीय निकायों में अनुसूचित जातियों/अनुसूचित जनजातियों के लिये उनकी जनसंख्या अनुपात में सीटों के आरक्षण का प्रावधान है। **अत: कथन 4 सही है।**

63.

उत्तर: D

व्याख्या:

- सर्वोच्च न्यायालय कॉलेजियम एक पाँच सदस्यीय निकाय है, जिसका नेतृत्त्व निवर्तमान भारत के मुख्य न्यायाधीश (CJI) करते हैं, जबकि सर्वोच्च न्यायालय के चार अन्य वरिष्ठतम न्यायाधीश इसमें शामिल होते हैं। **अत: कथन 1 सही नहीं है।**
- उच्च न्यायालय कॉलेजियम का नेतृत्त्व उच्च न्यायालय के निवर्तमान मुख्य न्यायाधीश और उस न्यायालय के दो अन्य वरिष्ठतम न्यायाधीश करते हैं।
- कॉलेजियम की पसंद या चयन के बारे में सरकार आपत्ति कर सकती है और स्पष्टीकरण भी मांग सकती है, लेकिन अगर कॉलेजियम पुन: उन्हीं नामों की अनुशंसा करे तो सरकार उन्हें ही न्यायाधीशों के रूप में नियुक्त करने के लिये बाध्य है।
- संविधान के अनुच्छेद 124(2) और 217 क्रमश: सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालयों में न्यायाधीशों की नियुक्ति के संबंध में उपबंध करते हैं।
- ये नियुक्तियाँ राष्ट्रपति द्वारा की जाती हैं जिसके लिये वह ''उच्चतम न्यायालय के और राज्यों के उच्च न्यायालयों के ऐसे न्यायाधीशों से परामर्श के पश्चात, जिनसे राष्ट्रपति इस प्रयोजन के लिये परामर्श करना आवश्यक समझे'' की शर्त का पालन करता है।
- लेकिन संविधान इन नियुक्तियों के लिये कोई प्रक्रिया निर्धारित नहीं करता है। **अत: कथन 1 सही नहीं है।**

64.

उत्तर: C

व्याख्या:

- **संसदीय समिति सांसदों** का एक पैनल है जिसे सदन द्वारा **नियुक्त या निर्वाचित किया जाता है या अध्यक्ष/सभापति द्वारा नामित किया जाता है।**
- समिति अध्यक्ष/सभापति के निर्देशन में कार्य करती है और यह **अपनी रिपोर्ट सदन या अध्यक्ष/सभापति को प्रस्तुत करती है। अत: कथन 1 सही है।**
- संसदीय समितियों की उत्पत्ति ब्रिटिश संसद में हुई है। **अत: कथन 2 सही है।**
- **उन्हें अनुच्छेद 105 और अनुच्छेद 118 के तहत अधिकार प्राप्त हैं।**
  - **अनुच्छेद 105 सांसदों के विशेषाधिकारों से संबंधित है।**
  - अनुच्छेद 118 संसद को अपनी प्रक्रिया और कार्य संचालन को विनियमित करने के लिये नियम बनाने का अधिकार देता है।

65.

उत्तर: C

व्याख्या:

विचाराधीन कैदियों हेतु संवैधानिक संरक्षण:

- **राज्य का विषय:**
  - भारत के **संविधान की सातवीं अनुसूची की सूची II की प्रविष्टि 4 के तहत 'जेल/उसमें हिरासत में लिये गए व्यक्ति'** राज्य सूची का विषय है।
  - जेलों का प्रशासन और प्रबंधन संबंधित राज्य सरकारों की ज़िम्मेदारी है।
  - हालाँकि गृह मंत्रालय जेलों और कैदियों से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर **राज्यों एवं केंद्रशासित प्रदेशों को नियमित मार्गदर्शन तथा सलाह देता है।**
- **अनुच्छेद 39A:**
  - संविधान का अनुच्छेद 39A राज्य को यह सुनिश्चित करने का निर्देश देता है कि कानूनी प्रणाली का संचालन समान अवसर के आधार पर न्याय को बढ़ावा देता है और विशेष रूप से उपयुक्त कानून या योजनाओं द्वारा या किसी अन्य तरीके से नि:शुल्क कानूनी सहायता प्रदान करेगा, ताकि अवसरों को सुनिश्चित किया जा सके। आर्थिक या अन्य अक्षमताओं के कारण कोई भी नागरिक न्याय प्राप्त करने से वंचित नहीं किया जाए।
  - **नि:शुल्क कानूनी सहायता या नि:शुल्क कानूनी सेवा का अधिकार संविधान द्वारा गारंटीकृत आवश्यक मौलिक अधिकार है।**
- **अनुच्छेद 21:**
  - यह **भारत के संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत उचित,** निष्पक्ष और न्यायपूर्ण स्वतंत्रता का आधार है, जिसके अनुसार, "कानून द्वारा स्थापित प्रक्रिया के अलावा किसी भी व्यक्ति को उसके जीवन या व्यक्तिगत स्वतंत्रता से वंचित नहीं किया जाएगा"।

66.

उत्तर: C

व्याख्या:

संविधान सभा:

- संविधान सभा द्वारा भारत का संविधान बनाया गया है। वर्ष **1934 में, एम एन रॉय ने पहली बार एक संविधान सभा का प्रस्ताव रखा। अत: कथन 1 सही है।**
- वर्ष 1946 की कैबिनेट मिशन योजना के तहत संविधान सभा के गठन के लिये चुनाव हुआ। **अत: कथन 2 सही है।**
- संविधान सभा ने संविधान का मसौदा तैयार किया और यह भी:
  - मई 1949 में राष्ट्रमंडल में भारत की सदस्यता की पुष्टि की गई।
  - 22 जुलाई 1947 को राष्ट्रीय ध्वज को अपनाया गया।
  - 24 जनवरी 1950 को राष्ट्रीय गीत को अपनाया गया।
  - 24 जनवरी 1950 को राष्ट्रगान को अपनाया गया।
  - निर्वाचित डॉ राजेंद्र प्रसाद 24 जनवरी, 1950 को भारत के पहले राष्ट्रपति थे।

67.

उत्तर: C

व्याख्या:

- सरकारिया आयोग की प्रमुख सिफारिशों में से एक स्थायी अंतर-राज्य/अंतर्राज्यीय परिषद की स्थापना करना था। **अत: कथन 1 सही है।**
- अंतर्राज्यीय परिषद एक स्वतंत्र राष्ट्रीय सलाहकार मंच है जिसे भारतीय संविधान के अनुच्छेद 263 के अनुरूप स्पष्ट रूप से परिभाषित किया गया है।
- अंतर्राज्यीय परिषद की स्थापना सहकारी संघवाद को बढ़ावा देने और समर्थन देने के लिये एक मज़बूत संस्थागत ढाँचे के रूप में की गई थी। **अत: कथन 2 सही है।**
- अंतर्राज्यीय परिषद एक अनुशंसात्मक निकाय है जिसे संघ और राज्यों के बीच या राज्यों के बीच सामान्य हित के विषयों की जाँच और चर्चा करने का अधिकार दिया गया है।

68.

उत्तर: B

व्याख्या:

भारत निर्वाचन आयोग:

- **भारत का चुनाव आयोग (ECI)** एक स्वायत्त संवैधानिक प्राधिकरण है जो भारत में संघ और राज्य चुनाव प्रक्रियाओं के प्रशासन के लिये जिम्मेदार है।
- यह **25 जनवरी 1950 को संविधान के अनुसार स्थापित किया गया था** तथा इसेराष्ट्रीय मतदाता दिवस के रूप में मनाया जाता है)। आयोग का सचिवालय नई दिल्ली में है। **अत: कथन 1 सही है।**
- यह निकाय भारत में लोकसभा, राज्यसभा और राज्य विधान सभाओं के चुनावों और देश में राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति के कार्यालयों का संचालन करता है।
- संविधान में चुनाव आयोग के सदस्यों की योग्यता (कानूनी, शैक्षिक, प्रशासनिक या न्यायिक) **निर्धारित नहीं की गई है।**
- संविधान में चुनाव आयोग के **सदस्यों के कार्यकाल को निर्दिष्ट नहीं किया गया है।**
- संविधान ने सेवानिवृत्त हो रहे चुनाव आयुक्तों को सरकार द्वारा किसी और नियुक्ति से वंचित नहीं किया है। इसलिए **कथन 2 सही नहीं है।**

69.

उत्तर: A

व्याख्या:

- **नौवीं अनुसूची** में **केंद्रीय और राज्य कानूनों** को शामिल किया गया है जिसे न्यायालय में चुनौती नहीं दी जा सकती है और **प्रथम संविधान संशोधन अधिनियम, 1951** के तहत जोड़ा गया था। **अत: कथन 1 सही है।**
- **प्रथम संशोधन में अनुसूची में 13 कानून जोड़े गए। आगे के विभिन्न वर्षों के संशोधनों ने वर्तमान में संरक्षित कानूनों की संख्या को 284 तक पहुँचा दिया है।**
- हालाँकि **अनुच्छेद 31B न्यायिक समीक्षा** से बाहर है, सर्वोच्च न्यायालय ने पूर्व में कहा है कि **नौवीं अनुसूची** के तहत भी न्यायिक समीक्षा हो सकती है यदि वे मौलिक अधिकारों या संविधान की मूल संरचना का उल्लंघन करते हैं। **अत: कथन 2 सही नहीं है।**

70.

उत्तर: D

व्याख्या:

- भारत का विधि आयोग समय-समय पर भारत सरकार द्वारा गठित **एक गैर-सांविधिक निकाय है। अत: कथन 1 सही नहीं है।**
- सर्वोच्च न्यायालय का सेवानिवृत्त न्यायाधीश या उच्च न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश इस आयोग का अध्यक्ष होगा। **अत: कथन 2 सही नहीं है।**
- **पहला विधि आयोग** वर्ष 1834 में ब्रिटिश राज काल के दौरान वर्ष **1833 के चार्टर अधिनियम** द्वारा स्थापित किया गया था और **इसकी अध्यक्षता लॉर्ड मैकाले ने की थी। अत: कथन 3 सही नहीं है।**
- एक पूर्णकालिक अध्यक्ष के साथ-साथ **आयोग में एक सदस्य-सचिव सहित और चार पूर्णकालिक सदस्य होते हैं।**
  - कानून मंत्रालय का कानून और विधायी सचिव इस आयोग का पदेन सदस्य होगा। **अत: कथन 4 सही नहीं है।**

71.

उत्तर: C

व्याख्या:

- 10% EWS आरक्षण **अनुच्छेद 15 और 16** में संशोधन करके 103 वें संविधान (संशोधन) अधिनियम, 2019 के तहत पेश किया गया था।
  - इससे संविधान में अनुच्छेद 15 (6) और अनुच्छेद 16 (6) को सम्मिलित किया गया।
  - यह आर्थिक रूप से कमज़ोर वर्गों (EWS) हेतु शिक्षा संस्थानों में प्रवेशऔर नौकरियों में आर्थिक आरक्षण के लिये है। **अत: कथन 1 और 2 सही नहीं हैं।**
- यह **अनुसूचित जाति (SC), अनुसूचित जनजाति (ST) तथा सामाजिक और शैक्षिक रूप से पिछड़े वर्गों (SEBS)** के लिये 50% आरक्षण नीति द्वारा कवर नहीं किये गए गरीबों के कल्याण को बढ़ावा देने हेतु अधिनियमित किया गया था। **अत: कथन 3 सही है।**
- यह **केंद्र और राज्य दोनों** को ही EWS को आरक्षण प्रदान करने में सक्षम बनाता है। **अत: कथन 4 सही नहीं है।**

72.

उत्तर: D

व्याख्या:

- यह न्यायाधीशों की नियुक्ति और स्थानांतरण की प्रणाली है, जो संसद के किसी अधिनियम या संविधान के प्रावधान द्वारा स्थापित न होकर सर्वोच्च न्यायालय के निर्णयों के माध्यम से विकसित हुई है। **अत: कथन 1 सही नहीं है।**
- भारतीय संविधान के अनुच्छेद 124 (2) और 217 सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालयों में न्यायाधीशों की नियुक्ति से संबंधित हैं।
- सर्वोच्च न्यायालय कॉलेजियम की अध्यक्षता भारत के मुख्य न्यायाधीश (CJI) करते हैं और इसमें सर्वोच्च न्यायालय के चार अन्य वरिष्ठतम न्यायाधीश शामिल होते हैं। **अत: कथन 2 सही नहीं है।**

73.

उत्तर: B

व्याख्या:

- हाल ही में एक राजनीतिक दल ने **तमिलनाडु के राज्यपाल को हटाने का प्रस्ताव पेश किया।**
- **संविधान के अनुच्छेद 155 और 156 के तहत राज्यपाल की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा की जाती है तथा वह "राष्ट्रपति के प्रसादपर्यंत" पद धारण करता है।**
  - यदि पाँच वर्ष का कार्यकाल पूरा होने से पूर्व इस प्रसादपर्यंतता को वापस ले लिया जाता है, **तो राज्यपाल को पद छोड़ना पड़ता है।**
  - **अत: कथन 2 सही है।**
- राष्ट्रपति चूँकि प्रधानमंत्री और मंत्रिपरिषद की सहायता और सलाह से काम करता है, **इसलिये राज्यपाल को केंद्र सरकार द्वारा नियुक्त किया और हटाया जा सकता है।**
  - **अत: कथन 1 सही नहीं है।**

74.

उत्तर: D

व्याख्या:

- एक **अर्द्ध-न्यायिक निकाय** "एक न्यायालय या विधायिका के अलावा सरकार का अंग है, जो निजी पार्टियों के अधिकारों को निर्णय या नियम के माध्यम से प्रभावित करता है"।
- अर्द्ध-न्यायिक निकाय न्यायपालिका के विशिष्ट मामलों को निपटाने में भागीदार बनकर न्यायपालिका के कार्यभार को साझा करके अपना यागदान देते हैं।
- भारत में अर्द्ध-न्यायिक निकायों के कुछ उदाहरण हैं:
  - राष्ट्रीय हरित अधिकरण (NGT)
  - केंद्रीय सूचना आयोग (CIC)
  - लोक अदालत
  - वित्त आयोग
  - राष्ट्रीय उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग
  - आयकर अपीलीय न्यायाधिकरण

  अत: विकल्प D सही है।

75.

उत्तर: C

व्याख्या:

- भारत के मुख्य न्यायाधीश (CJI) और सर्वोच्च न्यायालय (SC) के न्यायाधीशों की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा संविधान के अनुच्छेद 124 के खंड (2) के तहत की जाती है।
  - जहाँ तक CJI का सवाल है, निवर्तमान CJI अपने उत्तराधिकारी की सिफारिश करता है।
  - **अत: कथन 1 सही है।**
- केंद्रीय कानून मंत्री प्रधानमंत्री को सिफारिश भेजता है, जो बदले में राष्ट्रपति को सलाह देता है।
- दूसरे न्यायाधीश मामले (वर्ष 1993) में सर्वोच्च न्यायालय ने फैसला सुनाया कि सर्वोच्च न्यायालय के वरिष्ठतम न्यायाधीश को CJI के पद पर नियुक्त किया जाना चाहिये।
- भारत के मुख्य न्यायाधीश, जो रोस्टर के मास्टर भी हैं, यह तय करते हैं कि संविधान पीठ द्वारा कौन से मामलों की सुनवाई की जाएगी, पीठ पर न्यायाधीशों की संख्या और यहां तक कि इसकी संरचना भी।
- **अत: कथन 2 सही है।**

76.

उत्तर: D

व्याख्या:

- ज़मीनी स्तर पर लोकतंत्र की स्थापना करने के लिये 73वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1992 के माध्यम से पंचायती राज संस्थान को संवैधानिक स्थिति प्रदान की गई और उन्हें देश में ग्रामीण विकास का कार्य सौंपा गया। **अत: विकल्प A सही नहीं है।**
- 61वें संशोधन में लोकसभा और राज्य विधानसभा चुनावों के लिये मतदान की आयु 21 वर्ष से घटाकर 18 वर्ष कर दी गई है। **अत: विकल्प B सही नहीं है।**
- 44वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1972 द्वारा 'आंतरिक अशांति' को हटाकर उसके स्थान पर 'सशस्त्र विद्रोह' शब्द किया गया।
  - कैबिनेट की लिखित अनुशंसा पर ही राष्ट्रपति को राष्ट्रीय आपातकाल घोषित करने के लिये कहा।
  - राष्ट्रीय आपातकाल और राष्ट्रपति शासन के संबंध में कुछ प्रक्रियात्मक सुरक्षा उपाय किये।
  - संपत्ति के अधिकार को मौलिक अधिकारों की सूची से हटा दिया और इसे केवल कानूनी अधिकार बना दिया।
  - बशर्ते कि अनुच्छेद 20 और 21 द्वारा गारंटीकृत मौलिक अधिकारों को राष्ट्रीय आपातकाल के दौरान निलंबित नहीं किया जा सकता है। **अत: विकल्प C सही नहीं है।**
- तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा लगाए गए आपातकाल के दौरान 1976 में संविधान के 42वें संशोधन (1976) के हिस्से के रूप में दो शब्दों (समाजवादी और धर्मनिरपेक्ष) को प्रस्तावना में जोड़ा गया था। **अत: विकल्प D सही है।**

77.

उत्तर: B

व्याख्या:

- भारतीय संविधान के अनुच्छेद 161 के तहत राज्य के राज्यपाल के पास किसी ऐसे मामले से संबंधित किसी भी कानून के खिलाफ (जहाँ तक राज्य की कार्यकारी शक्ति का विस्तार हो) किसी भी अपराध के लिये दोषी ठहराए गए व्यक्ति की सज़ा को माफ करने, राहत देने, राहत या छूट देने या निलंबित करने, हटाने या कम करने की शक्ति होगी।
- **मृत्युदंड:** राष्ट्रपति मृत्युदंड के सभी मामलों में क्षमादान दे सकता है लेकिन **राज्यपाल की क्षमादान शक्ति मृत्युदंड के मामलों तक विस्तारित नहीं होती है।**
  - **अत: कथन 1 सही नहीं है।**
- **कोर्ट मार्शल:** कोर्ट मार्शल के तहत राष्ट्रपति सजा प्राप्त व्यक्ति की सज़ा माफ कर सकता है परंतु **अनुच्छेद 161 राज्यपाल को ऐसी कोई शक्ति प्रदान नहीं करता है।**
  - **अत: कथन 2 सही है।**

78.

उत्तर: C

व्याख्या:

- **निवारक निरोध** का उपयोग ऐसी स्थिति में किया जाता है, जब किसी व्यक्ति को केवल इस संदेह के आधार पर पुलिस हिरासत में रखा गया है कि वह कोई आपराधिक कृत्य करेगा या समाज को हानि पहुँचाने का प्रयास करेगा।
  - इसके अंतर्गत पुलिस के पास किसी ऐसे व्यक्ति हिरासत में लेने का अधिकार है जिस पर उसे अपराध करने का संदेह है, कुछ मामलों में वारंट या मजिस्ट्रेट के प्राधिकरण के बिना गिरफ्तारी करने का भी अधिकार है।
- **दंडात्मक निरोध** अर्थ है- किसी अपराध के लिये सजा के रूप में निरोध। इसका उपयोग ऐसी स्थिति में किया जाता है, जब वास्तव में कोई अपराध में किया गया हो, या उस अपराध को करने का प्रयास किया गया हो।
  - **अत: कथन 1 सही नहीं है।**
- संविधान का **अनुच्छेद 22, गिरफ्तार या हिरासत (निरोध) में लिये गए व्यक्तियों को सुरक्षा** प्रदान करता है।
  - **अत: कथन 2 सही नहीं है।**

79.

उत्तर: D

व्याख्या:

- हाल ही में केरल के राज्यपाल ने मंत्रियों को चेतावनी दी कि मंत्रियों के व्यक्तिगत बयान जो राज्यपाल के कार्यालय की गरिमा को कम करते हैं, पर कड़ी कार्रवाई की जाएगी।
  - प्रसादपर्यंत के सिद्धांत की उत्पत्ति अंग्रेज़ो के कानून से हुई जिसके अनुसार, सिविल सेवक क्राउन के प्रसादपर्यंत पद धारण करता है।
- **राज्यपाल से संबंधित संवैधानिक प्रावधान:**
  - भारतीय संविधान के अनुच्छेद 153 के तहत प्रत्येक राज्य के लिये एक राज्यपाल का प्रावधान किया गया है। एक व्यक्ति को दो या दो से अधिक राज्यों के राज्यपाल के रूप में नियुक्त किया जा सकता है।
    - राज्यपाल केंद्र सरकार का एक नामित व्यक्ति होता है, जिसे राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त किया जाता है।
  - **संविधान के मुताबिक, राज्य का राज्यपाल दोहरी भूमिका अदा करता है।**
    - **वह राज्य की मंत्रिपरिषद (CoM) की सलाह मानने को बाध्य राज्य का संवैधानिक प्रमुख होता है। अत: कथन 3 सही है।**
    - इसके अतिरिक्त वह केंद्र सरकार और राज्य सरकार के बीच एक महत्त्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करता है।
  - **राज्यपाल को संविधान के अनुच्छेद 161 के तहत क्षमादान और दंडविराम आदि की भी शक्ति प्राप्त है।**
  - कुछ विवेकाधीन शक्तियों के अतिरिक्त राज्यपाल को उसके अन्य सभी कार्यों में सहायता करने और सलाह देने के लिये मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में एक मंत्रिपरिषद का गठन किये जाने का प्रावधान है। (अनुच्छेद 163)
  - संविधान में राज्यपाल की शक्तियों के प्रयोग के लिये कोई दिशानिर्देश नहीं हैं, जिसमें मुख्यमंत्री की नियुक्ति या विधानसभा को भंग करना शामिल है। **अत: कथन 1 सही है।**
  - राज्यपाल किसी विधेयक को मंज़ूरी कब तक रोक सकता है, इसकी कोई सीमा तय नहीं है। **अत: कथन 2 सही है।**

80.

उत्तर: C

व्याख्या:

- इस मामले में, भारतीय राज्यों तमिलनाडु और महाराष्ट्र में क्रमश: **जल्लीकट्टू** और **बैलगाड़ी दौड़** की प्रथा को समाप्त करते हुए।
- **सर्वोच्च न्यायालय** ने फैसला सुनाया था कि भारत के संविधान के **अनुच्छेद 21** में निहित गरिमा तथा निष्पक्ष व्यवहार के अधिकार के तहत **केवल मनुष्य ही नहीं बल्कि पशु भी शामिल हैं।**
- **अत: कथन 1 सही है।**
- DPSP और मौलिक कर्तव्यों दोनों में वन्यजीवों की सुरक्षा का उल्लेख है।
- **अत: कथन 2 सही है।**

- **अनुच्छेद 48A** में कहा गया है कि राज्य पर्यावरण की रक्षा और इसमें सुधार करने तथा देश के वनों एवं वन्यजीवों की रक्षा करने का प्रयास करेगा।
- **अनुच्छेद 51A (G)** में कहा गया है कि भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य है कि "जंगलों, झीलों, नदियों और वन्यजीवों सहित प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा व उसमे सुधार करे तथा जीवित प्राणियों के प्रति दया करे।"

81.

उत्तर: B

व्याख्या:

भारत में शिक्षा से संबंधित संवैधानिक प्रावधान और कानून:

- **संवैधानिक प्रावधान:**
  - भारतीय संविधान के भाग IV, **राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांतों (DPSP) के अनुच्छेद 45 और अनुच्छेद 39 (f)** में राज्य द्वारा वित्तपोषित होने के साथ-साथ समान एवं सुलभ शिक्षा का प्रावधान है।
  - 1976 में संविधान के 42वें संशोधन ने शिक्षा को राज्य से समवर्ती सूची में स्थानांतरित कर दिया। **अत: कथन 1 सही नहीं है।**
    - केंद्र सरकार की शिक्षा संबंधी नीतियाँ इसे एक व्यापक दिशा प्रदान करती हैं और राज्य सरकारों से इसका पालन करने की अपेक्षा की जाती है लेकिन यह अनिवार्य नहीं है, उदाहरण के लिये तमिलनाडु वर्ष 1968 में पहली शिक्षा नीति द्वारा निर्धारित त्रि-भाषा फार्मूले का पालन नहीं करता है।
  - वर्ष 2002 में **86वें संशोधन** ने अनुच्छेद 21-ए के तहत शिक्षा को एक प्रवर्तनीय अधिकार बना दिया। **अत: कथन 2 सही है।**
    - **संविधान का अनुच्छेद 21ए** राज्य के लिये 6 से 14 वर्ष की आयु के बच्चों को मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा प्रदान करना अनिवार्य बनाता है।
- **संबंधित कानून::**
  - **शिक्षा का अधिकार (RTE) अधिनियम, 2009 का** उद्देश्य 6 से 14 वर्ष की आयु के सभी बच्चों को प्राथमिक शिक्षा प्रदान करना और शिक्षा को मौलिक अधिकार के रूप में लागू करना है।
    - इसके तहत समाज के वंचित वर्गों के लिये 25% आरक्षण का भी प्रावधान है। **अत: कथन 3 सही है।**

82.

उत्तर: D

व्याख्या:

- सर्वोच्च न्यायालय ने वर्ष 2017 में के.एस. पुट्टास्वामी बनाम भारतीय संघ ऐतिहासिक निर्णय में गोपनीयता और उसके महत्त्व को वर्णित किया। सर्वोच्च न्यायालय के अनुसार, निजता का अधिकार एक मौलिक और अविच्छेद्य अधिकार है तथा इसके तहत व्यक्ति से जुड़ी सभी सूचनाओं के साथ उसके द्वारा लिये गए निर्णय शामिल हैं। **अत: कथन 1 सही नहीं है।**
- निजता के अधिकार को अनुच्छेद 21 के तहत प्राण एवं दैहिक स्वतंत्रता के अधिकार के आंतरिक भाग के रूप में तथा संविधान के भाग-III द्वारा गारंटीकृत स्वतंत्रता के हिस्से के रूप में संरक्षित किया गया है। **अत: कथन 2 सही नहीं है।**
- पुट्टास्वामी फैसले में कहा गया है कि निजता का अधिकार भारत के संविधान के अनुच्छेद 14, 19 और 21 के तहत मौलिक अधिकार के रूप में संरक्षित है।

83.

उत्तर: A

व्याख्या:

- भारतीय संविधान की अनुसूची 8 में हिंदी सहित 22 आधिकारिक भाषाएँ हैं। **अत: कथन 2 सही नहीं है।**
- **अनुच्छेद 351:** यह हिंदी भाषा को विकसित करने के लिये इसके प्रसार का प्रावधान करता है ताकि यह भारत की मिश्रित संस्कृति में सभी के लिये अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में कार्य कर सके।
- **अनुच्छेद 348 (2)** यह भी प्रावधान करता है कि अनुच्छेद 348 (1) के प्रावधानों के बावजूद किसी राज्य का राज्यपाल, राष्ट्रपति की पूर्व सहमति से उच्च न्यायालय की कार्यवाही में हिंदी या किसी भी आधिकारिक उद्देश्य के लिये इस्तेमाल की जाने वाली किसी अन्य भाषा के उपयोग को अधिकृत कर सकता है।
- **भारत के संविधान के अनुच्छेद 343 (1)** के अनुसार, देवनागरी लिपि में हिंदी, संघ की आधिकारिक भाषा होगी। **अत: कथन 1 सही है।**
- **राजभाषा अधिनियम, 1963 धारा 7 के तहत प्रावधान करता** है कि अंग्रेज़ी भाषा के अलावा किसी राज्य में हिंदी या राजभाषा का उपयोग, भारत के राष्ट्रपति की सहमति से राज्य के राज्यपाल द्वारा उच्च न्यायालय द्वारा दिये गए निर्णय, आज्ञा आदि प्रयोजन के लिये अधिकृत किया जा सकता है।

84.

उत्तर: A

व्याख्या:

- **समान नागरिक संहिता (UCC):**
  - UCC पूरे देश के लिये एक समान कानून के साथ ही सभी धार्मिक समुदायों के लिये विवाह, तलाक, विरासत, गोद लेने आदि कानूनों में भी एकरूपता प्रदान करने का प्रावधान करती है।

- **संविधान के अनुच्छेद 44 में वर्णित है कि राज्य भारत के पूरे क्षेत्र में नागरिकों के लिये एक समान नागरिक संहिता सुनिश्चित करने का प्रयास करेगा। अत: कथन 1 सही है।**
  - अनुच्छेद-44, संविधान में वर्णित राज्य के नीति निदेशक तत्त्वों में से एक है।
- अनुच्छेद 44 का उद्देश्य संविधान की प्रस्तावना में निहित "धर्मनिरपेक्ष लोकतांत्रिक गणराज्य" की अवधारणा को मजबूत करना है।

- वर्तमान में गोवा, भारत का एकमात्र ऐसा राज्य है जहाँ समान नागरिक संहिता लागू है। **अत: कथन 2 सही नहीं है।**

85.

उत्तर: D

व्याख्या:

- स्वतंत्रता के बाद भारत के संविधान के अनुच्छेद 343 में प्रावधान किया गया है कि संघ की आधिकारिक भाषा देवनागरी लिपि में हिंदी होगी।
  - हालाँकि यह अनिवार्य किया गया है कि भारत के संविधान के प्रारंभ होने के बाद 15 वर्षों तक संघ के सभी आधिकारिक उद्देश्यों हेतु अंग्रेज़ी भाषा का उपयोग जारी रहेगा।
  - यह आगे प्रावधान करता है कि राष्ट्रपति उक्त अवधि के दौरान अंग्रेज़ी भाषा के अलावा संघ के किसी भी आधिकारिक उद्देश्य के लिये हिंदी भाषा के उपयोग को अधिकृत कर सकता है।
- अनुच्छेद 348 (1) (A), इस भाग के पूर्वगामी उपबंधों में किसी बात के होते हुए भी, जब तक संसद् विधि द्वारा अन्यथा उपबंध न करे तब तक सर्वोच्च न्यायालय और प्रत्येक उच्च न्यायालय के समक्ष सभी कार्यवाही अंग्रेज़ी में की जाएगी।
  - दंड प्रक्रिया संहिता 1973 की धारा 272 में कहा गया है कि राज्य सरकार उच्च न्यायालयों के अलावा अन्य सभी न्यायालयों की भाषा का निर्धारण करेगी। मोटे तौर पर इसका तात्पर्य यह है कि ज़िला अदालतों में इस्तेमाल की जाने वाली भाषा राज्य सरकार के निर्देशानुसार क्षेत्रीय भाषा होगी। **अत: कथन 1 सही नहीं है।**
- अनुच्छेद 348 (2) यह भी प्रावधान करता है कि अनुच्छेद 348 (1) के प्रावधानों के बावजूद किसी राज्य का राज्यपाल, राष्ट्रपति की पूर्व सहमति से उच्च न्यायालय की कार्यवाही में हिंदी या किसी भी आधिकारिक उद्देश्य के लिये इस्तेमाल की जाने वाली किसी अन्य भाषा के उपयोग को अधिकृत कर सकता है।
  - उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान तथा मध्य प्रदेश राज्यों ने पहले ही अपने-अपने उच्च न्यायालयों के समक्ष कार्यवाही में हिंदी के उपयोग को अधिकृत कर दिया है और तमिलनाडु भी अपने उच्च न्यायालय के समक्ष तमिल भाषा के उपयोग को अधिकृत करने के लिये उसी दिशा में काम कर रहा है। **अत: कथन 2 सही नहीं है।**

86.

उत्तर: A

व्याख्या:

- **चुनाव चिह्न (आरक्षण और आवंटन) आदेश, 1968:**
  - **इसके तहत** प्रतीकों के आवंटन सहित **राजनीतिक दलों की मान्यता की निगरानी** की जाती है। **अत: कथन 1 सही है।**
    - निर्वाचन आयोग, चुनाव के उद्देश्य से राजनीतिक दलों को पंजीकृत करता है और उनके चुनावी प्रदर्शन के आधार पर उन्हें राष्ट्रीय या राज्य पार्टियों के रूप में मान्यता देता है। अन्य पार्टियों को केवल पंजीकृत गैर-मान्यता प्राप्त पार्टियों के रूप में घोषित किया जाता है।
  - राष्ट्रीय या राज्य पार्टियों के रूप में मान्यता कुछ विशेषाधिकारों को पार्टियों के **अधिकार के रूप में निर्धारित करती** है जैसे- **पार्टी प्रतीकों का आवंटन, टेलीविज़न और रेडियो स्टेशनों पर राजनीतिक प्रसारण के लिये समय का प्रावधान** तथा मतदाता सूची तक पहुँच। **अत: कथन 3 सही नहीं है।**
    - प्रत्येक राष्ट्रीय दल और राज्य स्तरीय पार्टी को क्रमश: पूरे देश तथा राज्यों में उपयोग के लिये विशेष रूप से आरक्षित एक प्रतीक चिह्न आवंटित किया जाता है।
  - आदेश के पैराग्राफ 15 के तहत **चुनाव आयोग प्रतिद्वंद्वी समूहों या किसी मान्यता प्राप्त राजनीतिक दल के वर्गों के बीच विवादों का फैसला कर सकता है और इसके नाम तथा चुनाव चिह्न पर दावा कर सकता है। अत: कथन 2 सही है।**

87.

उत्तर: B

व्याख्या:

- हाल ही में केंद्रीय मंत्रिमंडल ने **बहु-राज्य सहकारी समिति (MSCS) संशोधन विधेयक, 2022** को मंज़ूरी दे दी है, जिसका उद्देश्य **बहु-राज्य सहकारी समिति अधिनियम, 2002** में संशोधन करना है।
- **अंतर्राष्ट्रीय सहकारी गठबंधन (The International Cooperative Alliance-ICA)** सहकारी समिति को "संयुक्त स्वामित्त्व वाले और लोकतांत्रिक रूप से नियंत्रित उद्यम के माध्यम से अपनी आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक ज़रूरतों तथा आकांक्षाओं को पूरा करने के लिये स्वेच्छा से एकजुट व्यक्तियों के स्वायत्त संघ" के रूप में परिभाषित करता है।

- **संविधान (97वाँ संशोधन) अधिनियम, 2011** ने भारत में कार्यरत सहकारी समितियों के संबंध में एक नया **भाग IX B** जोड़ा।
  - **अत: कथन 2 सही नहीं है।**
- संविधान के **भाग III के तहत अनुच्छेद 19(1)(c)** में **"संघों और संघठनों"** के रूप में **"सहकारिता"** शब्द जोड़ा गया था।
  - यह सभी नागरिकों को **मौलिक अधिकार का दर्जा देकर सहकारी समितियों के गठन में सक्षम** बनाता है।
  - **अत: कथन 1 सही है।**
- राज्य के नीति निदेशक तत्त्वों (भाग IV) में **"सहकारी समितियों को प्रोत्साहन"** के संबंध में एक नया **अनुच्छेद 43B** जोड़ा गया था।
  - **अत: कथन 3 सही है।**

88.

उत्तर: D

व्याख्या:

- **पंचायती राज संस्था (PRI)** भारत में ग्रामीण स्थानीय स्वशासन की एक प्रणाली है।
  - स्थानीय स्वशासन ऐसे स्थानीय निकायों द्वारा स्थानीय मामलों का प्रबंधन है, जो स्थानीय लोगों द्वारा चुने गए हैं।
  - PRI को **73वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1992** के माध्यम से जमीनी स्तर पर लोकतंत्र का निर्माण करने के लिये संवैधानिक दर्जा प्रदान किया गया था और इसे देश में ग्रामीण विकास का कार्य सौंपा गया था। **अत: कथन 1 सही नहीं है।**
- पंचायतों से संबंधित संविधान के भाग IX के उपबंधों को अनुसूचित क्षेत्रों तक विस्तारित करने का उपबंध करने के लिये अनुसूचित क्षेत्रों में पंचायत विस्तार (पेसा/**PESA**) अधिनियम, 1996 अधिनियमित किया गया था। **अत: कथन 2 सही नहीं है।**
  - आंध्र प्रदेश, बिहार, गुजरात, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, उड़ीसा और राजस्थान राज्यों में पाँचवीं अनुसूची के तहत सूचीबद्ध अनुसूचित क्षेत्र।
  - नगालैंड, मेघालय और मिज़ोरम राज्य।
  - पश्चिम बंगाल राज्य में दार्जिलिंग ज़िले के पहाड़ी क्षेत्र जिसके लिये दार्जिलिंग **गोरखा हिल काउंसिल** मौजूद है।

89.

उत्तर: C

व्याख्या:

राजभाषा पर संसदीय समिति:

- राजभाषा पर संसदीय समिति का गठन **वर्ष 1976 में राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 4 के तहत किया गया था।**
- समिति का गठन और अध्यक्षता केंद्रीय गृह मंत्री करेता है और वर्ष 1963 के अधिनियम के प्रावधानों के अनुसार, 30 सदस्य (लोकसभा से 20 सांसद और राज्यसभा से 10 सांसद) हैं।
  - अन्य संसदीय पैनल संसद को अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करते हैं, **जबकि इसके विपरीत यह पैनल अपनी रिपोर्ट राष्ट्रपति को सौंपता है, जो "रिपोर्ट को संसद के प्रत्येक सदन के समक्ष रखेगा और सभी राज्य सरकारों को भेजेगा। अत: कथन 1 सही है।**

हिंदी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं को बढ़ावा देने हेतु सरकार के प्रयास:

- **त्रिभाषा सूत्र (कोठारी आयोग 1968):**
  - **पहली भाषा:** यह मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा होगी।
  - **दूसरी भाषा:** हिंदी भाषी राज्यों में यह अन्य आधुनिक भारतीय भाषाएँ या अंग्रेज़ी होगी। गैर-हिंदी भाषी राज्यों में यह हिंदी या अंग्रेज़ी होगी।
  - **तीसरी भाषा:** हिंदी भाषी राज्यों में यह अंग्रेज़ी या आधुनिक भारतीय भाषा होगी। गैर-हिंदी भाषी राज्य में यह अंग्रेज़ी या आधुनिक भारतीय भाषा होगी। **अत: कथन 2 सही है।**

90.

उत्तर: C

व्याख्या:

- अधिकरण **एक अर्द्ध-न्यायिक संस्था है** जिसे **प्रशासनिक या कर संबंधी विवादों को सुलझाने जैसी समस्याओं से निपटने के लिये स्थापित** किया गया है। इसके कई कार्य हैं जैसे विवादों का निपटारा करना, चुनाव लड़ने वाले पक्षों के बीच अधिकारों का निर्धारण करना, प्रशासनिक निर्णय लेना, मौजूदा प्रशासनिक निर्णय की समीक्षा करना आदि।
- **अधिकरण** मूल संविधान का हिस्सा नहीं थे, **इन्हें 42वें संशोधन अधिनियम, 1976** द्वारा भारतीय संविधान में शामिल किया गया था।
  - **अत: कथन 1 सही है।**
- **अनुच्छेद 323A** प्रशासनिक न्यायाधिकरणों से संबंधित है।
- **अनुच्छेद 323B** अन्य मामलों के लिये न्यायाधिकरणों से संबंधित है।
  - **अत: कथन 2 सही है।**

91.

उत्तर: C

व्याख्या:

- भारत में मृत्युदंड या मौत की सज़ा कानूनी सज़ा है।

- यह देश के मुख्य मूल दंड विधान, भारतीय दंड संहिता, 1860 के तहत कुछ अपराधों के लिये अनुमत है। **अत: कथन 1 सही है।**
- **जगमोहन सिंह बनाम उत्तर प्रदेश राज्य 1973:**
  - सर्वोच्च न्यायालय ने माना कि अनुच्छेद 21 के अनुसार जीवन से वंचित करना संवैधानिक रूप से स्वीकार्य है यदि यह कानून द्वारा स्थापित प्रक्रिया के अनुसार किया जाता है। **अत: कथन 2 सही है।**

92.

उत्तर: A

व्याख्या:

- **संविधान के अनुच्छेद 72 के तहत** राष्ट्रपति को किसी भी अपराध के लिये दोषी ठहराए गए किसी भी व्यक्ति की सज़ा को माफ करने, राहत देने, छूट देने या निलंबित करने, हटाने या कम करने की शक्ति होगी, जहाँ मृत्युदंड की सज़ा दी गई हो। **अत: कथन 1 सही है।**
- राष्ट्रपति **सरकार से स्वतंत्र होकर अपनी क्षमादान की शक्ति का प्रयोग नहीं कर सकता। अत: कथन 2 सही नहीं है।**
- कई मामलों में सर्वोच्च न्यायालय ने फैसला सुनाया है कि राष्ट्रपति को दया याचिका पर फैसला करते समय मंत्रिपरिषद की सलाह पर कार्य करना होता है। इस संदर्भ में 1980 में मारू राम बनाम भारत संघ और 1994 में धनंजय चटर्जी बनाम पश्चिम बंगाल राज्य मामले शामिल हैं।
- अनुच्छेद 161 के तहत भारत में राज्यपाल को भी क्षमादान की शक्ति प्राप्त है।
- **राष्ट्रपति और राज्यपाल की क्षमादान शक्तियों के बीच अंतर:**
- अनुच्छेद 72 के तहत राष्ट्रपति की क्षमादान शक्ति का दायरा अनुच्छेद 161 के तहत राज्यपाल की क्षमादान शक्ति से व्यापक है। **अत: कथन 3 सही है।**

93.

उत्तर: C

व्याख्या:

- एक पार्टी को एक राष्ट्रीय पार्टी के रूप में मान्यता दी जाती है यदि निम्नलिखित में से कोई भी शर्त पूरी हो जाती है:
  - यदि यह लोकसभा या विधानसभा के आम चुनाव में किन्हीं चार या अधिक राज्यों में डाले गए वैध मतों का 6% प्राप्त करता है और इसके अलावा यह किसी राज्य या राज्यों से लोकसभा में चार सीटें जीतता है, **अत: कथन 1 सही नहीं है।**
  - यदि वह आम चुनाव में लोकसभा में 2% सीटें जीतता है और ये उम्मीदवार तीन राज्यों से चुने जाते हैं, अत: कथन 2 सही नहीं है।
  - यदि इसे चार राज्यों में एक राज्य स्तरीय पार्टी के रूप में मान्यता प्राप्त है। **अत: कथन 3 सही है।**

94.

उत्तर: D

व्याख्या:

- **भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343(1)** में कहा गया है कि संघ की आधिकारिक भाषा देवनागरी लिपि में हिंदी होगी। **अत: कथन 1 सही नहीं है।**
- देवनागरी लिपि का उपयोग हिंदी, मराठी, नेपाली, पाली, कोंकणी, बोडो, सिंधी और मैथिली सहित 120 से अधिक भाषाओं और बोलियों के लिये किया जाता है, जिससे यह विश्व में सबसे व्यापक रूप से इस्तेमाल और अपनाई जाने वाली लेखन प्रणालियों में से एक है। देवनागरी में शास्त्रीय संस्कृत ग्रंथ भी लिखे गए हैं।
- देवनागरी लिपि की उत्पत्ति ब्राह्मी लिपि से हुई है। इसमें ध्वन्यात्मकता की ब्राह्मी प्रणाली है। **अत: कथन 2 सही नहीं है।**

95.

उत्तर: A

व्याख्या:

- **अनुच्छेद 29:** इस अनुच्छेद का उद्देश्य अल्पसंख्यक समूहों के हितों की रक्षा करना है।
  - **अनुच्छेद 29(1):** यह भारत में रहने वाले नागरिकों के किसी भी वर्ग को विशिष्ट संस्कृति, भाषा या लिपि के साथ अपनी संस्कृति, भाषा और लिपि के संरक्षण का अधिकार प्रदान करता है।
  - **अनुच्छेद 29(2):** राज्य द्वारा चलाए जा रहे शैक्षणिक संस्थानों में या उनसे सहायता प्राप्त करने वाले किसी भी व्यक्ति को केवल जाति, धर्म, जाति, भाषा, या उनमें से किसी के आधार पर प्रवेश से इनकार नहीं करेगा।
- **अनुच्छेद 30(1):** सभी धार्मिक और भाषाई अल्पसंख्यकों को अपनी पसंद के शिक्षण संस्थानों की स्थापना और प्रशासन का अधिकार है।
- **अनुच्छेद 30(2):** राज्य, शिक्षण संस्थानों को सहायता प्रदान करते समय, किसी भी शैक्षणिक संस्थान के खिलाफ इस आधार पर भेदभाव नहीं करेगा कि उसका प्रबंधन अल्पसंख्यक कर रहे हैं, चाहे वह किसी भी धर्म या भाषा पर आधारित हो। **अत: विकल्प A सही है।**
- **अनुच्छेद 27:** यह किसी विशेष धर्म के प्रचार के लिये करों के भुगतान के रूप में स्वतंत्रता से संबंधित है।
- **अनुच्छेद 28:** यह शैक्षणिक संस्थानों में धार्मिक शिक्षा या धार्मिक पूजा में शामिल होने की स्वतंत्रता से संबंधित है।

96.

उत्तर: D

व्याख्या:

- भारत का महान्यायवादी (AG) **संघ की कार्यकारिणी का एक अंग है।**
  - **महान्यायवादी देश का सर्वोच्च कानून अधिकारी होता है।**
  - **अत: कथन 1 सही है।**
- महान्यायवादी के पद का प्रावधान भारत के संविधान के **अनुच्छेद 76** में है।
  - **महान्यायवादी को हटाने की प्रक्रिया और आधार संविधान में नहीं बताए गए हैं। वह राष्ट्रपति के प्रसादपर्यंत पद धारण करता है** (राष्ट्रपति द्वारा किसी भी समय हटाया जा सकता है)।
  - **अत: कथन 2 सही है।**
- वोट देने के अधिकार के बिना उसे संसद के दोनों सदनों या उनकी संयुक्त बैठक और **संसद की किसी भी समिति की कार्यवाही में बोलने तथा भाग लेने का अधिकार है**, जिसका वह सदस्य नामित किया जाता है।
  - **अत: कथन 3 सही है।**
- **अत: विकल्प (D) सही है।**

97.

उत्तर: D

व्याख्या:

- 1949 में भारत की संविधान सभा द्वारा **हिंदी को आधिकारिक भाषा के रूप में अपनाने के दिन** को चिह्नित करने के लिये भारत में हर साल 14 सितंबर को **हिंदी दिवस या राष्ट्रीय हिंदी दिवस** मनाया जाता है। **अत: कथन 1 सही नहीं है।**
- भारत की आधिकारिक भाषा के रूप में हिंदी का उपयोग करने का निर्णय **26 जनवरी, 1950 को भारत के संविधान द्वारा वैध** किया गया था। भारत के पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने इस दिन हिंदी दिवस मनाने का फैसला किया था।
- **हिंदी शास्त्रीय भाषा नहीं है।**
  - शास्त्रीय भाषा एक स्वतंत्र साहित्यिक परंपरा वाली भाषा है जिसका प्राचीन लिखित साहित्य का निकाय होता है।
  - **अत: कथन 2 सही नहीं है।**

98.

उत्तर: B

व्याख्या:

- भारत का चुनाव आयोग भारत में संघ और राज्य चुनाव प्रक्रियाओं के प्रशासन के लिये ज़िम्मेदार एक स्वायत्त संवैधानिक प्राधिकरण है।
  - यह निकाय भारत में लोकसभा, राज्य सभा और राज्य विधानसभाओं, राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति के कार्यालयों के चुनावों का संचालन करता है।
  - **अत: कथन 1 सही नहीं है I**
- मूल रूप से आयोग में केवल एक चुनाव आयुक्त था लेकिन चुनाव आयुक्त संशोधन अधिनियम 1989 के बाद, इसे एक बहु-सदस्यीय निकाय बना दिया गया है।
  - आयोग में एक मुख्य चुनाव आयुक्त और दो चुनाव आयुक्त होते हैं।
  - **अत: कथन 2 सही है I**
- मुख्य चुनाव आयुक्त को सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश की तरह हटाने की प्रक्रिया के माध्यम से ही पद से हटाया जा सकता है
  - उच्च न्यायालयों और सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशों, CEC, नियंत्रक और महालेखा परीक्षक (सीएजी) को 'सिद्ध दुर्व्यवहार या अक्षमता' के आधार पर संसद द्वारा अपनाए गए प्रस्ताव के माध्यम से पद से हटाया जा सकता है।
  - **अत: कथन 3 सही हैI**

99.

उत्तर: B

व्याख्या:

- 1977 में, एमयू बेग को तत्कालीन वरिष्ठतम न्यायाधीश के बजाय भारत के मुख्य न्यायाधीश (CJI) के रूप में नियुक्त किया गया था। सरकार के इस विवेक को सर्वोच्च न्यायालय ने **द्वितीय न्यायाधीश मामले (1993)** में रोक दिया था, जिसमें SC ने फैसला सुनाया था कि केवल **सर्वोच्च न्यायलय के सबसे वरिष्ठ न्यायाधीश को ही भारत के मुख्य न्यायाधीश (CJI) के लिये नियुक्त किया जाना चाहिये। अत: कथन 1 सही नहीं है।**
- भारत के मुख्य न्यायाधीश और सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा संविधान के अनुच्छेद 124 के खंड (2) के तहत की जाती है।
- सर्वोच्च न्यायालय के चार वरिष्ठतम न्यायाधीशों के कॉलेजियम के परामर्श से सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश की नियुक्ति के लिये भारत के मुख्य न्यायाधीश की राय को शामिल किया जाना चाहिये।
- तृतीय न्यायाधीशों के मामले (1998) में, न्यायालय ने कहा कि CJI द्वारा अपनाई जाने वाली परामर्श प्रक्रिया के लिये 'एक से अधिक न्यायाधीशों के परामर्श' की आवश्यकता होती है। भारत के मुख्य न्यायाधीश की एकमात्र सलाह के आधार पर परामर्श प्रक्रिया को पूर्ण नहीं समझा जाना चाहिये। उसे सर्वोच्च न्यायालय के चार वरिष्ठतम न्यायाधीशों के एक कॉलेजियम से परामर्श करना चाहिये और यदि दो न्यायाधीश भी विपक्ष में राय देते हैं, ऐसी स्थिति में उसे सरकार को सिफारिश नहीं भेजनी चाहिये। **अत: कथन 2 सही है।**

- वर्ष 2014 के 99वें संवैधानिक संशोधन अधिनियम और राष्ट्रीय न्यायिक नियुक्ति आयोग अधिनियम ने राष्ट्रीय न्यायिक नियुक्ति आयोग (NJAC) नामक एक नए निकाय के साथ सर्वोच्च न्यायालय और उच्च न्यायालयों में न्यायाधीशों की नियुक्ति की कॉलेजियम प्रणाली को बदल दिया। हालाँकि वर्ष 2015 में, सर्वोच्च न्यायालय ने 99वें संवैधानिक संशोधन के साथ-साथ NJAC अधिनियम को असंवैधानिक और शून्य घोषित कर दिया। यह निर्णय सर्वोच्च न्यायालय ने चतुर्थ न्यायाधीशों के मामले (2015) में दिया।

100.

उत्तर: D

व्याख्या:

- मौलिक कर्तव्यों का विचार रूस के संविधान (तत्कालीन सोवियत संघ) से प्रेरित है। **अत: कथन 1 सही नहीं है।**
- इन्हें **42वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1976 द्वारा स्वर्ण सिंह समिति की** सिफारिशों पर संविधान के भाग IV-A में शामिल किया गया था। **अत: कथन 2 सही है।**
  - मूल रूप से मौलिक कर्त्तव्यों की संख्या 10 थी, बाद में 86वें संविधान संशोधन अधिनियम, 2002 के माध्यम से एक और कर्तव्य जोड़ा गया था।
- सभी ग्यारह कर्तव्य संविधान के अनुच्छेद 51-ए (भाग- IV-ए) में सूचीबद्ध हैं।
- राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांतों की तरह, **मौलिक कर्तव्य भी प्रकृति में गैर-न्यायिक हैं। अत: कथन 3 सही नहीं है।**

101.

उत्तर: B

व्याख्या:

- नगर निगम शहरी स्थानीय सरकार है जो 10 लाख से अधिक लोगों की आबादी वाले किसी भी महानगर के विकास के लिये ज़िम्मेदार है।
- भारत में पहला नगर निगम वर्ष 1688 में मद्रास में स्थापित किया गया तथा उसके बाद वर्ष 1726 में बॉम्बे और कलकत्ता में नगर निगम स्थापित किये गए।
  - **अत: कथन 1 सही नहीं है।**
- 74वें संशोधन अधिनियम, 1992 ने संविधान में एक नया भाग IX-A सम्मिलित किया है, जो नगर पालिकाओं और नगर पालिकाओं के प्रशासन से संबंधित है।
  - **अत: कथन 2 सही है।**

102.

उत्तर: D

व्याख्या:

- **संसद में बोलने की स्वतंत्रता:**
  - अनुच्छेद 19 (2) के तहत एक नागरिक को दी गई वाक् और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता संसद के प्रत्येक सदस्य को प्रदान की गई भाषण और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता से अलग है।
    - भारतीय संविधान के अनुच्छेद 105(1) के तहत इसकी गारंटी दी गई है लेकिन स्वतंत्रता उन नियमों और आदेशों के अधीन है जो संसद की कार्यवाही को विनियमित करते हैं। **अत: कथन 1 सही नहीं है।**
  - **भारतीय संविधान ब्रिटिश संविधान से संसदीय विशेषाधिकारों से** ली गई है। **अत: कथन 2 सही नहीं है।**
    - अन्य ली गई पहलुओं में संसदीय सरकार, कानून का शासन, विधायी प्रक्रिया, एकल नागरिकता, कैबिनेट प्रणाली, विशेषाधिकार रिट और द्विसदनीयता शामिल हैं।

103.

उत्तर: C

व्याख्या:

- वर्ष 2017 में सर्वोच्च न्यायालय के नौ-न्यायाधीशों की **बेंच ने जस्टिस के.एस. पुट्टस्वामी बनाम भारत संघ मामले** में सर्वसम्मति से पुष्टि की कि निजता का अधिकार भारतीय संविधान के तहत एक मौलिक अधिकार है। **अत: कथन 1 सही है।**
- निजता का अधिकार, अनुच्छेद 21 के तहत **जीवन का अधिकार** और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के आंतरिक भाग के रूप में तथा भारतीय संविधान के भाग III द्वारा गारंटीकृत स्वतंत्रता के एक भाग के रूप में संरक्षित है। **अत: कथन 2 सही है।**
- पुट्टस्वामी के फैसले में कहा गया है कि निजता का अधिकार भारत के संविधान के अनुच्छेद 14, 19 और 21 के तहत एक मौलिक संवैधानिक अधिकार के रूप में संरक्षित है।

104.

उत्तर: D

व्याख्या:

वन्य जीवन के लिये संवैधानिक प्रावधान:

- 42वाँ संविधान संशोधन अधिनियम, 1976 के द्वारा, वन एवं वन्य जीवों तथा पक्षियों के संरक्षण को राज्य सूची से हटाकर 'समवर्ती सूची' में स्थानांतरित कर दिया गया था।
  - **अत: कथन 1 सही है।**

- संविधान के अनुच्छेद 51 A (g) के अनुसार, वनों और वन्यजीवों सहित प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा और सुधार करना प्रत्येक नागरिक का मौलिक कर्तव्य है।
  - **अतः कथन 2 सही है।**

105.

उत्तर: C

व्याख्या:

- निदेशक तत्त्व राज्य के शासन में मूलभूत हैं। अर्थात् कानून बनाते समय राज्य द्वारा इन्हें लागू करने की अपेक्षा की जाती है।
- **पृष्ठभूमि:** राज्य के नीति निदेशक सिद्धांतों (डीपीएसपी) की अवधारणा का स्रोत स्पेनिश संविधान है जहाँ से यह आयरिश संविधान में आया था।
  - DPSP की अवधारणा आयरिश संविधान के अनुच्छेद 45 से आई है।
  - **अतः कथन 1 सही है।**
- मौलिक अधिकारों (FRs) के विपरीत DPSP का दायरा असीम है और यह एक नागरिक के अधिकारों की रक्षा करता है और वृहद स्तर पर कार्य करता है।
  - DPSP में वे सभी आदर्श शामिल हैं जिनका पालन राज्य को देश के लिये नीतियाँ और कानून बनाते समय ध्यान में रखना चाहिये।
  - **अतः कथन 2 सही है।**
- **अतः विकल्प C सही है।**

106.

उत्तर: C

व्याख्या:

- पंचायती राज संस्थान (PRI) भारत में ग्रामीण स्थानीय स्वशासन की प्रणाली है।
- स्थानीय स्वशासन ऐसे स्थानीय निकायों द्वारा स्थानीय मामलों का प्रबंधन है जो स्थानीय लोगों द्वारा चुने गए हैं।
- PRI को 73वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1992 के माध्यम से ज़मीनी स्तर पर लोकतंत्र के निर्माण के लिये संवैधानिक बनाया गया था और इसे देश में ग्रामीण विकास का कार्य सौंपा गया था। **अतः कथन 1 सही है।**
- **कौटिल्य के अर्थशास्त्र में ग्राम पंचायतों का उल्लेख प्राचीन काल में मिलता है।**
  - शहर को 'पुर' कहा जाता था और इसका प्रमुख नागरिक था।
  - स्थानीय निकाय किसी भी शाही हस्तक्षेप से मुक्त थे।
  - मौर्य और मौर्योत्तर काल के दौरान भी बुजुर्गों की परिषद की सहायता से मुखिया गाँव के जीवन में प्रमुख भूमिका निभाता रहा है। **अतः कथन 2 सही है।**

अतः विकल्प C सही है।

107.

उत्तर: C

व्याख्या:

- राज्यसभा की प्रक्रिया के सामान्य नियमों के नियम 255 के तहत सदन का पीठासीन अधिकारी संसद सदस्य के निलंबन का आह्वान कर सकता है। **अतः कथन 1 सही है।**
- सभापति इस नियम के अनुसार किसी भी सदस्य को जिसका आचरण उसकी राय में सही नहीं था या उच्छृंखल था निर्देश दे सकता है।
- संविधान का अनुच्छेद 122 कहता है कि संसदीय कार्यवाही पर अदालत के समक्ष सवाल नहीं उठाया जा सकता है। **अतः कथन 2 सही है।**
  - हालाँकि अदालतों ने विधायिका के प्रक्रियात्मक कामकाज में हस्तक्षेप किया है, जैसे-
    - महाराष्ट्र विधानसभा ने अपने 2021 के मानसून सत्र में 12 भाजपा विधायकों को एक साल के लिये निलंबित करने का प्रस्ताव पारित किया।
    - यह मामला **सर्वोच्च न्यायालय** के सामने आया, जिसने माना कि मानसून सत्र के शेष समय के बाद भी प्रस्ताव कानून में अप्रभावी था।

108.

उत्तर: C

व्याख्या:

- भारत निर्वाचन आयोग (ECI) एक संवैधानिक निकाय है, जिसकी परिकल्पना भारतीय संविधान में निहित समानता, निष्पक्षता, स्वतंत्रता के मूल्यों और चुनावी प्रक्रिया के अधीक्षण, निर्देशन और नियंत्रण में विधि के शासन को बनाए रखने के लिये की गई है।
- **संवैधानिक प्रावधान:**
  - भारतीय संविधान का भाग XV चुनावों से संबंधित है और यह ECI की स्थापना का प्रावधान करता है। **अतः कथन 1 सही है।**
  - संविधान का अनुच्छेद 324 से 329 आयोग और सदस्यों की शक्तियों, कार्य, कार्यकाल, पात्रता आदि से संबंधित है।
- ECI के सदस्यों की नियुक्ति भारत के राष्ट्रपति द्वारा प्रधानमंत्री की सिफारिशों के आधार पर की जाती है।
  - हालाँकि अनुच्छेद 324(2) में संसद को चुनाव आयुक्तों (ECs) की नियुक्ति के संबंध में कानून बनाने का अधिकार प्रदान किया गया है। **अतः कथन 2 सही है।**

109.

उत्तर: D

व्याख्या:

- पारिवार न्यायालय अधिनियम, 1984 को पारिवारिक न्यायालयों की स्थापना के लिये अधिनियमित किया गया था ताकि सुलह को बढ़ावा दिया जा सके और विवाह तथा पारिवारिक मामलों एवं संबंधित विवादों का त्वरित निपटारा सुनिश्चित किया जा सके। **अत: कथन 1 सही है।**
- राज्य सरकार, उच्च न्यायालय की सहमति से एक या अधिक व्यक्तियों को परिवार न्यायालय के न्यायाधीश के रूप में नियुक्त कर सकती है। **अत: कथन 2 सही है।**
- 26 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में स्थापित और कार्यरत कुल 715 परिवार न्यायालय हैं, जिनमें से हिमाचल प्रदेश राज्य में तीन परिवार न्यायालय और नगालैंड राज्य में दो परिवार न्यायालय शामिल हैं।
  - हालाँकि हिमाचल और नगालैंड के लिये इन राज्यों में उक्त अधिनियम को लागू करने के लिये केंद्र सरकार द्वारा अधिसूचना जारी नहीं की गई थी।
- हिमाचल प्रदेश राज्य में पारिवार न्यायालयों के अधिकार क्षेत्र की कमी के मुद्दे को हिमाचल प्रदेश के उच्च न्यायालय के समक्ष चुनौती दी गई है।
  - यह कहा गया था कि चूँकि केंद्र सरकार ने हिमाचल प्रदेश राज्य में परिवार न्यायालयों के अधिकार क्षेत्र का विस्तार करने के लिये कोई अधिसूचना जारी नहीं की है, ऐसे न्यायालय अधिकार क्षेत्र के बिना कार्य कर रहे हैं और उक्त अधिनियम के तहत किया गया कोई भी कार्य या की गई कोई भी कार्रवाई शुरू से ही शून्य प्रतीत होती है। (स्थापना का कोई कानूनी प्रभाव न होना)।
- नगालैंड में पारिवारिक अदालतें भी 2008 से बिना किसी कानूनी अधिकार के चल रही थीं।
- लोकसभा ने परिवार न्यायालय (संशोधन) विधेयक, 2022 पारित किया है जो हिमाचल प्रदेश और नगालैंड में पारिवारिक न्यायालय स्थापित करने के लिये परिवार न्यायालय अधिनियम, 1984 में संशोधन करना चाहता है।

110.

उत्तर: C

व्याख्या:

- राष्ट्रपति भारत का प्रमुख और पहला नागरिक होता है।
- **चुनाव:** राष्ट्रपति का चुनाव एक निर्वाचक मंडल द्वारा किया जाता है जिसमें संसद के दोनों सदनों के सांसद और राज्यों एवं दिल्ली तथा पुद्दुचेरी के विधायक (लेकिन राज्यसभा, लोकसभा व विधानसभाओं के मनोनीत सदस्य और परिषदों के सदस्य नहीं) शामिल होते हैं।
- **संवैधानिक प्रावधान:** अनुच्छेद 54 - 62।
- हाल ही में **द्रौपदी मुर्मू भारत की 15वीं राष्ट्रपति** चुनी गई हैं।
- निम्नलिखित कालानुक्रमिक क्रम पूर्व राष्ट्रपतियों का प्रतिनिधित्व करता है। **अत: विकल्प C सही है।**

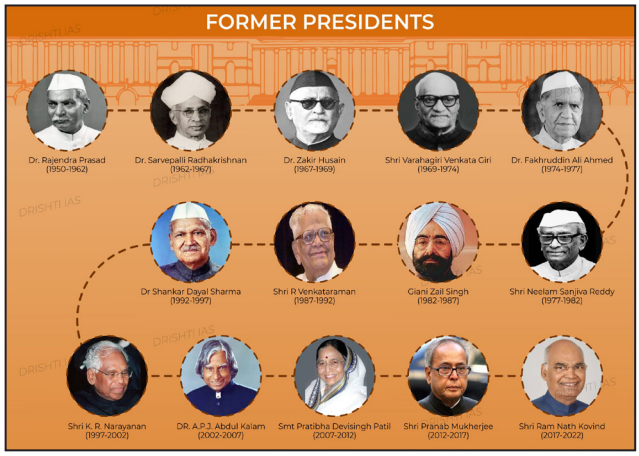

111.

उत्तर: A

व्याख्या:

- संसदीय समितियों में **दोनों सदनों (लोकसभा एवं राज्यसभा)** के सदस्यों को मोटे तौर पर संबंधित सदनों **में राजनीतिक दलों की संख्या के अनुपात में शामिल किया जाता** है। **अत: कथन 1 सही नहीं है।**
- तीन वित्तीय समितियाँ **लोक लेखा समिति, प्राक्कलन समिति और सार्वजनिक उपक्रम समिति** हैं। **अत: कथन 2 सही है।**

112.

उत्तर: C

व्याख्या:

- हाल ही में भारत सरकार ने घोषणा की है कि राष्ट्रीय ध्वज ''जहाँ ध्वज खुले में प्रदर्शित किया जाता है या किसी नागरिक के घर पर प्रदर्शित किया जाता है, दिन-रात फहराया जा सकता है।''
- ऐसा माना जाता है कि **पहला राष्ट्रीय ध्वज, जिसमें लाल, पीले और हरे रंग की तीन क्षैतिज पट्टियाँ** शामिल थीं, 7 अगस्त. 1906 को कलकत्ता (अब कोलकाता) में लोअर सर्कुलर रोड के पास पारसी बागान स्क्वायर पर फहराया गया था। **अत: कथन 1 सही है।**
- वर्ष 1921 में स्वतंत्रता सेनानी पिंगली वेंकय्या ने महात्मा गांधी से मुलाकात की और ध्वज के एक मूल डिज़ाइन का प्रस्ताव रखा, जिसमें दो लाल और हरे रंग की पट्टियाँ शामिल थीं।
- कई बदलावों से गुज़रने के बाद **वर्ष 1931 में कराची में कॉन्ग्रेस कमेटी की बैठक में तिरंगे को हमारे राष्ट्रीय ध्वज** के रूप में अपनाया गया था। **अत: कथन 2 सही है।**

113.

उत्तर: B

व्याख्या:

- **अनुच्छेद 244** के तहत संविधान की छठी अनुसूची स्वायत्त प्रशासनिक प्रभागों के गठन की शक्ति प्रदान करती है, **स्वायत्त ज़िला परिषद (ADC)** के पास एक राज्य के भीतर कुछ विधायी, न्यायिक और प्रशासनिक स्वायत्तता है।
- छठी अनुसूची में चार उत्तर-पूर्वी राज्यों **असम, मेघालय, त्रिपुरा और मिज़ोरम** में जनजातीय क्षेत्रों के प्रशासन के लिये विशेष प्रावधान हैं। **अत: कथन 1 सही नहीं है।**
- इन चार राज्यों में आदिवासी क्षेत्रों को स्वायत्त ज़िलों के रूप में गठित किया गया है। राज्यपाल को स्वायत्त ज़िलों को व्यवस्थित और पुनर्गठित करने का अधिकार है। **अत: कथन 2 सही है।**

114.

उत्तर: B

व्याख्या:

- अनुसूचित अपराधों के मुकदमे के लिये केंद्र सरकार NIA अधिनियम, 2008 की धारा 11 और 22 के तहत एक या एक से अधिक विशेष न्यायालयों का गठन कर सकती है।
- **संरचना:**
  - विशेष न्यायालय की अध्यक्षता न्यायाधीश द्वारा की जाती है जिसकी नियुक्ति केंद्र सरकार द्वारा उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश की सिफारिश पर की जाती है। **अत: कथन 1 सही नहीं है।**
  - यदि आवश्यक हो तो केंद्र सरकार विशेष न्यायालय में एक या एक से अधिक अतिरिक्त न्यायाधीशों की नियुक्ति भी उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश की सिफारिश पर कर सकती है।
- **विशेष न्यायालयों का अधिकार क्षेत्र:**
  - **आपराधिक प्रक्रिया संहिता, 1973 के तहत सत्र न्यायालयों को प्राप्त सभी अधिकार विशेष न्यायालयों को भी प्राप्त हैं। अत: कथन 2 सही है।**
  - किसी विशेष न्यायालय के अधिकार क्षेत्र पर किसी भी प्रश्न की स्थिति में इसे केंद्र सरकार को संदर्भित किया जाएगा जिसका निर्णय अंतिम होगा।
  - सर्वोच्च न्यायालय किसी विशेष न्यायालय के समक्ष लंबित किसी मामले को उस राज्य के किसी अन्य विशेष न्यायालय को अथवा किसी असाधारण मामले में जहाँ शांतिपूर्ण, न्यायपूर्ण, निष्पक्ष और त्वरित सुनवाई संभव नहीं हो, किसी अन्य राज्य के विशेष न्यायालय को हस्तांतरित कर सकता है।
  - इसी प्रकार उच्च न्यायालय के पास यह शक्ति है कि वह किसी विशेष न्यायालय के समक्ष लंबित किसी मामले को उस राज्य के किसी अन्य विशेष न्यायालय को हस्तांतरित कर सकता है।

115.

उत्तर: D

व्याख्या:

- अनुच्छेद 174 के तहत राज्यपाल सदन को एक समय और स्थान पर बुलाएगा, जैसा कि वह उचित समझे।
  - अनुच्छेद 174 (2) (ए) में कहा गया है कि एक राज्यपाल "समय-समय पर" सदन का सत्रावसान कर सकता है तथा 174 (2) (बी) उसे विधानसभा को भंग करने की अनुमति देता है। **अत: कथन 1 सही है।**
  - अनुच्छेद 163 कहता है कि राज्यपाल मंत्रिपरिषद की सहायता और सलाह के साथ अपने कार्यों का उपयोग करेगा।
- आमतौर पर दो अनुच्छेदों 174 और 163 को सदन को बुलाने, सत्रावसान करने या भंग करने में राज्यपाल की शक्तियों को रेखांकित करने के लिये उपयोग किया जाता है।
  - अनुच्छेद 175 (2) के अनुसार, राज्यपाल सदन का सत्र आहूत कर सकता है और यह साबित करने के लिये फ्लोर टेस्ट का आह्वान कर सकता है कि सरकार के पास विधायकों की पर्याप्त संख्या है या नहीं। **अत: कथन 3 सही है।**
  - यह **बहुमत के परीक्षण के लिये** उपयोग किया जाने वाला शब्द है। यदि किसी राज्य के मुख्यमंत्री (CM) के खिलाफ संदेह है, तो **उसे सदन में बहुमत साबित करने के लिये कहा जा सकता है।**
- राज्य विधान सभा के अध्यक्ष का चुनाव सत्तारूढ़ राज्य सरकार द्वारा किया जाता है **न कि राज्यपाल द्वारा। अत: कथन 2 सही नहीं है।**

116.

उत्तर: D

व्याख्या:

- राष्ट्रपति और राज्यपाल दोनों को संविधान द्वारा **क्षमा की संप्रभु शक्ति** प्रदान की गई है। **अत: कथन 2 सही नहीं है**
- **अनुच्छेद 72** के तहत राष्ट्रपति किसी भी व्यक्ति की सज़ा को क्षमा, लघुकरण, विराम या प्रविलंबन कर सकता है या निलंबित या कम कर सकता है।
  - यह सभी मामलों में किसी भी अपराध के लिये दोषी ठहराए गए किसी भी व्यक्ति हेतु किया जा सकता है, जहाँ:

- सज़ा कोर्ट-मार्शल द्वारा हो, उन सभी मामलों में जहाँ सज़ा केंद्र सरकार की कार्यकारी शक्ति से संबंधित किसी भी कानून के तहत अपराध के संदर्भ में है और मौत की सज़ा के सभी मामलों में। **अत: कथन 3 सही है।**

- अनुच्छेद 161 के तहत **राज्यपाल सज़ा को क्षमा, प्रविलंबन, विराम या परिहार दे सकता है, या सज़ा को निलंबित, हटा या कम कर सकता** है।
  - यह राज्य की कार्यकारी शक्ति के अंतर्गत आने वाले मामले में किसी भी कानून के तहत दोषी ठहराए गए किसी भी व्यक्ति के लिये किया जा सकता है। **अत: कथन 1 सही नहीं है।**

117.

उत्तर: A

व्याख्या:

- क्षेत्रीय परिषदें वैधानिक (संवैधानिक नहीं) निकाय हैं। ये संसद के एक अधिनियम, यानी राज्य पुनर्गठन अधिनियम 1956 द्वारा स्थापित किये गए हैं।
  - इस अधिनियम ने देश को पाँच क्षेत्रों- उत्तरी, मध्य, पूर्वी, पश्चिमी और दक्षिणी में विभाजित किया तथा प्रत्येक क्षेत्र के लिये एक क्षेत्रीय परिषद प्रदान की। **अत: कथन 1 सही है।**
- **संगठनात्मक ढाँचा**
  - अध्यक्ष: केंद्रीय गृह मंत्री इन सभी परिषदों के अध्यक्ष होता है।
  - उपाध्यक्ष– प्रत्येक क्षेत्रीय परिषद में शामिल किये गए राज्यों के मुख्यमंत्री, रोटेशन से एक समय में एक वर्ष की अवधि के लिये उस अंचल के आंचलिक परिषद के उपाध्यक्ष के रूप में कार्य करते हैं। **अत: कथन 2 सही है।**
  - **सदस्य:** मुख्यमंत्री और प्रत्येक राज्य से राज्यपाल द्वारा यथा नामित दो अन्य मंत्री और परिषद में शामिल किये गए संघ राज्य क्षेत्रों से दो सदस्य।
- राज्य पुनर्गठन अधिनियम की धारा 17(1) के अनुसार, प्रत्येक क्षेत्रीय परिषद की बैठक ऐसे समय पर होगी जब परिषद का अध्यक्ष इस ओर से नियुक्त करे। **अत: कथन 3 सही नहीं है।**

118.

उत्तर: B

व्याख्या:

- RPA (लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम), 1951 के अनुसार, एक उम्मीदवार अधिकतम दो निर्वाचन क्षेत्रों से चुनाव लड़ सकता है। **अत: कथन 1 सही नहीं है।**
- एक निर्वाचन क्षेत्र का त्याग करने के बाद, आम चुनाव के तुरंत बाद एक उपचुनाव स्वत: शुरू हो जाता है। उदाहरण के लिये, वर्ष 2014 में, प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी के वडोदरा और वाराणसी दोनों सीटें जीतने के बाद, उन्होंने वडोदरा कीअपनी सीट छोड़ दी, जिससे वहाँ उपचुनाव हुआ। **अत: कथन 2 सही है। अत: विकल्प B सही है।**
- RPA की धारा 70 उम्मीदवारों को लोकसभा/राज्य विधानसभा में दो निर्वाचन क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करने से रोकती है। **अत: कथन 3 सही नहीं है।**
- विधि और न्याय मंत्रालय के पास उन सीटों को सीमित करने की शक्ति है, जहाँ से एक उम्मीदवार चुनाव लड़ सकता है। मुख्य चुनाव आयुक्त इस संबंध में केवल मंत्रालय को सलाह दे सकते हैं। **अत: कथन 4 सही नहीं है।**

119.

उत्तर: A

व्याख्या:

- संविधान के **अनुच्छेद 324** में प्रावधान है कि संसद, राज्य विधानसभाओं, भारत के राष्ट्रपति के कार्यालय और भारत के उपराष्ट्रपति के कार्यालय के चुनावों के अधीक्षण, निर्देशन और नियंत्रण की शक्ति चुनाव आयोग में निहित होगी।
  - आयोग के साथ उक्त धारा के तहत पंजीकरण की मांग करने वाली पार्टी को भारतीय संविधान के अनुच्छेद 324 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए आयोग द्वारा निर्धारित दिशा-निर्देशों के अनुसार इसके गठन की तारीख के बाद 30 दिनों की अवधि के भीतर आयोग को एक आवेदन प्रस्तुत करना होगा।
- अनुच्छेद 320 लोक सेवा आयोगों के कार्यों को बताता है। अनुच्छेद 323A संसद द्वारा बनाए गए कानून द्वारा प्रशासनिक न्यायाधिकरणों की स्थापना का प्रावधान करता है। अनुच्छेद 239 केंद्र शासित प्रदेशों के प्रशासन से संबंधित है।
- **अत: विकल्प A सही है।**

120.

उत्तर: D

व्याख्या:

- संसद के ऐसे सदस्य जो केंद्रीय मंत्रिमंडल में मंत्री (Member of Parliament-MP) नहीं हैं, को एक निजी सदस्य के रूप में जाना जाता है। **अत: कथन 1 सही है।**
- इसका प्रारूप तैयार करने की ज़िम्मेदारी संबंधित सदस्य की होती है। सदन में इसे पेश करने के लिये एक महीने के नोटिस की आवश्यकता होती है। **अत: कथन 2 सही है।**
- सरकारी विधेयक/सार्वजनिक विधेयकों को किसी भी दिन पेश किया जा सकता है और उन पर चर्चा की जा सकती है, निजी सदस्यों के

विधेयकों को केवल शुक्रवार को पेश किया जा सकता है तथा उन पर चर्चा की जा सकती है। **अत: कथन 3 सही है।**

- कई विधेयकों के मामले में एक मतपत्र प्रणाली का उपयोग विधेयकों को पेश करने के क्रम को तय करने के लिये किया जाता है।
- निजी सदस्यों के विधेयकों और प्रस्तावों पर संसदीय समिति ऐसे सभी विधेयकों को देखती है और उनकी तात्कालिकता एवं महत्त्व के आधार पर उनका वर्गीकरण करती है।
- सदन द्वारा इसकी अस्वीकृति का सरकार में संसदीय विश्वास या उसके इस्तीफे पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
- चर्चा के समापन पर विधेयक का संचालन करने वाला सदस्य या तो संबंधित मंत्री के अनुरोध पर इसे वापस ले सकता है या वह इसके पारित होने के साथ आगे बढ़ने का विकल्प चुन सकता है।

121.

उत्तर: B

व्याख्या:

- भारतीय संविधान के अनुच्छेद 312 के अनुसार संसद को संघ और राज्यों के लिये एक या एक से अधिक अखिल भारतीय सेवाओं (एक अखिल भारतीय न्यायिक सेवा सहित) के गठन का अधिकार है। **अत: कथन 1 सही है।**
- अखिल भारतीय सेवाओं (AIS) में भारत की तीन सिविल सेवाएँ शामिल हैं:
  - भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS)
  - भारतीय पुलिस सेवा (IPS)
  - भारतीय वन सेवा (IFoS)
- **अखिल भारतीय सेवाओं की संघीय प्रकृति:** अखिल भारतीय सेवा अधिकारियों की भर्ती केंद्र सरकार द्वारा (UPSC के माध्यम से) की जाती है और उनकी सेवाओं को विभिन्न राज्य संवर्गों के तहत आवंटित किया जाता है। **अत: कथन 2 सही है।**
  - उनकी जवाबदेही राज्य और केंद्र दोनों के अधीन सेवा करने की होती है।
  - हालाँकि अखिल भारतीय सेवाओं की कैडर नियंत्रण अथॉरिटी केंद्र सरकार के पास है।
    - DoPT भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS) के धिकारियों की कैडर कंट्रोलिंग अथॉरिटी है।
    - भारतीय पुलिस सेवा और भारतीय वन सेवा अधिकारियों (IFoS) की प्रतिनियुक्ति के लिये कैडर कंट्रोलिंग अथॉरिटी क्रमश: गृह मंत्रालय (MHA) और पर्यावरण मंत्रालय के पास हैं। **अत: कथन 3 सही नहीं है।**

122.

उत्तर: D

व्याख्या:

- सर्वोच्च न्यायालय (अनुच्छेद 32 के तहत) एवं उच्च न्यायालय (अनुच्छेद 226 के तहत) रिट जारी कर सकता है।
  - अनुच्छेद 226 उच्च न्यायालयों को नागरिकों के मौलिक अधिकारों के प्रवर्तन अथवा 'किसी अन्य उद्देश्य' के लिये सभी प्रकार की रिट जारी करने का अधिकार प्रदान करता है।
  - यहाँ 'किसी अन्य उद्देश्य' का अर्थ किसी सामान्य कानूनी अधिकार के प्रवर्तन से है। इस प्रकार रिट को लेकर उच्च न्यायालय का अधिकार क्षेत्र सर्वोच्च न्यायालय की तुलना में काफी व्यापक है।
  - जहाँ एक ओर सर्वोच्च न्यायालय केवल मौलिक अधिकारों के हनन की स्थिति में ही रिट जारी कर सकता है, वहीं उच्च न्यायालय को किसी अन्य उद्देश्य के लिये भी रिट जारी करने का अधिकार है।
- **अत: विकल्प D सही है।**

123.

उत्तर: C

व्याख्या:

राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (NCRB)

- NCRB की स्थापना केंद्रीय गृह मंत्रालय के अंतर्गत वर्ष 1986 में इस उद्देश्य से की गई थी कि भारतीय पुलिस में कानून व्यवस्था को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिये पुलिस तंत्र को सूचना प्रौद्योगिकी समाधान और आपराधिक गुप्त सूचनाएँ प्रदान कर समर्थ बनाया जा सके। **अत: कथन 1 सही है।**
- यह राष्ट्रीय पुलिस आयोग (1977-1981) और गृह मंत्रालय के कार्य बल (1985) की सिफारिशों के आधार पर स्थापित किया गया था। **अत: कथन 2 सही नहीं है।**

कार्य:

- ब्यूरो को यौन अपराधियों के राष्ट्रीय डेटाबेस (National Database of Sexual Offenders-NDSO) को बनाए रखने और इन्हें नियमित आधार पर राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के साथ साझा करने का कार्य सौंपा गया है।
- NCRB को 'ऑनलाइन साइबर-अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल' के तकनीकी और परिचालन कार्यों के प्रबंधन हेतु केंद्रीय नोडल एजेंसी के रूप में भी नामित किया गया है, जिसके माध्यम से कोई भी

नागरिक बाल अश्लीलता या बलात्कार/सामूहिक बलात्कार से संबंधित अपराध के सबूत के रूप में वीडियो क्लिप अपलोड कर शिकायत दर्ज कर सकता है।

- **अंतर-प्रचलित आपराधिक न्याय प्रणाली परियोजना** (Inter-operable Criminal Justice System-ICJS) के क्रियान्वयन की ज़िम्मेदारी भी NCRB को दी गई है। **अत: कथन 3 सही है।**
  - ICJS देश में आपराधिक न्याय के वितरण के लिये उपयोग की जाने वाली मुख्य आईटी प्रणाली के एकीकरण को सक्षम करने के लिये एक राष्ट्रीय मंच है।

124.

उत्तर: A

व्याख्या:

भारत में इन खेलों की वैधता

- **कानूनी क्षेत्राधिकार:** राज्य विधायका को भारत के संविधान की सातवीं अनुसूची की सूची II (राज्य सूची) की प्रविष्टि संख्या 34 के तहत सट्टेबाज़ी और जुए से संबंधित कानून बनाने की विशेष शक्ति दी गई है। **अत: कथन 1 सही है।**
- **भारत में खेलों के प्रकार:** अधिकांश भारतीय राज्य 'कौशल के खेल' और 'मौके संबंधी खेल' के बीच कानून में अंतर के आधार पर गेमिंग को नियंत्रित करते हैं।
- **खेल के प्रकार का परीक्षण:** 'प्रमुख तत्त्व' परीक्षण का उपयोग यह निर्धारित करने के लिये किया जाता है कि खेल के परिणाम को निर्धारित करने में 'मौका' या 'कौशल' प्रमुख तत्त्व है या नहीं।
  - इस 'प्रमुख तत्त्व' को इस बात की जाँच के आधार पर निर्धारित किया जा सकता है कि किसी खिलाड़ी के बेहतर ज्ञान, प्रशिक्षण, अनुभव, विशेषज्ञता या ध्यान जैसे कारकों का खेल के परिणाम पर कोई प्रभाव पड़ता है या नहीं।
- अनुमत खेलों के प्रकार की स्थिति: 'अवसर आधारित खेल' (Game Of Chance) के परिणाम पर धन या संपत्ति को दाँव पर लगाना निषिद्ध है और दोषी पक्षों को आपराधिक प्रतिबंधों के अधीन करता है।
  - हालाँकि 'कौशल आधारित खेल (Game of Skill)' के परिणाम पर कोई दाँव लगाना अवैध नहीं है और इसकी अनुमति भी दी जा सकती है। अत: कथन 2 सही नहीं है।
  - यह ध्यान रखना महत्त्वपूर्ण है, सर्वोच्च न्यायालय ने माना है कि कोई भी खेल विशुद्ध रूप से 'कौशल आधारित नहीं है और लगभग सभी खेलों में अवसर का एक तत्त्व शामिल होता है।

125.

उत्तर: B

व्याख्या:

मौलिक अधिकार जो केवल नागरिकों को उपलब्ध हैं, न कि विदेशियों के लिये	नागरिकों और विदेशियों दोनों के लिये उपलब्ध मौलिक अधिकार (शत्रु देश को छोड़कर)
अनुच्छेद 15: केवल धर्म, मूल वंश, जाति, लिंग या जन्मस्थान के आधार पर विभेद का प्रतिषेध।	**अनुच्छेद 14:** विधि के समक्ष समता और विधियों का समान संरक्षण
अनुच्छेद 16: लोक नियोजन के विषय में अवसर की समानता।	**अनुच्छेद 20:** अपराधों के लिये दोषसिद्धि के संबंध में संरक्षण।
अनुच्छेद 19: (i) विचार एवं अभिव्यक्ति, (ii) शांतिपूर्ण सम्मेलन, (iii) संघ बनाने, (iv) निर्बाध विचरण, (v) निवास और पेशे की स्वतंत्रता के संबंध में छह अधिकारों का संरक्षण।	**अनुच्छेद 21:** प्राण एवं दैहिक स्वतंत्रता का संरक्षण।
अनुच्छेद 29: अल्पसंख्यकों की भाषा, लिपि और संस्कृति का संरक्षण।	**अनुच्छेद 21A:** प्रारंभिक शिक्षा का अधिकार।
अनुच्छेद 30: अल्पसंख्यकों का शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना एवं उसके संचालन का अधिकार।	**अनुच्छेद 22:** कुछ मामलों में हिरासत एवं नज़रबंदी से संरक्षण।
	अनुच्छेद 23: बलात् श्रम एवं अवैध मानव व्यापार के विरुद्ध प्रतिषेध।
	अनुच्छेद 24: कारखानों आदि में बच्चों के नियोजन का प्रतिषेध।
	अनुच्छेद 25: धर्म की अभिवृद्धि के लिये प्रयास करने की स्वतंत्रता।
	अनुच्छेद 26: धार्मिक संस्थाओं के संचालन की स्वतंत्रता।
	अनुच्छेद 27: किसी धर्म को प्रोत्साहित करने हेतु कर से छूट।
	अनुच्छेद 28:कुछ शिक्षण संस्थानों में धार्मिक शिक्षा या पूजा में भाग लेने के बारे में स्वतंत्रता।

126.

उत्तर: C

व्याख्या:

अनुदान के अन्य प्रकार:

- **अतिरिक्त अनुदान (Additional Grant):** यह अनुदान उस समय प्रदान किया जाता है जब सरकार को उस वर्ष के वित्तीय विवरण में परिकल्पित/अनुध्यात सेवाओं के अतिरिक्त किसी नई सेवा के लिये धन की आवश्यकता होती है।
- **अधिक अनुदान (Excess Grant):** यह तब प्रदान किया जाता है जब किसी सेवा पर उस वित्तीय वर्ष में निर्धारित (उस वर्ष में संबंधित सेवा के लिये) या अनुदान किये गए धन से अधिक व्यय हो जाता है। इस पर लोकसभा द्वारा वित्तीय वर्ष खत्म होने के बाद मतदान किया जाता है। मतदान के लिये लोकसभा में इस अनुदान की मांग प्रस्तुत करने से पहले उसे संसद की **लोक लेखा समिति** (Public Accounts Committee) द्वारा अनुमोदित किया जाना चाहिये। **अत: विकल्प C सही है।**
- **प्रत्यानुदान (Vote of Credit):** जब किसी सेवा के अनिश्चित स्वरूप के कारण उसकी मांग को बजट में उस प्रकार नहीं रखा जा सकता जिस प्रकार से सामान्यतया बजट में अन्य मांगों को रखा जाता है, तो ऐसी मांगों की पूर्ति के लिये प्रत्यानुदान प्रदान किया जाता है।
  - अत: यह लोकसभा द्वारा कार्यपालिका को दिये गए ब्लैंक चेक के समान है।
- **अपवादानुदान (Exceptional Grant):** यह एक विशेष उद्देश्य के लिये प्रदान किया जाता है तथा यह किसी भी वित्तीय वर्ष की वर्तमान सेवा का हिस्सा नहीं होता है।

संबंधित संवैधानिक प्रावधान:

- **अनुच्छेद 115** अनुपूरक, अतिरिक्त या अधिक अनुदान से संबंधित है।
- भारतीय संविधान का **अनुच्छेद-116 लेखानुदान**, प्रत्यानुदान और अपवादानुदान के निर्धारण से संबंधित है।
- अनुपूरक, अतिरिक्त, अधिक और असाधारण अनुदान तथा **वोट ऑफ क्रेडिट** को उसी प्रक्रिया द्वारा विनियमित किया जाता है जैसे **बजट** (Budget) को किया जाता है।

127.

उत्तर: A

व्याख्या:

- सीलबंद कवर न्यायशास्त्र एक अभ्यास है जिसका उपयोग सर्वोच्च न्यायालय और कभी-कभी निचली अदालतों द्वारा सीलबंद लिफाफों में सरकारी एजेंसियों से जानकारी मांगने या स्वीकार करने के लिये किया जाता है, इसे केवल न्यायाधीशों द्वारा ही एक्सेस किया जा सकता है। **अत: कथन 1 सही है।**
- यद्यपि कोई विशिष्ट कानून 'सीलबंद कवर' के सिद्धांत को परिभाषित नहीं करता है, सर्वोच्च न्यायालय इसे सर्वोच्च न्यायालय के नियमों के आदेश XIII के नियम 7 और 1872 के भारतीय साक्ष्य अधिनियम की धारा 123 से उपयोग करने की शक्ति प्राप्त करता है। **अत: कथन 2 सही नहीं है।**
- **सर्वोच्च न्यायालय के आदेश XIII के नियम 7:**
  - नियम के अनुसार, यदि मुख्य न्यायाधीश या अदालत कुछ सूचनाओं को सीलबंद लिफाफे में रखने का निर्देश देते हैं या इसे गोपनीय प्रकृति का मानते हैं, तो किसी भी पक्ष को ऐसी जानकारी की सामग्री तक पहुँच की अनुमति नहीं दी जाएगी, सिवाय इसके कि मुख्य न्यायाधीश स्वयं आदेश दे कि विपरीत पक्ष को इसे एक्सेस करने की अनुमति दी जाए।
  - इसमें यह भी उल्लेख किया गया है कि सूचना को गोपनीय रखा जा सकता है यदि इसके प्रकाशन को जनता के हित में नहीं माना जाता है।
- **वर्ष 1872 के भारतीय साक्ष्य अधिनियम की धारा 123:**
  - इस अधिनियम के तहत राज्य के मामलों से संबंधित आधिकारिक अप्रकाशित दस्तावेज़ों की रक्षा की जाती है और एक सरकारी अधिकारी को ऐसे दस्तावेज़ों का खुलासा करने के लिये मजबूर नहीं किया जा सकता है।
  - अन्य उदाहरण जहाँ गोपनीयता या विश्वास के तहत जानकारी मांगी जा सकती है, इसका प्रकाशन जाँच में बाधा डालता है जैसे- **विवरण** (Details) जो पुलिस केस डायरी का हिस्सा है।

128.

उत्तर: B

व्याख्या:

- संविधान की आठवीं अनुसूची में भारत गणराज्य की आधिकारिक भाषाओं को सूचीबद्ध किया गया है। भारतीय संविधान के भाग XVII में **अनुच्छेद 343 से 351** तक शामिल अनुच्छेद आधिकारिक भाषाओं से संबंधित हैं। **अत: कथन 1 सही है।**
- आठवीं अनुसूची से संबंधित संवैधानिक प्रावधान इस प्रकार हैं:
  - **अनुच्छेद 344:** अनुच्छेद 344(1) संविधान के प्रारंभ से पाँच वर्ष की समाप्ति पर राष्ट्रपति द्वारा एक आयोग के गठन का प्रावधान करता है।
  - **अनुच्छेद 351:** यह हिंदी भाषा का विकास करने हेतु इसके प्रसार का प्रावधान करता है ताकि यह भारत की मिश्रित संस्कृति के सभी घटकों के लिये अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में काम कर सके।

- हालाँकि यह ध्यान देने योग्य है कि किसी भी भाषा को आठवीं अनुसूची में शामिल करने के लिये कोई निश्चित मानदंड निर्धारित नहीं है। **अत: कथन 3 सही है।**
- **आधिकारिक भाषाएँ:**
  - संविधान की आठवीं अनुसूची में निम्नलिखित 22 भाषाएँ शामिल हैं:
    - असमिया, बांग्ला, गुजराती, हिंदी, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, मलयालम, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, ओडिया, पंजाबी, संस्कृत, सिंधी, तमिल, तेलुगू, उर्दू, बोडो, संथाली, मैथिली और डोगरी।
  - इन भाषाओं में से 14 भाषाओं को संविधान के प्रारंभ में ही शामिल कर लिया गया था।
  - वर्ष 1967 में सिंधी भाषा को 21वें सविधान संशोधन अधिनियम द्वारा आठवीं अनुसूची में शामिल किया गया था।
  - वर्ष 1992 में 71वें संशोधन अधिनियम द्वारा कोंकणी, मणिपुरी और नेपाली को शामिल किया गया। **अत: कथन 2 सही नहीं है।**
  - वर्ष 2003 में 92वें सविधान संशोधन अधिनियम जो कि वर्ष 2004 से प्रभावी हुआ, द्वारा बोडो, डोगरी, मैथिली और संथाली को आठवीं अनुसूची में शामिल किया गया।

129.

उत्तर: D

व्याख्या:

- वर्ष 1931 की जनगणना के अनुसार, अनुसूचित जनजातियों को 'बहिर्वेशित' और 'आंशिक रूप से बहिर्वेशित' क्षेत्रों में 'पिछड़ी जनजातियों' के रूप में जाना जाता है। वर्ष **1935 के भारत सरकार अधिनियम** के तहत पहली बार **'पिछड़ी जनजातियों'** के प्रतिनिधियों को प्रांतीय विधानसभाओं में आमंत्रित किया गया।
- संविधान अनुसूचित जनजातियों की मान्यता के मानदंडों को परिभाषित नहीं करता है और इसलिये वर्ष 1931 की जनगणना में निहित परिभाषा का उपयोग स्वतंत्रता के बाद के आरंभिक वर्षों में किया गया था। **अत: कथन 1 सही नहीं है।**
- हालाँकि संविधान का अनुच्छेद 366(25) अनुसूचित जनजातियों को परिभाषित करने के लिये प्रक्रिया निर्धारित करता है: **"अनुसूचित जनजातियों का अर्थ ऐसी जनजातियों या जनजातीय समुदायों के अंदर कुछ वर्गों या समूहों से है, जिन्हें इस संविधान के उद्देश्यों के लिये अनुच्छेद 342 के तहत अनुसूचित जनजाति माना जाता है।"**
  - **342(1):** राष्ट्रपति किसी भी राज्य या केंद्रशासित प्रदेश के संबंध में तथा जहाँ यह एक राज्य है, वहाँ के राज्यपाल के परामर्श के बाद एक सार्वजनिक अधिसूचना द्वारा उस राज्य या केंद्रशासित प्रदेश के संबंध में जनजातियों या जनजातीय समुदायों या जनजातियों या जनजातीय समुदायों के समूहों को अनुसूचित जनजाति के रूप में निर्दिष्ट कर सकता है। **अत: कथन 2 सही नहीं है।**
- अब तक लगभग 705 से अधिक जनजातियाँ ऐसी हैं जिन्हें अधिसूचित किया गया है। सबसे अधिक संख्या में आदिवासी समुदाय **ओडिशा** में पाए जाते हैं।

130.

उत्तर: B

व्याख्या:

राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग (NCST):

- राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग (NCST) की स्थापना भारतीय संविधान के अनुच्छेद 338 में संशोधन करके और संविधान (89वाँ संशोधन) अधिनियम, 2003 द्वारा संविधान में एक नया अनुच्छेद 338A सम्मिलित कर की गई थी, इस प्रकार यह एक संवैधानिक निकाय है। **अत: कथन 1 सही नहीं है, जबकि कथन 2 सही है।**
- अनुच्छेद 338A अन्य बातों के साथ-साथ NCST को संविधान के तहत या किसी अन्य कानून के तहत या सरकार को किसी अन्य आदेश के तहत STs को प्रदान किये गए विभिन्न सुरक्षा उपायों के कार्यान्वयन की निगरानी करने और ऐसे सुरक्षा उपायों के कामकाज का मूल्यांकन करने की शक्ति प्रदान करता है।
- इसमें एक अध्यक्ष, एक उपाध्यक्ष और 3 अन्य सदस्य होते हैं। **अत: कथन 3 सही नहीं है।**
  - सदस्यों में कम-से-कम एक सदस्य महिला होनी चाहिये।
  - कार्यकारी अध्यक्ष, उपाध्यक्ष और NCST के सदस्यों का कार्यकाल पदभार ग्रहण करने की तिथि से लेकर तीन वर्ष तक का होता है।
  - सदस्य दो से अधिक कार्यकाल के लिये नियुक्ति के पात्र नहीं होते हैं।

131.

उत्तर: C

व्याख्या:

- भारत में नगर निगम दस लाख से अधिक लोगों की आबादी वाले किसी भी महानगर/शहर के विकास के लिये ज़िम्मेदार एक शहरी स्थानीय निकाय है।
- महानगर पालिका, नगर पालिका, नगर निगम, सिटी कारपोरेशन आदि इसके कुछ अन्य नाम हैं।
- राज्यों में नगर निगमों की स्थापना राज्य विधानसभाओं के अधिनियमों द्वारा तथा केंद्रशासित प्रदेशों में संसद के अधिनियमों के माध्यम से की जाती है। **अत: कथन 1 सही नहीं है।**

- नगरपालिका अपने कार्यों के संचालन के लिये संपत्ति कर राजस्व पर अधिक निर्भर रहती है।
- भारत में पहला नगर निगम वर्ष 1688 में मद्रास में स्थापित किया गया तथा उसके बाद वर्ष 1726 में बॉम्बे और कलकत्ता में नगर निगम स्थापित किये गए। **अत: कथन 2 सही है।**
- भारत के संविधान में राज्य के नीति निदेशक सिद्धांतों में अनुच्छेद-40 को शामिल करने के अलावा स्थानीय स्वशासन की स्थापना के लिये कोई विशिष्ट प्रावधान नहीं किया गया था।
  - 74वें संशोधन अधिनियम, 1992 ने संविधान में एक नया भाग IX-A सम्मिलित किया है, जो नगर पालिकाओं और नगर पालिकाओं के प्रशासन से संबंधित है।
  - इसमें अनुच्छेद 243P से 243ZG शामिल हैं। इसने संविधान में एक नई 12वीं अनुसूची भी जोड़ी। 12वीं अनुसूची में 18 मद शामिल हैं।
  - भारतीय संविधान की 12वीं अनुसूची नगर पालिकाओं की शक्तियों, अधिकारों और उत्तर्दायित्वों को निर्दिष्ट करती है। **अत: कथन 3 सही है।**

132.

उत्तर: C

व्याख्या:

राष्ट्रपति शासन:

- अनुच्छेद 356 के तहत केंद्र किसी राज्य में संवैधानिक तंत्र के विफल होने या व्यवधान/अवरोध की स्थिति उत्पन्न होने पर राज्य सरकार के कार्यों को अपने अधीन ले लेता है।
- इसे लोकप्रिय रूप से 'राष्ट्रपति शासन' के तौर पर जाना जाता है। **अत: कथन 1 सही है।**
- **'राष्ट्रपति शासन लगाने का आधार:** राष्ट्रपति शासन को अनुच्छेद 356 के तहत दो आधारों पर घोषित किया जा सकता है:
  - अनुच्छेद 356 राष्ट्रपति को राष्ट्रपति शासन की उद्घोषणा जारी करने का अधिकार देता है। यदि राज्य में ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई है जिसमें किसी राज्य की सरकार संविधान के प्रावधानों के अनुसार चलने में सक्षम न हो तो राष्ट्रपति अनुच्छेद 356 का उपयोग कर राष्ट्रपति शासन लगा सकता है।
  - **अनुच्छेद 365** के अनुसार, जब भी कोई राज्य केंद्र के किसी निर्देश का पालन करने या उसे लागू करने में विफल रहता है, तो राष्ट्रपति के लिये यह मानना वैध होगा कि ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई है जिसमें राज्य की सरकार संविधान के प्रावधान के अनुसार नहीं चल सकती है।
- **संसदीय अनुमोदन और अवधि:** राष्ट्रपति शासन लगाने की घोषणा को संसद के दोनों सदनों द्वारा इसके जारी होने की तारीख से दो महीने के भीतर अनुमोदित किया जाना चाहिये।
- **राष्ट्रपति शासन के परिणाम:** जब किसी राज्य में राष्ट्रपति शासन लगाया जाता है तो राष्ट्रपति को निम्नलिखित असाधारण शक्तियाँ प्राप्त होती हैं:
  - वह राज्य सरकार के कार्यों और राज्यपाल या राज्य में किसी अन्य कार्यकारी प्राधिकरण में निहित शक्तियों को ले सकता है। **अत: कथन 2 सही है।**
  - वह घोषणा कर सकता है कि राज्य विधायिका की शक्तियों का प्रयोग संसद द्वारा किया जाना है।
  - वह राज्य में किसी भी निकाय या प्राधिकरण से संबंधित संवैधानिक प्रावधानों के निलंबन सहित अन्य सभी आवश्यक कदम उठा सकता है।
- **न्यायिक समीक्षा का दायरा:** वर्ष 1975 के 38वें संशोधन अधिनियम ने अनुच्छेद 356 को अंतिम और निर्णायक रूप से लागू करने में राष्ट्रपति की संतुष्टि, जिसे किसी भी आधार पर किसी भी अदालत में चुनौती नहीं दी जाएगी।
  - लेकिन इस प्रावधान को बाद में 1978 के 44वें संशोधन अधिनियम द्वारा हटा दिया गया था, जिसका अर्थ था कि राष्ट्रपति की संतुष्टि न्यायिक समीक्षा से परे नहीं है।

133.

उत्तर: C

व्याख्या:

- आपातकालीन प्रावधान संविधान के भाग XVIII में शामिल अनुच्छेद 352 से अनुच्छेद 360 तक में निहित हैं। **अत: कथन 1 सही है।**
- **संविधान तीन प्रकार की आपात स्थितियों को निर्धारित करता है:**
  - राष्ट्रीय आपातकाल
  - संवैधानिक आपातकाल
  - वित्तीय आपातकाल
- भारतीय संविधान में आपातकालीन प्रावधान भारत सरकार अधिनियम 1935 से लिये गए हैं।
  - हालाँकि आपातकाल के दौरान मौलिक अधिकारों का निलंबन वीमर (जर्मन) संविधान से लिया गया है। **अत: कथन 2 सही है।**

134.

उत्तर: C

व्याख्या:

- **अनुच्छेद 29:**
  - यह अनुच्छेद उपबंध करता है कि भारत के राज्य क्षेत्र या उसके किसी भाग के निवासी नागरिकों के किसी अनुभाग को अपनी **विशेष भाषा, लिपि या संस्कृति** को बनाए रखने का अधिकार होगा।

- **अनुच्छेद-29** के तहत प्रदान किये गए अधिकार अल्पसंख्यक तथा बहुसंख्यक दोनों को प्राप्त हैं। **अतः कथन 1 सही है।**

- **अनुच्छेद 30:**
  - धर्म या भाषा पर आधारित सभी अल्पसंख्यक वर्गों को अपनी रुचि की शिक्षा संस्थानों की स्थापना करने और उनके प्रशासन का अधिकार होगा।
  - अनुच्छेद 30 के तहत संरक्षण केवल अल्पसंख्यकों (धार्मिक या भाषायी) तक ही सीमित है और नागरिकों के किसी भी वर्ग (जैसा कि अनुच्छेद 29 के तहत) तक विस्तारित नहीं किया जा सकता।
- **अनुच्छेद 350 B:**
  - मूल रूप से भारत के संविधान में भाषायी अल्पसंख्यकों के लिये विशेष अधिकारों के संबंध में कोई प्रावधान नहीं किया गया था। इसे **7वें संवैधानिक संशोधन अधिनियम, 1956** द्वारा संविधान में अनुच्छेद 350B के रूप में जोड़ा गया।
  - यह भारत के राष्ट्रपति द्वारा भाषायी अल्पसंख्यकों के लिये एक विशेष अधिकारी की नियुक्ति का प्रावधान करता है। **अतः कथन 2 सही है।**

135.

उत्तर: A

व्याख्या:

- हाल ही में **भारत के मुख्य न्यायाधीश (CJI)** ने डिजिटल प्लेटफॉर्म 'FASTER' (फास्ट एंड सिक्योर ट्रांसमिशन ऑफ इलेक्ट्रॉनिक रिकॉर्ड्स) लॉन्च किया है।
  - यह सुरक्षित इलेक्ट्रॉनिक संचार चैनल के माध्यम से संबंधित अधिकारियों को सर्वोच्च न्यायालय के अंतरिम आदेश, स्थगन आदेश, जमानत आदेश आदि को संप्रेषित करने के लिये एक डिजिटल प्लेटफॉर्म है।
- सर्वोच्च न्यायालय ने न्यायिक प्रणाली में **आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस** (AI) आधारित **पोर्टल 'SUPACE'** जैसी तकनीक से जुड़े अन्य कार्यक्रम भी शुरू किये हैं, जिसका उद्देश्य न्यायाधीशों को कानूनी अनुसंधान में सहायता करना है।
- **अतः विकल्प A सही है।**

136.

उत्तर: D

व्याख्या:

- 74वें संशोधन अधिनियम, 1992 ने संविधान में एक नया भाग IX-A सम्मिलित किया है, जो नगर पालिकाओं और नगर पालिकाओं के प्रशासन से संबंधित है।
- इसमें अनुच्छेद 243P से 243ZG शामिल हैं। इसने संविधान में एक नई **बारहवीं अनुसूची** भी जोड़ी। 12वीं अनुसूची में 18 मद शामिल हैं।
  - भारतीय संविधान की 12वीं अनुसूची उन प्रावधानों से संबंधित है जो नगर पालिकाओं की शक्तियों, अधिकार और ज़िम्मेदारियों को निर्दिष्ट करते हैं।
- भारतीय संविधान की 12वीं अनुसूची में निम्नलिखित विषय शामिल हैं:
  1. नगर नियोजन सहित शहरी नियोजन।
  2. भू-उपयोग और भवनों के निर्माण का विनियमन।
  3. आर्थिक और सामाजिक विकास की योजना बनाना।
  4. सड़कें और पुल।
  5. घरेलू, औद्योगिक और वाणिज्यिक उद्देश्यों के लिये जलापूर्ति।
  6. सार्वजनिक स्वास्थ्य, स्वच्छता संरक्षण और ठोस अपशिष्ट प्रबंधन।
  7. अग्निशमन सेवाएँ।
  8. शहरी वानिकी, पर्यावरण की सुरक्षा और पारिस्थितिक पहलुओं को बढ़ावा देना।
  9. विकलांग और मानसिक रूप से मंद लोगों सहित समाज के कमज़ोर वर्गों के हितों की रक्षा करना।
  10. स्लम सुधार और उन्नयन।
  11. शहरी गरीबी उन्मूलन।
  12. शहरी सुविधाओं और पार्कों, उद्यानों, खेल के मैदानों जैसी सुविधाओं का प्रावधान।
  13. सांस्कृतिक, शैक्षिक और सौंदर्य संबंधी पहलुओं को बढ़ावा देना।
  14. दफन और कब्रिस्तान; श्मशान, श्मशान घाट और विद्युत शवदाह गृह।
  15. मवेशी पाउंड; पशुओं के प्रति क्रूरता की रोकथाम।
  16. जन्म और मृत्यु के पंजीकरण सहित महत्त्वपूर्ण आँकड़े।
  17. स्ट्रीट लाइटिंग, पार्किंग स्थल, बस स्टॉप और सार्वजनिक सुविधाओं सहित सार्वजनिक सुविधाएँ।
  18. बूचड़खानों और चर्मशोधन कारखानों का विनियमन।
- **अतः विकल्प D सही है।**

137.

उत्तर: B

व्याख्या:

आपातकालीन प्रावधान:

- ये प्रावधान केंद्र सरकार को किसी भी असामान्य स्थिति से प्रभावी ढंग से निपटने में सक्षम बनाते हैं।

- भारतीय संविधान में आपातकालीन प्रावधान भारत सरकार अधिनियम 1935 से लिये गए हैं। **अतः कथन 1 सही है।**
  - हालाँकि आपातकाल के दौरान मौलिक अधिकारों का निलंबन वीमर (जर्मन) संविधान से लिया गया है।
- आपातकालीन प्रावधानों का उद्देश्य देश की संप्रभुता, एकता, अखंडता एवं सुरक्षा, लोकतांत्रिक राजनीतिक व्यवस्था और संविधान की रक्षा करना है।
- संविधान तीन प्रकार की आपात स्थितियों को निर्धारित करता है:
  - **राष्ट्रीय आपातकाल**
    - अनुच्छेद 352 के तहत राष्ट्रपति राष्ट्रीय आपातकाल की घोषणा कर सकता है, जब भारत या उसके एक हिस्से की सुरक्षा को युद्ध या बाहरी आक्रमण या सशस्त्र विद्रोह से खतरा हो। **अतः कथन 2 सही नहीं है।**
  - **वित्तीय आपातकाल**
    - अनुच्छेद 360 राष्ट्रपति को वित्तीय आपातकाल की घोषणा करने का अधिकार देता है।
  - **संवैधानिक आपातकाल**
    - अनुच्छेद 356 के तहत केंद्र किसी राज्य में संवैधानिक तंत्र के विफल होने या व्यवधान/अवरोध की स्थिति उत्पन्न होने पर राज्य सरकार के कार्यों को अपने अधीन ले लेता है।

138.

उत्तर: A

व्याख्या:

- **अतिरिक्त अनुदान (Additional Grant):** यह अनुदान उस समय प्रदान किया जाता है जब सरकार को उस वर्ष के वित्तीय विवरण में परिकल्पित/अनुध्यात सेवाओं के अतिरिक्त किसी नई सेवा के लिये धन की आवश्यकता होती है।
- **अधिक अनुदान (Excess Grant):** यह तब प्रदान किया जाता है जब किसी सेवा पर उस वित्तीय वर्ष में निर्धारित (उस वर्ष में संबंधित सेवा के लिये) या अनुदान किये गए धन से अधिक व्यय हो जाता है।
  - इस पर लोकसभा द्वारा वित्तीय वर्ष खत्म होने के बाद मतदान किया जाता है। मतदान के लिये लोकसभा में इस अनुदान की मांग प्रस्तुत करने से पहले उसे संसद की **लोक लेखा समिति** (Public Accounts Committee) द्वारा अनुमोदित किया जाना चाहिये।
- **अनुच्छेद 115** अनुपूरक, अतिरिक्त या अधिक अनुदान से संबंधित है।
- भारतीय संविधान का **अनुच्छेद-116 लेखानुदान**, प्रत्यानुदान और अपवादानुदान के निर्धारण से संबंधित है।
- अनुपूरक, अतिरिक्त, अधिक और असाधारण अनुदान तथा **वोट ऑफ क्रेडिट** को उसी प्रक्रिया द्वारा विनियमित किया जाता है जैसे **बजट** (Budget) को किया जाता है।
- **अतः विकल्प A सही है।**

139.

उत्तर: C

व्याख्या:

- संविधान का अनुच्छेद 80 राज्यसभा की अधिकतम संख्या 250 निर्धारित करता है, जिसमें से 12 सदस्य राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत होते हैं और 238 राज्यों और दो प्रतिनिधि केंद्रशासित प्रदेशों के होते हैं। **अतः कथन 1 सही है।**
  - हालाँकि राज्यसभा की वर्तमान संख्या 245 है, जिसमें सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के 233 प्रतिनिधि हैं और 12 राष्ट्रपति द्वारा नामित हैं।
  - राष्ट्रपति द्वारा नामित सदस्य साहित्य, विज्ञान, कला और समाज सेवा जैसे मामलों में विशेष ज्ञान या व्यावहारिक अनुभव रखने वाले व्यक्ति होते हैं।
- संविधान की चौथी अनुसूची राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के लिये राज्यसभा में सीटों के आवंटन का प्रावधान करती है। **अतः कथन 2 सही है।**
  - सीटों का आवंटन प्रत्येक राज्य की जनसंख्या के आधार पर किया जाता है।
  - राज्यों के पुनर्गठन और नए राज्यों के गठन के परिणामस्वरूप, राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को आवंटित राज्यसभा में निर्वाचित सीटों की संख्या में वर्ष 1952 से समय-समय पर परिवर्तन होता रहा है।

140.

उत्तर: C

व्याख्या:

- पुदुचेरी, जम्मू और कश्मीर और राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली केंद्रशासित प्रदेशों का राज्यसभा में प्रतिनिधित्व है, जबकि लद्दाख, चंडीगढ़, दादरा और नगर हवेली- दमन और दीव, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह तथा लक्षद्वीप का उच्च सदन में प्रतिनिधित्व नहीं है।
- **अतः विकल्प C सही है।**

141.

उत्तर: A

व्याख्या:

नौवीं अनुसूची:

- नौवीं अनुसूची को भारतीय संविधान में पहले संशोधन द्वारा जोड़ा गया था। **अतः कथन 2 सही नहीं है।**

- इसे 10 मई, 1951 को जवाहरलाल नेहरू सरकार द्वारा भूमि सुधार कानूनों को मौलिक अधिकारों के उल्लंघन के आधार पर न्यायालय में चुनौती दिये जाने से बचाने के लिये पेश किया गया था। **अतः कथन 1 सही है।**
- इसे नए **अनुच्छेद 31B** द्वारा संरक्षण प्रदान किया गया था।
  - **अनुच्छेद 31B** का एक पूर्वव्यापी (Retrospective) संचालन भी है, अर्थात् न्यायालय द्वारा असंवैधानिक घोषित होने के बाद भी यदि किसी कानून को नौवीं अनुसूची में शामिल किया जाता है तो वह उस तारीख से संवैधानिक रूप से वैध माना जाएगा।
- जबकि अनुसूची के तहत संरक्षित अधिकांश कानून कृषि/भूमि के मुद्दों से संबंधित हैं, इसके साथ ही सूची में अन्य विषय भी शामिल हैं।
- हालाँकि अनुच्छेद **31B न्यायिक समीक्षा** से परे है, जबकि बाद में शीर्ष अदालत द्वारा कहा गया कि नौवीं अनुसूची के तहत कानून भी न्यायिक समीक्षा के दायरे में आएंगे यदि वे मौलिक अधिकारों या संविधान के मूल ढाँचे का उल्लंघन करते हैं।

142.

उत्तर: D

व्याख्या:

- चुनावी बॉण्ड बिना किसी अधिकतम सीमा के **1,000 रुपए, 10,000 रुपए, 1 लाख रुपए, 10 लाख रुपए और 1 करोड़ रुपए के गुणकों** में जारी किये जाते हैं। **अतः कथन 1 सही नहीं है।**
- **भारतीय स्टेट बैंक** इन बॉण्ड्स को जारी करने और **भुनाने (Encash)** के लिये अधिकृत बैंक है, ये बॉण्ड जारी करने की तारीख से पंद्रह दिनों तक वैध रहते हैं। **अतः कथन 2 सही नहीं है।**
- यह बॉण्ड एक **पंजीकृत राजनीतिक पार्टी** के निर्दिष्ट खाते में प्रतिदेय होता है।
- बॉण्ड किसी भी व्यक्ति (जो भारत का नागरिक है) द्वारा **जनवरी, अप्रैल, जुलाई और अक्तूबर के महीनों में प्रत्येक दस दिनों** की अवधि हेतु खरीद के लिये उपलब्ध होते हैं, जैसा कि केंद्र सरकार द्वारा निर्दिष्ट किया गया है।
- एक व्यक्ति या तो अकेले या अन्य व्यक्तियों के साथ संयुक्त रूप से बॉण्ड खरीद सकता है।
- **बॉण्ड पर दाता के नाम का उल्लेख नहीं** किया जाता है।
  - चुनावी बॉण्ड की खरीद के माध्यम से **राजनीतिक दलों को 20,000 रुपए से कम का योगदान** देने वाले दाताओं को अपना **पहचान विवरण जैसे- पैन (PAN)** आदि देने की आवश्यकता नहीं होती।
- चुनावी बॉण्ड योजना का प्रमुख उद्देश्य भारत में चुनावी फंडिंग में पारदर्शिता लाना था।
  - सरकार ने इस योजना को **"कैशलेस-डिजिटल अर्थव्यवस्था"** की ओर बढ़ रहे देश में **'चुनावी सुधार'** के रूप में वर्णित किया।

143.

उत्तर: A

व्याख्या:

- त्रिभाषा सूत्र पहली बार **कोठारी आयोग** द्वारा 1968 में प्रस्तावित किया गया था। इस योजना के तहत:
  - **पहली भाषा:** यह मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा होगी।
  - **दूसरी भाषा:** हिंदी भाषी राज्यों में यह अन्य आधुनिक भारतीय भाषाएँ या अंग्रेज़ी होगी। गैर-हिंदी भाषी राज्यों में यह हिंदी या अंग्रेज़ी होगी।
  - **तीसरी भाषा:** हिंदी भाषी राज्यों में यह अंग्रेज़ी या आधुनिक भारतीय भाषा होगी। गैर-हिंदी भाषी राज्य में यह अंग्रेज़ी या आधुनिक भारतीय भाषा होगी। **अतः कथन 1 सही है।**
- भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 मान्यता प्राप्त अनुसूचित भाषाओं की सूची है। ये भाषाएँ इस प्रकार हैं:
  - असमिया, बंगाली, गुजराती, हिंदी, कन्नड़, कश्मीरी, कोंकणी, मलयालम, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, उड़िया, पंजाबी, संस्कृत, सिंधी, तमिल, तेलुगु, उर्दू, बोडो, संथाली, मैथिली और डोगरी।
  - अंग्रेजी भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची का हिस्सा नहीं है। **अतः कथन 2 सही नहीं है।**

144.

उत्तर: C

व्याख्या:

राष्ट्रपति पर महाभियोग:

- अनुच्छेद 61 के अनुसार, राष्ट्रपति को उसके कार्यकाल की समाप्ति से पहले केवल 'संविधान के उल्लंघन (Violation Of The Constitution) के आधार पर पद से हटाया जा सकता है। **अतः कथन 1 सही है।**
- हालाँकि भारतीय संविधान में 'संविधान का उल्लंघन' वाक्यांश के अर्थ को परिभाषित नहीं किया गया है। **अतः कथन 2 सही नहीं है।**
- राष्ट्रपति पर महाभियोग की प्रक्रिया (Impeachment Process) संसद के किसी भी सदन में शुरू की जा सकती है। **अतः कथन 3 सही है।**
  - राष्ट्रपति के विरुद्ध प्रस्ताव पर सदन के कम-से-कम एक-चौथाई सदस्यों के हस्ताक्षर होना आवश्यक है।

145.

उत्तर: C

व्याख्या:

केंद्रीय प्रशासनिक अधिकरण:

- इसकी स्थापना संविधान के **अनुच्छेद 323A** के तहत की गई थी। **अत: कथन 1 सही है।**
- यह संघ या सरकार के नियंत्रणाधीन अन्य प्राधिकरणों के मामलों के संबंध में **सार्वजनिक सेवाओं और पदों पर नियुक्त व्यक्तियों की भर्ती तथा सेवा की शर्तों के संबंध में विवादों व शिकायतों के न्यायनिर्णयन का** प्रावधान करता है।
- CAT एक विशेषज्ञ निकाय है जिसमें प्रशासनिक और न्यायिक सदस्य शामिल हैं जो अपने विशेष ज्ञान के आधार पर त्वरित और प्रभावी न्याय प्रदान करने में सक्षम हैं। **अत: कथन 2 सही है।**

146.

उत्तर: A

व्याख्या:

- दल-बदल विरोधी कानून **संसद/विधानसभा** सदस्यों को एक पार्टी से दूसरी पार्टी में शामिल होने पर दंडित करता है
- संसद ने इसे **1985 में दसवीं अनुसूची** के रूप में संविधान में जोड़ा। इसका उद्देश्य दल बदलने वाले विधायकों को हतोत्साहित कर सरकारों में स्थिरता लाना था।
  - **दसवीं अनुसूची** जिसे दलबदल विरोधी अधिनियम के रूप में जाना जाता है, को **52वें संशोधन अधिनियम, 1985** के माध्यम से संविधान में शामिल किया गया था
  - यह किसी अन्य राजनीतिक दल में दलबदल के आधार पर निर्वाचित सदस्यों की अयोग्यता के लिये प्रावधान निर्धारित करता है।
  - यह 1967 के आम चुनावों के बाद पार्टी से अलग विधायकों द्वारा कई राज्य सरकारों को गिराने की प्रतिक्रिया थी।
- हालाँकि यह **सांसद/विधायकों** के एक समूह को दलबदल के लिये **दंड के बिना किसी अन्य राजनीतिक दल में शामिल होने (अर्थात् विलय)** की अनुमति देता है। इस प्रकार यह दलबदल करने वाले विधायकों को प्रोत्साहित करने या स्वीकार करने के लिये राजनीतिक दलों को दंडित नहीं करता है।
- 1985 के अधिनियम के अनुसार, एक **राजनीतिक दल के निर्वाचित सदस्यों के एक-तिहाई सदस्यों द्वारा 'दलबदल' को 'विलय' माना** जाता था।
- 91वें संविधान संशोधन अधिनियम, 2003 के अनुसार, दलबदल विरोधी कानून में एक राजनीतिक दल को किसी अन्य राजनीतिक दल में या उसके साथ विलय करने की अनुमति दी गई है, बशर्ते कि उसके **कम-से-कम दो-तिहाई सदस्य विलय** के पक्ष में हों।
- इस प्रकार इस कानून के तहत एक बार अयोग्य सदस्य उसी सदन की किसी सीट पर किसी भी राजनीतिक दल से चुनाव लड़ सकते हैं।
- दलबदल के आधार पर अयोग्यता संबंधी प्रश्नों पर निर्णय के लिये मामले को सदन के सभापति या अध्यक्ष के पास भेजा जाता है, जो कि **'न्यायिक समीक्षा'** के अधीन होता है।
- हालाँकि कानून एक समय-सीमा प्रदान नहीं करता है जिसके भीतर **पीठासीन अधिकारी को दलबदल** के मामले का फैसला करना होता है।

147.

उत्तर: B

व्याख्या:

73वाँ संवैधानिक संशोधन:

- 73वें संवैधानिक संशोधन द्वारा संविधान में **"पंचायतों" शीर्षक से भाग IX जोड़ा** गया। **अत: कथन 1 सही नहीं है।**
- लोकतांत्रिक प्रणाली की बुनियादी इकाइयों के रूप में ग्राम सभाओं (ग्राम) को रखा गया जिसमें मतदाता के रूप में पंजीकृत सभी वयस्क सदस्य शामिल होते हैं। **अत: कथन 2 सही है।**
- उन राज्यों जिनकी जनसंख्या 20 लाख से कम है,को छोड़कर ग्राम, मध्यवर्ती (प्रखंड/तालुका/मंडल) और ज़िला स्तरों पर पंचायतों की त्रि-स्तरीय प्रणाली लागू की गई है (अनुच्छेद 243B)।
- सभी स्तरों पर सीटों को प्रत्यक्ष निर्वाचन द्वारा भरा जाना है [अनुच्छेद 243C(2)]।
- अनुसूचित जातियों (SC) और अनुसूचित जनजातियों (ST) के लिये सीटों का आरक्षण किया गया है तथा सभी स्तरों पर पंचायतों के अध्यक्ष के पद भी जनसंख्या में अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के अनुपात के आधार पर आरक्षित किये गए हैं।
- उपलब्ध सीटों की कुल संख्या में से एक-तिहाई सीटें महिलाओं के लिये आरक्षित हैं।
- सभी स्तरों पर अध्यक्षों के एक-तिहाई पद भी महिलाओं के लिये आरक्षित हैं।

148.

उत्तर: B

व्याख्या:

- **राज्य विश्वविद्यालयों में राज्यपाल की भूमिका:**
  - ज़्यादातर मामलों में राज्य का राज्यपाल संबंधित **राज्य के विश्वविद्यालयों का पदेन कुलपति होता है**। अत: कथन 1 सही नहीं है।
  - **राज्यपाल के रूप में वह मंत्रिपरिषद की सहायता और सलाह से कार्य करता है** लेकिन **कुलाधिपति के रूप में वह**

मंत्रिपरिषद से स्वतंत्र रूप में कार्य करता है और विश्वविद्यालय के सभी मामलों पर निर्णय लेता है। अत: कथन 2 सही है।

- **केंद्रीय विश्वविद्यालयों के संबंध में:**
  - केंद्रीय विश्वविद्यालय अधिनियम, 2009 (**Central Universities Act, 2009**) और अन्य विधियों के तहत भारत का राष्ट्रपति केंद्रीय विश्वविद्यालय का कुलाध्यक्ष होगा।
  - दीक्षांत समारोह की अध्यक्षता करने तक सीमित भूमिका के साथ ही वह केंद्रीय विश्वविद्यालयों में कुलाधिपति के रूप में नाममात्र का प्रमुख होता है जिसे राष्ट्रपति द्वारा आगंतुक के रूप में नियुक्त किया जाता है।
  - कुलपति को भी केंद्र सरकार द्वारा गठित खोज और चयन समितियों (Search and Selection Committees) द्वारा चुने गए नामों के पैनल से विज़िटर द्वारा नियुक्त किया जाता है।
  - अधिनियम में यह भी कहा गया है कि राष्ट्रपति को उसे कुलाध्यक्ष के रूप में विश्वविद्यालयों के शैक्षणिक और गैर-शैक्षणिक पहलुओं के निरीक्षण के लिये अधिकृत करने एवं जानकारी प्राप्त करने का अधिकार होगा।

149.

उत्तर: B

व्याख्या:

- संविधान का अनुच्छेद 366 (25) अनुसूचित जनजातियों को उन समुदायों के रूप में संदर्भित करता है, जो संविधान के अनुच्छेद 342 के अनुसार निर्धारित हैं।
  - अनुच्छेद 342 के अनुसार, केवल वे समुदाय जिन्हें राष्ट्रपति द्वारा प्रारंभिक सार्वजनिक अधिसूचना के माध्यम से या संसद के बाद के संशोधन अधिनियम के माध्यम से ऐसा घोषित किया गया है, उन्हें अनुसूचित जनजाति माना जाएगा।
- अनुसूचित जनजातियों की सूची राज्य/संघ राज्य क्षेत्र विशिष्ट है और एक राज्य में अनुसूचित जनजाति के रूप में घोषित समुदाय के लिये दूसरे राज्य में भी ऐसा होने की आवश्यकता नहीं है।
  - किसी समुदाय को अनुसूचित जनजाति के रूप में निर्दिष्ट करने के मानदंड के बारे में संविधान मौन है। **अत: कथन 1 सही नहीं है।**
  - वर्ष 1973 में ढेबर आयोग ने आदिम जनजातीय समूहों (PTG) को एक अलग श्रेणी के रूप में शामिल किया जो आदिवासी समूहों में कम विकसित हैं।
    - वर्ष 2006 में भारत सरकार ने पीटीजी का नाम बदलकर विशेष रूप से कमज़ोर जनजातीय समूह PVTGs) कर दिया। **अत: कथन 2 सही है।**
  - आदिवासी समूहों में PVTGs अधिक सुभेद्य हैं।

150.

उत्तर: D

व्याख्या:

73वें संवैधानिक संशोधन की मुख्य विशेषताएँ:

- 73वें संवैधानिक संशोधन द्वारा संविधान में **"पंचायतों" शीर्षक से भाग IX को जोड़ा** गया।
- लोकतांत्रिक प्रणाली की बुनियादी इकाइयों के रूप में ग्राम सभाओं (ग्राम) को रखा गया जिसमें मतदाता के रूप में पंजीकृत सभी वयस्क सदस्य शामिल होते हैं।
- उन राज्यों जिनकी जनसंख्या 20 लाख से कम है, ,को छोड़कर ग्राम, मध्यवर्ती (प्रखंड/तालुका/मंडल) और ज़िला स्तरों पर पंचायतों की त्रि-स्तरीय प्रणाली लागू की गई है **(अनुच्छेद 243B)**।
- सभी स्तरों पर सीटों को प्रत्यक्ष निर्वाचन द्वारा भरा जाना है **[अनुच्छेद 243C(2)]**।
- **सीटों का आरक्षण:**
  - **अनुसूचित जातियों** (SC) और **अनुसूचित जनजातियों** (ST) के लिये सीटों का आरक्षण किया गया है तथा सभी स्तरों पर पंचायतों के अध्यक्ष के पद भी जनसंख्या में अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति के अनुपात के आधार पर आरक्षित किये गए हैं।
  - उपलब्ध सीटों की कुल संख्या में से एक-तिहाई सीटें महिलाओं के लिये आरक्षित हैं।
  - सभी स्तरों पर अध्यक्षों के एक-तिहाई पद भी महिलाओं के लिये आरक्षित हैं **(अनुच्छेद 243D)**।
- **कार्यकाल:**
  - पंचायतों का कार्यकाल पाँच वर्ष निर्धारित है लेकिन कार्यकाल से पहले भी इन्हें भंग किया जा सकता है।
  - पंचायतों के नए चुनाव उनके कार्यकाल की अवधि की समाप्ति या पंचायत भंग होने की तिथि से 6 महीने के भीतर ही करा लिये जाने चाहिये **(अनुच्छेद 243E)**।
- मतदाता सूची के अधीक्षण, निर्देशन और नियंत्रण के लिये प्रत्येक राज्य में स्वतंत्र चुनाव आयोग होंगे **(अनुच्छेद 243K)**।
- **पंचायतों की शक्ति:** पंचायतों को ग्यारहवीं अनुसूची में वर्णित विषयों के संबंध में आर्थिक विकास और सामाजिक न्याय की योजना तैयार करने के लिये अधिकृत किया गया है **(अनुच्छेद 243G)**।
- **राजस्व का स्रोत (अनुच्छेद 243H):** राज्य विधायिका पंचायतों को निम्नलिखित के लिये अधिकृत कर सकती है:
  - राज्य के राजस्व से बजटीय आवंटन।
  - कुछ करों के राजस्व का हिस्सा।
  - राजस्व का संग्रह और प्रतिधारण।

अत: विकल्प D सही है।

151.

उत्तर: C

व्याख्या:

- दल-बदल विरोधी कानून **संसद/विधानसभा** सदस्यों को एक पार्टी से दूसरी पार्टी में शामिल होने पर दंडित करता है।
- संसद ने इसे **1985 में दसवीं अनुसूची** के रूप में संविधान में जोड़ा। इसका उद्देश्य दल बदलने वाले विधायकों को हतोत्साहित कर सरकारों में स्थिरता लाना था।
  - **दसवीं अनुसूची** जिसे दलबदल विरोधी अधिनियम के रूप में जाना जाता है, को **52वें संशोधन अधिनियम, 1985** के माध्यम से संविधान में शामिल किया गया था और यह किसी अन्य राजनीतिक दल में दलबदल के आधार पर निर्वाचित सदस्यों की अयोग्यता के लिये प्रावधान निर्धारित करता है।
  - **दलबदल विरोधी कानून से संबंधित मुद्दे:**
- **प्रतिनिधि और संसदीय लोकतंत्र को कमज़ोर करना:**
  - दलबदल विरोधी कानून के लागू होने के पश्चात् सांसद या विधायक को पार्टी के निर्देशों का पूर्ण रूप से पालन करना होता है। **अत: कथन 1 सही है।**
  - यह उन्हें किसी भी मुद्दे पर अपने निर्णय के अनुरूप वोट देने की स्वतंत्रता नहीं देता है जिससे प्रतिनिधि लोकतंत्र कमज़ोर होता है।
- **अध्यक्ष की विवादास्पद भूमिका:**
  - दल-बदल विरोधी मामलों में सदन के अध्यक्ष या स्पीकर की कार्रवाई की समय-सीमा से संबंधित कानून में कोई स्पष्टता नहीं है।
    - कुछ मामलों में **छह महीने** और कुछ में **तीन वर्ष** भी लग जाते हैं। कुछ ऐसे मामले भी हैं जो अवधि समाप्त होने के बाद निपटाए जाते हैं। **अत: कथन 2 सही नहीं है।**

152.

उत्तर: A

व्याख्या:

- शिक्षा **समवर्ती सूची** के अंतर्गत आती है, लेकिन **संघ सूची की प्रविष्टि 66**- "उच्च शिक्षा या अनुसंधान और वैज्ञानिक एवं तकनीकी संस्थानों में मानकों का समन्वय तथा निर्धारण", **केंद्र को उच्च शिक्षा पर पर्याप्त अधिकार देता है। अत: कथन 1 सही है।**
- **विश्वविद्यालय अनुदान आयोग** विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में नियुक्तियों के मामले में मानक-निर्धारण की भूमिका निभाता है।
- यूजीसी (विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में शिक्षकों एवं अन्य शैक्षणिक कर्मचारियों की नियुक्ति के लिये न्यूनतम योग्यता व उच्च शिक्षा में मानकों की मान्यता हेतु अन्य उपाय) विनियम, 2018 के अनुसार, "आगंतुक/कुलाधिपति", ज़्यादातर राज्यों में राज्यपाल "सर्च कम सिलेक्शन समितियों" द्वारा अनुशंसित नामों के पैनल में से कुलपति की नियुक्ति करेगा। **अत: कथन 2 सही नहीं है।**
- उच्च शिक्षण संस्थानों, विशेष रूप से जिन्हें यूजीसी द्वारा फंड प्राप्त होता है, को यूजीसी के नियमों का पालन करना अनिवार्य है।

153.

उत्तर: B

व्याख्या:

- हाल ही में गृह मंत्रालय (एमएचए) ने 2020-21 के लिये अपनी नवीनतम वार्षिक रिपोर्ट में कहा है कि **नागरिकता संशोधन अधिनियम, 2019** एक सहानुभूतिपूर्ण और सुधारात्मक कानून है तथा यह किसी भी भारतीय को नागरिकता से वंचित नहीं करता है।
- CAA का उद्देश्य अफगानिस्तान, बांग्लादेश या पाकिस्तान के **हिंदू, सिख, बौद्ध, जैन, पारसी या ईसाई समुदायों** के प्रवासियों को नागरिकता देना है। यह 12 दिसंबर, 2019 को अधिसूचित किया गया और 10 जनवरी, 2020 को लागू हुआ था। **अत: कथन 1 सही नहीं है।**
- CAA भारतीय नागरिकों पर लागू नहीं होता है। इसलिये यह किसी भी तरह से किसी भी भारतीय नागरिक के अधिकार को समाप्त या कम नहीं करता है। **अत: कथन 2 सही है।**

154.

उत्तर: B

व्याख्या:

- वर्ष 1961 में भारत का महापंजीयक की स्थापना गृह मंत्रालय के तहत भारत सरकार द्वारा की गई थी। **अत: कथन 1 सही नहीं है।**
- यह भारत की जनगणना और भारतीय भाषा सर्वेक्षण सहित भारत के जनसांख्यिकीय सर्वेक्षणों के परिणामों की व्यवस्था, संचालन तथा विश्लेषण करता है। **अत: कथन 2 सही है।**
- प्राय: एक सिविल सेवक को ही रजिस्ट्रार के पद पर नियुक्त किया जाता है जिसकी रैंक संयुक्त सचिव पद के समान होती है।

155.

उत्तर: A

व्याख्या:

- MPLADS के तहत संसद सदस्यों (Member of Parliaments-MPs) को प्रत्येक वर्ष 2.5 करोड़ रुपए की दो किश्तों में 5 करोड़ रुपए की राशि वितरित की जाती है। MPLADS के तहत आवंटित राशि नॉन-लैप्सेबल (Non-Lapsable) होती है। **अत: कथन 2 सही है।**

- लोकसभा सांसदों से इस राशि को अपने लोकसभा क्षेत्रों में ज़िला प्राधिकरण परियोजनाओं (District Authorities Projects) में व्यय करने की सिफारिश की जाती है, जबकि राज्यसभा संसदों द्वारा इस राशि का उपयोग उस राज्य क्षेत्र में किया जाता है जहाँ से वे चुने गए हैं।
- राज्यसभा और लोकसभा के मनोनीत सदस्य देश में कहीं भी कार्य करने की सिफारिश कर सकते हैं। **अत: कथन 1 सही है।**
- मुख्य रूप से अपने निर्वाचन क्षेत्रों में पेयजल, प्राथमिक शिक्षा, सार्वजनिक स्वास्थ्य, स्वच्छता और सड़कों आदि के क्षेत्र में टिकाऊ सामुदायिक संपत्ति के निर्माण पर ज़ोर देते हुए विकासात्मक प्रकृति के कार्यों की सिफारिश करने हेतु सांसदों को सक्षम बनाना। **अत: कथन 3 सही नहीं है।**

156.

उत्तर: A

व्याख्या:

- मौलिक अधिकार अटल या स्थायी नहीं हैं और संसद केवल एक संवैधानिक संशोधन अधिनियम द्वारा इन्हें कम या निरस्त कर सकती है। **अत: कथन 1 सही है।**
- ये असीमित नहीं हैं लेकिन वाद योग्य हैं।
- राज्य उन पर उचित प्रतिबंध लगा सकता है। हालाँकि कारण उचित है या नहीं इसका निर्णय अदालत करती है।
- ये न्यायोचित हैं। जब भी इनका उल्लंघन होता है ये व्यक्तियों को अदालत जाने की अनुमति देते हैं। **अत: कथन 2 सही नहीं है।**
- मौलिक अधिकारों के उल्लंघन के मामले में कोई भी पीड़ित व्यक्ति सीधे सर्वोच्च न्यायालय की शरण में जा सकता है।

157.

उत्तर: D

व्याख्या:

क्षमादान के प्रकार:

- **क्षमा (Pardon):** इसमें **दंड और बंदीकरण दोनों को हटा दिया जाता है** तथा दोषी की सज़ा को दंड, दंडादेशों एवं निर्हताओं से पूर्णत: मुक्त कर दिया जाता है।
- **लघुकरण (Commutation):** इसमें **दंड के स्वरुप में परिवर्तन करना** शामिल है, उदाहरण के लिये मृत्युदंड को आजीवन कारावास और कठोर कारावास को साधारण कारावास में बदलना। **अत: युग्म 1 सही सुमेलित नहीं है।**
- **परिहार (Remission):** इसमें **दंड कीअवधि को कम** करना शामिल है, उदाहरण के लिये दो वर्ष के कारावास को एक वर्ष के कारावास में परिवर्तित करना। **अत: युग्म 2 सही सुमेलित है।**
- **विराम (Respite):** इसके अंतर्गत किसी दोषी को प्राप्त **मूल सज़ा के प्रावधान को किन्हीं विशेष परिस्थितियों में बदलना** शामिल है। उदाहरण के लिये महिला की गर्भावस्था की अवधि के कारण सज़ा को परिवर्तित करना। **अत: युग्म3 सही सुमेलित है।**
- **प्रविलंबन (Reprieve):** इसका अर्थ है **अस्थायी** समय के लिये किसी सज़ा (विशेषकर मृत्युदंड) के निष्पादन पर रोक लगाना। इसका उद्देश्य दोषी को राष्ट्रपति से क्षमा या लघुकरण प्राप्त करने के लिये समय देना है। **अत: युग्म 4 सही सुमेलित नहीं है।**

158.

उत्तर: C

व्याख्या:

- पीआरआई को 73वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1992 के माध्यम से ज़मीनी स्तर पर लोकतंत्र को साकार करने के लिये संवैधानिक दर्ज़ा प्रदान किया गया और इसे देश में ग्रामीण विकास का कार्य सौंपा गया।
- **अनिवार्य प्रावधान:**
  - ग्राम सभाओं का गठन।
  - ज़िला, ब्लॉक और ग्राम स्तर पर त्रिस्तरीय पंचायती राज संरचना का निर्माण।
  - लगभग सभी पद, सभी स्तरों पर प्रत्यक्ष चुनाव द्वारा भरे जाएंगे।
  - पंचायती राज संस्थाओं का चुनाव लड़ने हेतु न्यूनतम आयु 21 वर्ष होनी चाहिये। **अत: कथन 2 सही है।**
  - ज़िला एवं प्रखंड स्तर पर अध्यक्ष का पद अप्रत्यक्ष निर्वाचन द्वारा भरा जाना चाहिये।
  - पंचायतों में अनुसूचित जातियों/अनुसूचित जनजातियों के लिये उनकी जनसंख्या के अनुपात में और पंचायतों में महिलाओं के लिये एक-तिहाई सीटें आरक्षित होनी चाहिये।
  - पंचायती राज संस्थाओं के चुनाव कराने के लिये प्रत्येक राज्य में राज्य चुनाव आयोग का गठन किया जाएगा।
  - पंचायती राज संस्थाओं का कार्यकाल पाँच वर्ष है, यदि इन्हें पहले भंग कर दिया जाता है, तो छह महीने के भीतर नए चुनाव कराने होंगे।
  - हर पाँच वर्ष में प्रत्येक राज्य में एक राज्य वित्त आयोग का गठन किया जाना। **अत: कथन 3 सही है।**
- **स्वैच्छिक प्रावधान:**
  - इन निकायों में केंद्र और राज्य विधानसभाओं के सदस्यों को मतदान का अधिकार देना।
  - पिछड़े वर्गों के लिए आरक्षण प्रदान करना। **अत: कथन 1 सही नहीं है।**

- पंचायती राज संस्थाओं को कर, शुल्क आदि के संबंध में वित्तीय अधिकार दिये जाने चाहिये तथा पंचायतों को स्वायत्त निकाय बनाने का प्रयास किया जाएगा।

159.

उत्तर: C

व्याख्या:

- भारत का विधि आयोग समय-समय पर भारत सरकार द्वारा गठित एक गैर-सांविधिक निकाय है। **अत: कथन 1 सही नहीं है।**
- स्वतंत्र भारत का पहला विधि आयोग 1955 में तीन साल के कार्यकाल के लिये स्थापित किया गया था। तब से इक्कीस और आयोगों की स्थापना की गई है।
- पहला विधि आयोग 1834 में ब्रिटिश शासन काल के दौरान 1833 के चार्टर अधिनियम द्वारा स्थापित किया गया था और इसकी अध्यक्षता लॉर्ड मैकाले ने की थी। **अत: कथन 2 सही है।**
- यह कानून और न्याय मंत्रालय के सलाहकार निकाय के रूप में काम करता है। **अत: कथन 3 सही है।**

160.

उत्तर: C

व्याख्या:

एशियाई चुनाव प्राधिकरणों का संघ (AAEA):

- 26-29 जनवरी, 1997 को मनीला, फिलीपींस में आयोजित इक्कीसवीं सदी में एशियाई चुनावों पर संगोष्ठी के प्रतिभागियों द्वारा पारित प्रस्ताव के अनुसरण में, एशियाई चुनाव प्राधिकरणों का संघ (AAEA) वर्ष 1998 में स्थापित किया गया था। **अत: कथन 1 सही है।**
- वर्तमान में 20 एशियाई चुनाव निगरानी निकाय एएईए के सदस्य हैं।
- भारत का चुनाव आयोग (ECI) एएईए का एक संस्थापक सदस्य ईएमबी है और इसने 2011-13 के दौरान उपाध्यक्ष और 2014-16 के दौरान अध्यक्ष के रूप में एएईए के कार्यकारी बोर्ड में भी कार्य किया। **अत: कथन 2 सही है।**
- एसोसिएशन ऑफ एशियन इलेक्शन अथॉरिटीज़ का मिशन चुनाव अधिकारियों के बीच अनुभव और सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करने के लिये एशियाई क्षेत्र में एक गैर-पक्षपातपूर्ण मंच प्रदान करना है।
- AAEA विश्व चुनाव निकायों के 118 सदस्यीय संघ (A-WEB) का एक सहयोगी सदस्य भी है।
- **7 मई, 2022 को मनीला, फिलीपींस में कार्यकारी बोर्ड और महासभा की हाल ही में आयोजित बैठक में भारत को सर्वसम्मति से 2022-2024 के लिये एसोसिएशन ऑफ एशियन इलेक्शन अथॉरिटीज़ (AAEA) के नए अध्यक्ष के रूप में चुना गया है।**
- **कार्यकारी बोर्ड में शामिल नए सदस्यों में रूस, उज़्बेकिस्तान, श्रीलंका, मालदीव, ताइवान और फिलीपींस हैं।**

161.

उत्तर: C

व्याख्या:

- भारत निर्वाचन आयोग (ECI) एक संवैधानिक निकाय है जिसकी परिकल्पना भारतीय संविधान में निहित समानता, निष्पक्षता, स्वतंत्रता के मूल्यों और चुनावी शासन पर अधीक्षण, निर्देशन व नियंत्रण में कानून के शासन को बनाए रखने के लिये की गई है।
- भारतीय संविधान का भाग XV चुनावों से संबंधित है और ECI की स्थापना का प्रावधान करता है। **अत: कथन 1 सही नहीं है।**
  - संविधान का **अनुच्छेद 324** से 329 आयोग और सदस्यों की शक्तियों, कार्य, कार्यकाल, पात्रता आदि से संबंधित है।
  - ECI के सदस्यों की नियुक्ति भारत के राष्ट्रपति द्वारा प्रधानमंत्री की सिफारिश के आधार पर की जाती है। **अत: कथन 2 सही है।**
  - हालाँकि अनुच्छेद 324 (2) में प्रावधान है कि संसद को चुनाव आयुक्तों (Election Commissioners- ECs) की नियुक्ति के संबंध में कानून बनाने का अधिकार है।
- इनका कार्यकाल छह साल या 65 वर्ष की आयु तक (जो भी पहले हो) होता है। **अत: कथन 3 सही है।**

अत: विकल्प C सही है।

162.

उत्तर: D

व्याख्या:

- भारत निर्वाचन आयोग जिसे चुनाव आयोग के नाम से भी जाना जाता है, एक स्वायत्त संवैधानिक निकाय है जो भारत में संघ और राज्य चुनाव प्रक्रियाओं का संचालन करता है। **अत: कथन 1 सही नहीं है।**
- चुनाव आयोग की स्थापना 25 जनवरी, 1950 (राष्ट्रीय मतदाता दिवस के रूप में मनाया जाता है) को संविधान के अनुसार की गई थी। आयोग का सचिवालय नई दिल्ली में है।
- यह देश में लोकसभा, राज्यसभा, राज्य विधानसभाओं, राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति के चुनाव का संचालन करता है। **अत: कथन 2 सही नहीं है।**
- इसका राज्यों में पंचायतों और नगर पालिकाओं के चुनावों से कोई संबंध नहीं है। इसके लिये भारत का संविधान अलग से राज्य चुनाव आयोग का प्रावधान करता है।

163.

उत्तर: A

व्याख्या:

- प्रोजेक्ट-15B जहाज़ दुनिया के सबसे उन्नत गाइडेड मिसाइल डिस्ट्रॉयर में से एक हैं, जिनमें अत्याधुनिक हथियार/सेंसर पैकेज,

उन्नत स्टील्थ फीचर्स और उच्च स्तर का ऑटोमेशन है। वर्ष 2011 में प्रोजेक्ट-15B प्रोग्राम के तहत चार युद्धपोत (विशाखापत्तनम, मोरमुगाओ, इंफाल और सूरत) के निर्माण के सौदे पर हस्ताक्षर किये गए थे।

- ये जहाज़ ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज़ मिसाइलों और लंबी दूरी की सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल (SAM) से लैस हैं। **अत: कथन 1 सही है।**
- ''INS सूरत' प्रोजेक्ट 15B श्रेणी का चौथा विध्वंसक जहाज़ है। **अत: कथन 2 सही नहीं है।**
- भारतीय रक्षा मंत्रालय (MoD) के अनुसार, प्रोजेक्ट 15B में कुल मिलाकर लगभग 75% स्वदेशी सामग्री है, इसलिये यह पूर्ण रूप से स्वदेशी नहीं है। **अत: कथन 3 सही नहीं है।**

164.

उत्तर: D

व्याख्या:

- अंतर्राज्यीय परिषद संविधान के **अनुच्छेद 263 के प्रावधानों के तहत स्थापित एक संवैधानिक निकाय** है। **अत: कथन 1 सही नहीं है।**
- इसकी स्थापना की सिफारिश सरकारिया आयोग ने की थी **पुंछी आयोग** ने नहीं। **अत: कथन 2 सही नहीं है।**
- इसकी बैठक वर्ष में कम से कम **तीन बार प्रधानमंत्री की अध्यक्षता** में होती है। **अत: कथन 3 और कथन 4 सही नहीं हैं।**

165.

उत्तर: B

व्याख्या:

नगर निगम:

- भारत में नगर निगम शहरी स्थानीय सरकार है जो दस लाख से अधिक लोगों की आबादी वाले किसी भी महानगर के विकास के लिये ज़िम्मेदार है।
  - महानगर पालिका, नगर पालिका, नगर निगम, शहरी निगम आदि इसके कुछ अन्य नाम हैं।
- राज्यों में नगर निगमों की स्थापना राज्य विधानसभाओं के अधिनियमों द्वारा की जाती है, जबकि केंद्रशासित प्रदेशों में संसद के अधिनियमों के माध्यम से। **अत: कथन 1 सही नहीं है।**
- नगरपालिका सरकारें अपने कार्यों के निधियन के लिये संपत्ति कर राजस्व पर बहुत अधिक निर्भर करती हैं।
- भारत में पहले नगर निगम की स्थापना वर्ष 1688 में मद्रास में की गई थी, उसके बाद वर्ष 1726 में बॉम्बे और कलकत्ता में नगर निगम की स्थापना की गई। **अत: कथन 2 सही है।**

166.

उत्तर: C

व्याख्या:

- **अनुच्छेद 72 के तहत राष्ट्रपति की क्षमादान शक्ति का दायरा अनुच्छेद 161 के तहत राज्यपाल की क्षमादान शक्ति से अधिक व्यापक** है जो निम्नलिखित दो तरीकों से भिन्न है:
  - **कोर्ट मार्शल: राष्ट्रपति कोर्ट मार्शल के तहत सज़ा प्राप्त व्यक्ति की सज़ा माफ़ कर सकता** है परंतु अनुच्छेद 161 राज्यपाल को ऐसी कोई शक्ति प्रदान नहीं करता है। **अत: कथन 1 सही है।**
  - **मृत्युदंड:** राष्ट्रपति उन सभी मामलों में क्षमादान दे सकता है जिनमें **मृत्युदंड की सज़ा** दी गई है लेकिन राज्यपाल की क्षमादान की शक्ति मृत्युदंड के मामलों तक विस्तारित नहीं है। **अत: कथन 2 सही है।**

167.

उत्तर: D

व्याख्या:

- **सर्वोच्च न्यायालय (SC) ने मध्य प्रदेश को** स्थानीय निकाय चुनावों में अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC) को आरक्षण प्रदान करने की अनुमति दी, जो आँकड़ों की कमी के कारण कोटा को निलंबित करने वाले पहले के आदेश को संशोधित करता है। **अत: कथन 2 सही नहीं है।**
- यह पहली बार है कि किसी राज्य सरकार ने स्थानीय निकाय चुनावों में OBC को आरक्षण प्रदान करने के संदर्भ में शीर्ष न्यायालय द्वारा अनिवार्य ट्रिपल टेस्ट फॉर्मूले को मंज़ूरी देने में कामयाबी हासिल की है।
- स्थानीय निकाय चुनाव **राज्य निर्वाचन आयोग** द्वारा आयोजित किये जाते हैं। **अत: कथन 1 सही नहीं है।**

168.

उत्तर: A

व्याख्या:

- MPLAD एक केंद्रीय क्षेत्र की योजना है जिसके तहत सांसद अपने-अपने निर्वाचन क्षेत्रों में हर साल 5 करोड़ रुपए के विकास कार्यक्रमों की सिफारिश कर सकते हैं।
  - राज्यसभा और लोकसभा के मनोनीत सदस्य देश में कहीं भी कार्य करने की सिफारिश कर सकते हैं। **अत: कथन 1 सही है।**
- MPLADS के तहत आवंटित राशि नॉन-लैप्सेबल (Non-Lapsable) होती है। अत: किसी विशेष वर्ष में निधि जारी न करने

की स्थिति में इसे अगले वर्ष के लिये हस्तांतरित किया जा सकता है। **अतः कथन 2 सही है।**

- MPLAD योजना के लिये दिशा-निर्देश टिकाऊ सामुदायिक संपत्ति जैसे- सड़क, स्कूल भवन आदि के निर्माण पर ध्यान केंद्रित करते हैं। गैर-टिकाऊ संपत्ति के लिये सिफारिशें सीमित परिस्थितियों में ही की जा सकती हैं। **अतः कथन 3 सही नहीं है।**
  - उदाहरण के लिये वर्ष 2020 में सरकार ने व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण, कोरोनावायरस परीक्षण किट आदि की खरीद के लिये MPLAD फंड के उपयोग की अनुमति दी।

169.

उत्तर: A

व्याख्या:

- यह न्यायाधीशों की नियुक्ति और स्थानांतरण की प्रणाली है, जो संसद के किसी अधिनियम या संविधान के प्रावधान द्वारा स्थापित न होकर सर्वोच्च न्यायालय के निर्णयों के माध्यम से विकसित हुई है। **अतः कथन 1 सही है।**
- सर्वोच्च न्यायालय के कॉलेजियम की अध्यक्षता CJI द्वारा की जाती है और इसमें सर्वोच्च न्यायालय के चार अन्य वरिष्ठतम न्यायाधीश शामिल होते हैं। **अतः कथन 2 सही नहीं है।**
- एक उच्च न्यायालय के कॉलेजियम का नेतृत्व उसके मुख्य न्यायाधीश और उस न्यायालय के चार अन्य वरिष्ठतम न्यायाधीश करते हैं।

170.

उत्तर: B

व्याख्या:

- संविधान में लाभ का पद स्पष्ट रूप से परिभाषित नहीं किया गया है, लेकिन विभिन्न न्यायालयी फैसलों में की गई व्याख्याओं द्वारा इसका अर्थ अवश्य स्पष्ट हुआ है। **अतः कथन 1 सही नहीं है।**
- लाभ के पद की व्याख्या के अनुसार, पद-धारक को कुछ वित्तीय लाभ या बढ़त या हितलाभ प्राप्त होते हैं।
  - ऐसे मामलों में इस तरह के लाभ की राशि महत्त्वहीन है।
  - भारत के संविधान में अनुच्छेद 102(1)(a) तथा अनुच्छेद 191(1)(a) में लाभ के पद का उल्लेख किया गया है। अनुच्छेद 102(1)(a) के अंतर्गत संसद सदस्यों के लिये तथा अनुच्छेद 191(1)(a) के तहत राज्य विधानसभा के सदस्यों के लिये ऐसे किसी अन्य लाभ के पद को धारण करने की मनाही है। **अतः कथन 2 सही है।**
  - अनुच्छेद स्पष्ट करते हैं कि **"किसी व्यक्ति को केवल इस कारण से भारत सरकार या किसी राज्य सरकार के अधीन लाभ का पद धारण करने वाला नहीं माना जाएगा** कि वह एक मंत्री है"।
  - लाभ का पद कानून केवल संविधान की एक बुनियादी विशेषता को लागू करने का प्रयास करता है-
  - विधायिका और कार्यपालिका के बीच शक्ति के पृथक्करण का सिद्धांत। **अतः कथन 3 सही है।**